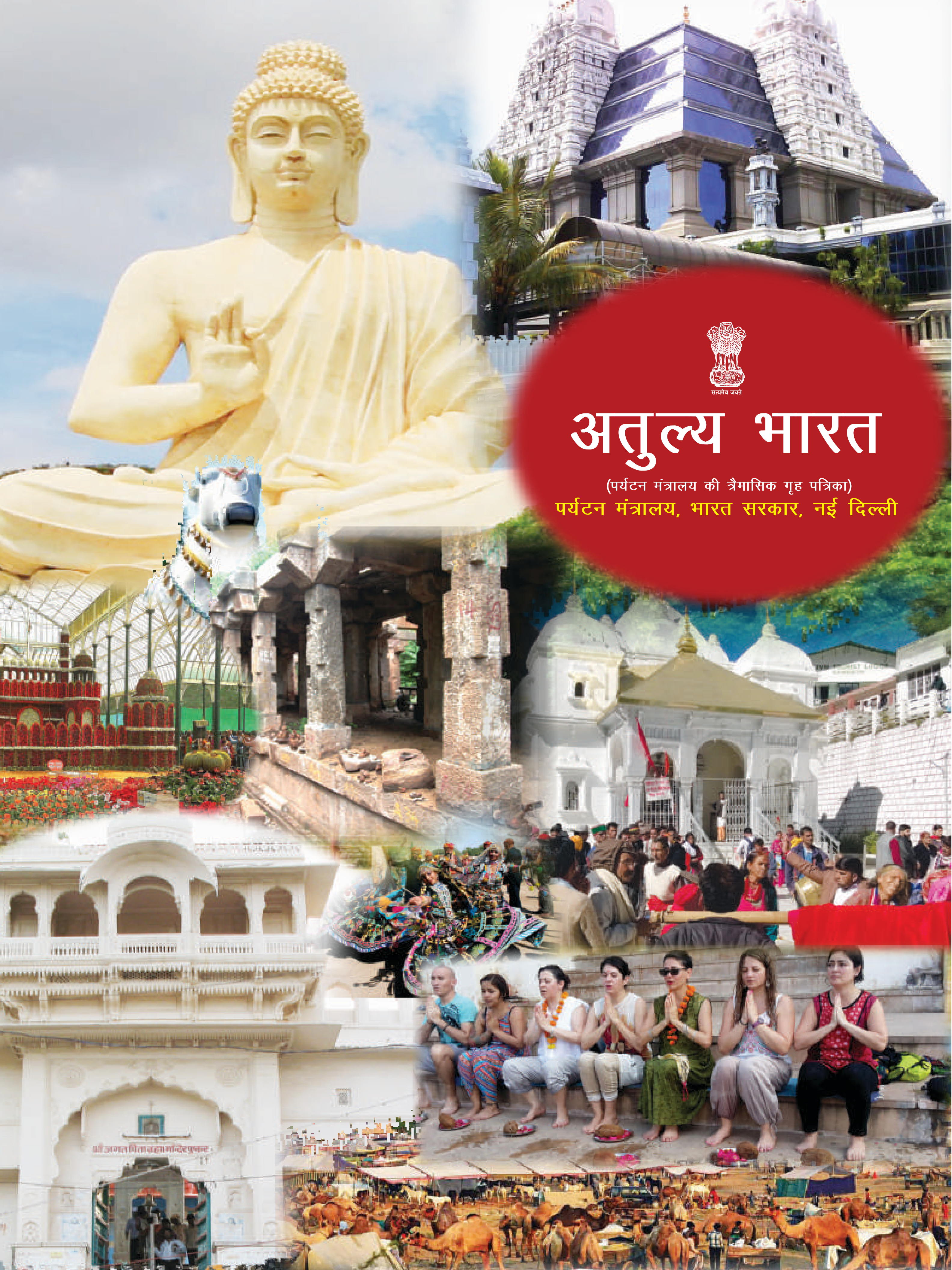

सत्यमेव जयते

# अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

**पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली**

छात्र – मैडम जी मैं सवाल का जवाब दूँ|
मैडम – हां बताओ |
छात्र – मै घर के आस पास और शौचालय को स्वच्छ रखने के लिए प्रति दिन साफ-सफाई करता हूँ |
आज का विषय- स्वच्छता
प्रश्न-1. क्या आपने स्वच्छ वातावरण के लिए कोई कार्य किया है ?

आज का विषय- स्वच्छता
प्रश्न-2. शौचालय स्वच्छता के नियमों को विस्तार पूर्वक बताये ?
हर्ष तुम बताओ
हर्ष- मैडम जी मैं पांच नियमों का पालन करता हूँ|
मैडम- वो कौन –कौन से है|

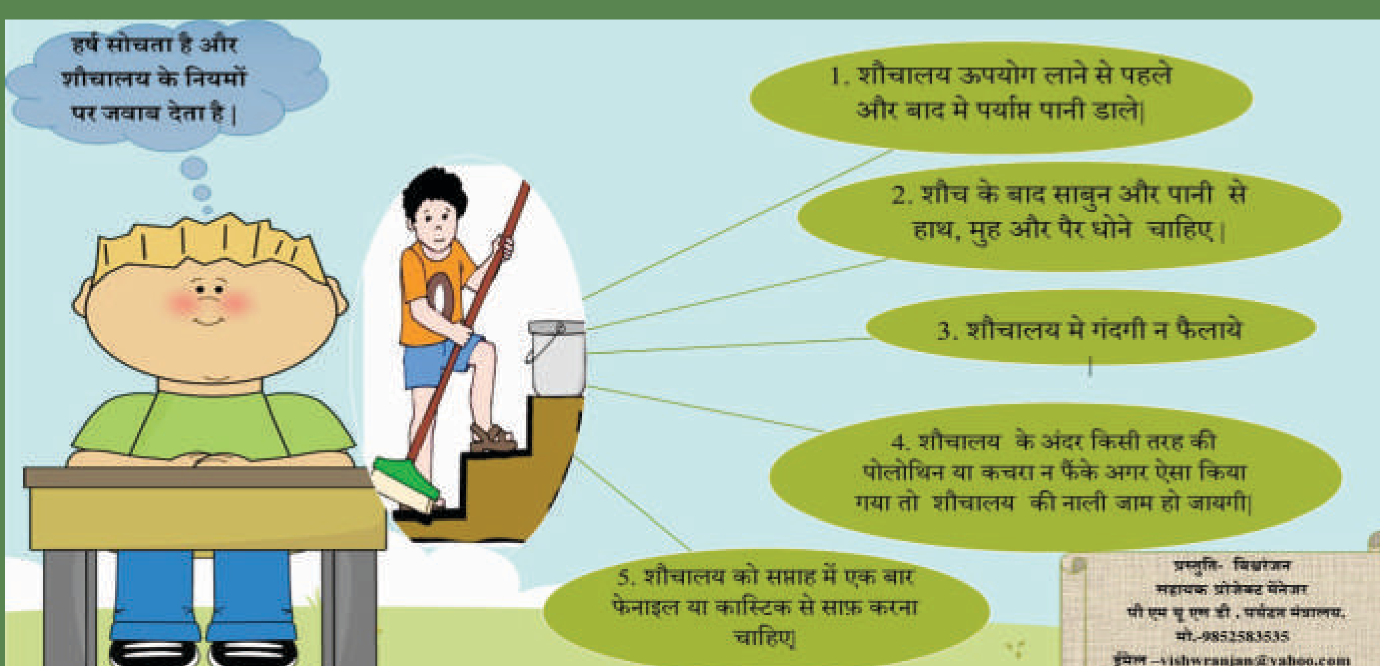
हर्ष सोचता है और शौचालय के नियमों पर जवाब देता है |
1. शौचालय ऊपयोग लाने से पहले और बाद मे पर्याप्त पानी डाले|
2. शौच के बाद साबुन और पानी से हाथ, मुह और पैर धोने चाहिए|
3. शौचालय मे गंदगी न फैलाये |
4. शौचालय के अंदर किसी तरह की पोलोथिन या कचरा न फैंके अगर ऐसा किया गया तो शौचालय की नाली जाम हो जायगी|
5. शौचालय को सप्ताह में एक बार फेनाइल या कास्टिक से साफ़ करना चाहिए|
प्रस्तुति- विश्वरंजन
सहायक प्रोजेक्ट मेनेजर
पी एम यू एस डी , पर्यटन मंत्रालय.
मो.-9852583535
ईमेल –vishwranjan@yahoo.com

सत्यमेव जयते

# अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

# अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)


- संरक्षक : श्रीमती रश्मि वर्मा, सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
- प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता : ज्ञान भूषण, आर्थिक सलाहकार, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
- संपादक : श्रीमती सन्तोष सिल्पोकर, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
- प्रबंध–संपादक : मोहन सिंह, कंसल्टेंट, पर्यटन मंत्रालय
- अन्य सहयोगी : राज कुमार, राम बाबू


पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कृपया अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें :


संपादक,
**अतुल्य भारत**
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,
कमरा नं. 18, सी–1 हटमेंट्स,
दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली – 110011
ई–मेल– editor.atulyabharat@gmail.com
दूरभाष 011–23015594, 23793858


**नि:शुल्क वितरण के लिए**


डॉलफिन प्रिन्टो–ग्राफिक्स
झण्डेवालान एक्सटेंशन
नई दिल्ली से मुद्रित
011–23593541–42

# इस बार पढ़िए.......

वर्ष 3 अंक 11 जनवरी–मार्च, 2018



v प्रधान संपादक की कलम से...

1 गंगोत्री, गौमुख : तपोभूमि

भारत दर्पण 9

10 एक शहर जो भूलाए न भूले

15 तीर्थराज पुष्कर

23 पर्यटन के क्षेत्र में उभरती प्रवृत्तियां

कसक (कहानी) 31

34 - 59 कविताएं : (1) पड़ोसी (2) नदी की वेदना

बदले आतिथ्य शिक्षा का चेहरा! 35

38 नवनंदुलू से नवनरसिंहम्

50 एक कदम डिजिटल इंडिया की ओर

55 स्वच्छ भारत मिशन पर्यटन एवं रोजगार

राष्ट्रीय समोसा सप्ताह 58

आतिथ्य-एक जीवनशैली तथा आजीविका 60

62 भारत में पर्यटन और सुग्राहीकरण कार्यक्रम

श्रद्धांजलियां 66

72 शुभकामनाएं

पर्यटन मंत्रालय की रिपोर्टें और गतिविधियां 73

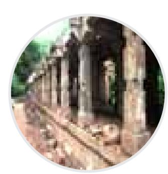

**परामर्शदाता व प्रधान संपादक**
**ज्ञान भूषण, आई.ई.एस**
**आर्थिक सलाहकार**
**पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**

# प्रधान संपादक की कलम से...

पर्यटन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका 'अतुल्य भारत' का 11वां अंक आपके सामने है। मुझे आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि जर्मनी के बर्लिन शहर में 7 से 10 मार्च, 2018 तक आयोजित 'इंटरनेशनल टूरिज्म बोर्स'–2018 में भारत को आस्ट्रेलिया तथा ओसीनिया श्रेणी में 'सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शक' का पुरस्कार प्रदान किया गया है। भारतीय पर्यटन जगत के लिए यह एक बड़ी उपलब्धि है।

पर्यटन मंत्रालय भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सतत् प्रयास कर रहा है और ''अतुल्य भारत'' पत्रिका भी इसकी एक कड़ी बनती जा रही है। यह मंत्रालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने का अवसर दे रही है और साथ ही साथ भारतीय पर्यटन के बारे में जानकारी प्रदान करने का कार्य भी कर रही है।

भारतीय पर्यटन उद्योग निरंतर वृद्धि की ओर अग्रसर है जो कि विश्व औसत से कहीं अधिक है। 2017 के दौरान 10.18 विदेशी पर्यटक भारत आए और यह पिछले वर्ष की इसी अवधि से 15.6% अधिक है जबकि विदेशी पर्यटकों की वैश्विक वृद्धि केवल 5% के लगभग है। ई–वीजा की पर्यटन क्षेत्र के लिए अहम भूमिका बनी रही। अब भारत में 163 देशों के नागरिकों को ई–वीजा की सुविधा प्रदान की गई है। इसके तहत व्यापार तथा चिकित्सा लाभ के लिए भ्रमण की भी अनुमति है। 2017 के दौरान ई–वीजा पर 1.69 मिलियन विदेशी पर्यटक भारत आए जबकि 2016 के दौरान 1.08 मिलियन पर्यटक आए थे अर्थात 57.2% की बढ़ोतरी दर्ज हुई। इस वृद्धि में भारत सरकार द्वारा पर्यटन अवसंरचना विकसित करने और पर्यटकों के लिए प्रवेश औपचारिकताएं सरल बनाने की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

इस में कोई दो राय नहीं है कि भारत में धर्मों का अपना विशेष स्थान है। यहां के धर्म और संस्कृतियों की चर्चा आज भी दुनियां भर में होती है। शायद यही कारण है कि भारत के धार्मिक और आध्यामिक स्थलों पर हमें विदेशी पर्यटकों की संख्या ज्यादा दिखाई देती है। ऐसे पर्यटन स्थलों में दक्षिण भारत के साथ ही वाराणसी, बोधगया, शिर्डी, नासिक ही नहीं राजस्थान का पुष्कर भी अत्यंत लोकप्रिय है।

पत्रिका के इस अंक में सभी मानकों को ध्यान में रखते हुए सामग्री संकलित की गई है। इस अंक में है, श्री विनीत सोनी का उत्तराखंड पर यात्रालेख ''गंगोत्री गौमुख : तपोभूमि'', दक्षिण भारत के जाने माने शहर बंगलूरू के बारे में सुश्री विभा शर्मा का एक अनूठा लेख ''एक शहर जो भूलाए न भूले''।

श्री ओम प्रकाश मीना ने अपने आलेख ''तीर्थ पुष्करराज'' के माध्यम से राजस्थान के विश्व प्रसिद्ध पुष्कर, जिसके एक ओर मरूस्थल तो दूसरी ओर हरा भरा शहर और यहां का पशु मेला हमारे देश के पर्यटकों से अधिक विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है, के बारे में बताया है।

पर्यटन क्या है और कब से पर्यटन की परम्परा का आरम्भ हुआ, इस विषय पर डा. अमित कुमार सिंह ने अपने लेख '' पर्यटन के क्षेत्र में उभरती प्रवृत्तियां '' में प्रकाश डाला है। आतिथ्य का क्षेत्र एक जीवनशैली के साथ–साथ आजीविका के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। राष्ट्रीय होटल प्रबंध एवं केटरिंग तकनॉलॉजी परिषद, नोएडा के निदेशक श्री एल.के. गांगुली ने आतिथ्य शिक्षा के बारे में विशेष सूचनाएं दी है। भारत में पर्यटन के सुग्राहीकरण कार्यक्रम पर श्री सुधीर कुमार का लेख उल्लेखनीय है।

शिक्षा कैसी भी हो, भाषा का अपना महत्व होता है। देश में अपनी भाषा में शिक्षा देना क्यों जरूरी होता जा रहा है इस विषय में पढ़िए श्री कृष्ण गोपाल दुबे के विचार, ''भाषा, शिक्षा और रोज़गार–बदले आतिथ्य शिक्षा का चेहरा !'' में।

समोसा एक भारतीय व्यंजन है लेकिन अब यह भारत की सीमाओ को लांघ कर पूरी दुनिया में मिल जाता है। इसका श्रेय मूलतः भारतीयों को ही जाता है। इसी अप्रैल में इंग्लैंड में राष्ट्रीय समोसा सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। इस ''राष्ट्रीय समोसा सप्ताह'' आयोजन पर श्री राम बाबू ने रिपोर्ट प्रस्तुत की है।

पुस्तकालयों में डिजिटलाइजेशन के बारे में श्री अबिनाश दाश ''ई–ग्रंथालय : एक कदम डिजिटल इंडिया की ओर'' के माध्यम से बताया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्वच्छ भारत अभियान से देश में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ी है और साथ ही इससे रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं। ''स्वच्छ भारत मिशन से पर्यटन में रोजगार'' आलेख में श्री विश्वरंजन ने इसके महत्व और इसमें रोजगार के अवसरों के बारे में बताया है।

आंध्र प्रदेश का धार्मिक, पुरातात्विक, पर्यावरण तथा साहसिक पर्यटन के क्षेत्र में एक अलग ही महत्व है। इस बार श्री मोहन सिंह ने ''नवनंदुलू से नवनरसिंहम्'' शीर्षक के अंतर्गत कुर्नूल जिले में स्थित विश्व प्रसिद्ध महानंदीश्वर तथा नरसिंह स्वामी के मंदिरों की यात्रा के बारे में जानकारी दी है।

इनके अलावा श्री माम चंद सागर की कहानी, 'कसक', विश्वरंजन की कविता 'नदी की वेदना' तथा सुप्रिय सुशांत की कविता 'पड़ौसी' भी शामिल की गई हैं। हाल ही में दिवंगत हुए हिंदी के जानेमाने कवि श्री केदार नाथ सिंह, चर्चित श्रीदेवी तथा अतीत में सह अभिनेत्री के रूप में कार्य कर चुकी शम्मी आंटी को भी अतुल्य भारत की ओर से याद किया गया है। इसके अलावा पर्यटन मंत्रालय की गतिविधियां और रिपोर्टें के अंतर्गत मंत्रालय की गतिविधियों के पूर्ण विवरण भी प्रदान किए गए है।

मैं आशा करता हूं कि आप सभी के निरंतर सहयोग से यह पत्रिका और अधिक ज्ञानवर्धक, रोचक एवं समय–संगत सामग्री तथा सूचना प्रदान कर पाठकों को भारत के पर्यटन के विभिन्न पहलुओं एवं पर्यटक स्थलों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराने के साथ–साथ, स्वस्थ सोच का संचार कर सकेगी।

आदरणीय सचिव (पर्यटन) महोदया और महानिदेशक (पर्यटन) देश में पर्यटन के संवर्धन तथा प्रोत्साहन के लिए सतत प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन में हम उनके आभारी हैं।

अंत में, उन सभी लेखकों का धन्यवाद करता हूं जो इस पत्रिका में निरंतर अपना सहयोग प्रदान करते रहे हैं। आपके विचारों तथा प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

ज्ञान भूषण

(ज्ञान भूषण )
प्रधान संपादक

आध्यात्मिक पर्यटन

# गंगोत्री, गौमुख: तपोभूमि

–विनीत सोनी

चार धाम यात्रा के पड़ावों में गंगोत्री दूसरे स्थान पर है, यह आध्यात्मिक यात्रा यमुनोत्री से शुरू होकर गंगोत्री, केदारनाथ होकर बद्रीनाथ पर समाप्त होती है। इस वर्ष अक्टूबर में मुझे इस यात्रा का सौभाग्य प्राप्त हुआ और मैंने गंगोत्री के साथ गौमुख भी जाने का निर्णय कर लिया।

यमुनोत्री से उत्तरकाशी की दूरी लगभग 150 कि.मी. है और यहाँ से गंगोत्री 120 किमी है। यात्रा पर वैसे तो अकेला ही आया था पर यमुनोत्री से पहले तीन चार लोग और मिल गए जिन्हें गंगोत्री भी जाना था तो यमुनोत्री में दर्शन उपरान्त हम सब एक साथ ही उत्तरकाशी पहुँचे। यहाँ आते–आते शाम हो गयी तो हम सब पास ही स्थित बिरला धर्मशाला में रुके।

हरिद्वार से आते समय बस में ही मेरी मुलाकात बलिया के एक सज्जन से हुई जो 2014–15 में साइकिल से ही चार धाम यात्रा कर चुके थे और इस बार गंगोत्री जा रहे थे। मेरे अनुरोध पर वह भी मेरे साथ यमुनोत्री आ गए और अब हमने साथ ही गौमुख जाने का निर्णय किया। अगले दिन हम जल्दी जागे और पांच बजे टैक्सी स्टैंड पहुँच गए, हम पांच लोग थे, यहाँ दो लोग और मिले और हमने गाड़ी कर ली। रास्ता भागीरथी के साथ–साथ ही चलता है और धीरे–धीरे ऊंचाई बढ़ने लगती है। उत्तरकाशी जहाँ 1200 मीटर पर है वही गंगोत्री 3400 मीटर की ऊंचाई पर है और रास्ते में आपको हिमालय की बहुत सी चोटियाँ दिखाई देती हैं। रास्ता बहुत सुन्दर है, चीड़ – देवदार के वृक्षों से भरा और ऊंचाई बढ़ने के साथ भागीरथी बहुत नीचे छूट जाती है।

*"यहाँ पर 'आल वेदर रोड' का काम चल रहा है जिसके कारण जगह–जगह भूस्खलन हो रहे हैं और पहाड़ दरक रहे हैं सो अलग। साथ ही साथ छोटे–बड़े बांधों का निर्माण कार्य भी निर्बाध गति से जारी है। यह सब इसलिए कि यहाँ ज्यादा से ज्यादा लोग आ सकें और अधिक से अधिक पर्यटक यहां आ कर हिमालय की दुर्गति देख सकें। ऐसा ही शायद हमारा विश्वास है।"*

लगभग दो घंटे के बाद हम गंगानी पहुँचे। यहाँ गर्म पानी का कुंड है जिसमें लोग आराम से नहाते हैं, यहाँ से आगे का रास्ता अत्यंत रमणीक है। थोड़ी देर बाद हम हर्षिल पहुँच गए। यह एक मनोहारी जगह है और यहाँ के सेब बहुत प्रसिद्ध हैं। चारों ओर सेब के बागान और रास्ते के साथ साथ बहती कल–कल करती भागीरथी तथा उसके दोनों ओर गगनचुम्बी चोटियाँ, सचमुच ही यह दृश्य किसी स्वर्गलोक से कम नहीं है।

*संप्रति स्वतंत्र लेखक

*इसी हिमालय का असली रूप देखने के लिए ही तो श्रद्धालु दूर-दूर से यहां आते हैं। यहाँ ज्यादा ट्रैफिक नहीं है तो फिर ''फोर लेन रोड'' किसके लिए ? अनगिनत बांधों के कारण पहाड़ पहले ही बहुत कमजोर हो चुके हैं। जगह जगह मिटटी उड़ रही है, कल – कल बहती नदियों का मार्ग अवरुद्ध होने के कारण बड़ी-बड़ी झीलें बन रही हैं, जिनमें ठहरे हुए पानी के कारण बड़ी मात्रा में गाद जमा हो रहा है और नीचे बसे गाँव डूब रहे हैं। हिमालय की ये दुर्दशा देखकर आँखें भर आयीं। पता नहीं हमें कब सद्बुधि आएगी ? भारत के मुकुट, सैकड़ों छोटी-बड़ी नदियों से इस देश के करोड़ों नागरिकों की प्यास बुझाने वाले और पर्यावरण का तापमान नियंत्रित रखने वाले इस प्रत्यक्ष देवता को नुकसान पहुँचा कर कहीं हम अपना ही विनाश तो नहीं कर रहे हैं।*

लगभग 9 बजे हम पवित्र गंगोत्री धाम पहुँच गए। मौसम बिल्कुल साफ और धूप खिली थी। लेकिन बर्फीली हवाएं हमारा स्वागत कर रही थीं। सामने ही फारेस्ट ऑफिस है, जहाँ गौमुख जाने के लिए परमिट मिलता है। यहाँ हमनें अपने तीनों साथियों से विदा ली, परमिट लेने में पांच मिनट ही लगे। यह ऑफिस सवेरे 7 से 10 तक खुलता है और रोज 300 परमिट ही दिए जाते हैं।

यहाँ से मंदिर पहुंचने में पांच मिनट का ही समय लगता है। इस समय ज्यादा भीड़ नहीं थी और आराम से माँ गंगा के दिव्य दर्शन हुए। मंदिर प्रांगण में ही भगवान शंकर, हनुमान जी, माँ दुर्गा, माँ सरस्वती और भागीरथी ऋषि के भी मंदिर हैं और पास ही बहती है कल—कल करती दूधिया भागीरथी नदी। यहाँ घाट बने हुए हैं, आराम से बैठकर नहा सकते हैं पर पानी एकदम बर्फीला है। थोड़ा जल छिड़ककर और माँ गंगा

गंगोत्री मंदिर

को प्रणाम कर हमने गौमुख के लिए प्रस्थान किया। वैसे यहां कुछ साहसी लोग भी थे जो इतने ठंडे पानी और खुले मैदान में नहा रहे थे। उनकी यह भक्ति देख मन श्रृद्धा से नतमस्तक हो गया।

गौमुख का रास्ता मंदिर से होकर ही जाता है और भागीरथी के साथ–साथ चलता है। गंगोत्री नेशनल पार्क यहाँ से एक कि.मी. दूर है। यहां आपके परमिट कर जांच करने के बाद आगे जाने दिया जाता है। यहाँ से आगे का रास्ता बहुत सुंदर है। दोनों और बर्फ से लदी चोटियां और सामने सुदर्शन पर्वत है,जो आगे रास्ते के साथ–साथ ओझल हो जाता है, नीचे कल–कल बहती भागीरथी नदी है और दोनों ओर चीड़ और भोज वृक्षों के जंगल हैं।

सुदर्शन पर्वत का नजारा

मेरे नए मित्र सुमंत मिश्रा जी की आयु लगभग 62 वर्ष है, बलिया के रहने वाले हैं और दो बार साइकिल से बद्रीनाथ और केदारनाथ की यात्रा कर चुके हैं। मिश्रा जी अदम्य इच्छाशक्ति के धनी हैं। मेरे पास तो रुक्सैक था जिसे मैं कंधे पर टांग कर आराम से चल रहा था। परन्तु इनके पास तो बैग के साथ एक झोला भी था, जिसे लेकर चलना इतना आसान नहीं है फिर भी भगवान का नाम लेकर आगे बढ़े चले जाते हैं। मिश्रा जी अत्यंत ही विनम्र स्वभाव के व्यक्ति हैं। पिछले कई वर्षों से उन्होंने अन्न ग्रहण नहीं किया है बस फल, आलू और मूंगफली पर जीवित रहते हैं। सच में ही वेशभूषा, रहन सहन आचार–विचार से पूरे संत हैं और ऐसे संत की यादगार के तौर पर एक फोटो लेने से अपने को रोक नहीं पाया। यहाँ मुझे इस सत्संग का अनायास ही लाभ मिल गया। श्री रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने सही लिखा है, **'' बिनु हरि कृपा मिलई नहीं संता।''**

श्री सुमंत मिश्र

यहाँ से चीड़बासा छः कि.मी. है और अबु मोबाइल नेटवर्क भी नहीं था। अक्टूबर का महीना, धूप खिली पर हवाएं बर्फीली, और बहुत से ट्रेकर गौमुख और तपोवन जा रहे हैं, अधिकतर किसी न किसी ट्रेकिंग कंपनी के through जा रहे हैं। कुछ पर्वतारोही भी थे, जिन्हें गौमुख ग्लेशियर से होते हुए तपोवन स्थित अत्यंत पवित्र शिवलिंग पर्वत और इसके दूसरी ओर नंदनवन के पास सतोपंथ पर्वत की चढ़ाई करनी थी, कुल मिलाकर बहुत सी टीमें और ट्रेकर्स। यह स्थान अत्यंत ऊंचाई पर पाई जाने वाली नीली भेड़ों, हिम तेंदुओं और कुछ दुर्लभ हिमालयी जीव जंतुओं के कारण जाना जाता है पर अब मानवीय गतिविधियाँ बढ़ने के कारण ये विलुप्ति की ओर हैं और हमें गौमुख तक बस कुछ भरलों (हिरण) के ही दर्शन हुए। पर आप इसे यूँ ही हल्के में नहीं ले सकते, अगर हम अभी सजग नहीं हुए और हिमालय की इस दुर्दशा के बारे में

लोगों को जागरूक नहीं किया तो इस अनमोल धरोहर का विनाश होने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

गंगोत्री से हमने 10:30 पर प्रस्थान किया था, अभी दो घंटे हो चुके थे और हम चीड़बासा पहुँचने वाले थे और अब भागीरथी की चोटियाँ पूरी तरह से आँखों के सामने थीं। पूरी तरह बर्फ से लदी ये तीन चोटियाँ अब गौमुख तक आपका स्वागत करती हैं। इनकी ऊंचाई क्रमशः 6450, 6510 और 6850 मीटर हैं, और यह भागीरथी में जल का एक मुख्य स्रोत हैं। लगभग एक बजे हम चीड़बासा पहुँच गए, जो कि एक छोटी सी जगह है जहाँ आप कैम्पिग कर सकते हैं। यहां, इस ट्रैक पर, चाय नाश्ते की एक ही दुकान है। कभी–कभी हल्का बीएसएनएल का नेटवर्क यहाँ पकड़ रहा था जिससे बहुत प्रयास के उपरांत घर में बात हो सकी।

दस–पंद्रह मिनट यहाँ रूककर हम भोजबासा के लिए चल दिए जो यहाँ से आठ कि.मी. है। आगे का रास्ता बहुत पथरीला है, पर पूरे रास्ते को अच्छी तरह से चिन्हित किया गया है, इसलिए भूलने का डर नहीं है। जैसे–जैसे हम आगे बढ़ते हैं कि ऊंचाई भी बढ़ने लगती है। यहां हवा और ठण्डी होती जाती है, भागीरथी पर्वत और भी ज्यादा साफ़ और चमकदार दिखने लगता है। यहाँ से आगे तीन कि.मी. का रास्ता भूस्खलन जोन में है और सरकते हुए पर्वतों के नीचे से जाता है। यहाँ 2013 में भयंकर भूस्खलन हुआ था। तबसे ही ये पहाड़ दरक रहे हैं। भगवान शंकर का नाम लेकर हमने इस जोन को पार किया। बीच–बीच में बहती छोटी–बड़ी धाराओं को पार करने के लिए भोज की शाखाओं से अस्थायी पुल बने हुए हैं, जो बड़े आकर्षक लगते हैं पर इन्हें संभल कर पार करना पड़ता है।

ऊंचाई बढ़ने के कारण सांस जल्दी–जल्दी लेना पड़ता है, जिससे हम जल्दी थक जाते हैं और बार–बार बैठना पड़ रहा था किंतु जल्दी ही उठना भी पड़ता था क्योकि बैठने से अधिक ठण्ड लगने लगती और हम अपनी मंजिल की ओर बढ़ चलते थे।

भोजबासा

सूर्यास्त का समय हो गया और पहाड़ों की चोटियों ने सूर्य को छिपा लिया था। अब तापमान तेजी से गिरने लगा था। हमें चीड़बासा से चले पांच घंटे बीत गए थे और थकान के कारण हमारे कदम धीरे हो गए और तभी एक पत्थर पर बड़ा–बड़ा लिखा देखा ''लाल बाबा आश्रम भोजबासा आधा किलोमीटर''। इसे पढ़कर थके हुए शरीर में पुनः जान आ गई और तभी थोड़ा आगे जाकर पवित्र शिवलिंग पहाड़ के प्रथम दर्शन होते हैं। अभी केवल शिखर का एक ओर का दृश्य ही दिख पा रहा था। पर्वत शिखर को प्रणाम कर हम आगे बढ़े और लगभग 6 बजे भोजबासा पहुँच गए।

और रजाई–गद्दे रखे थे। हमें यही ठीक लगा और हमने रात यहीं बितायी। मौसम बहुत सर्द हो चुका था, जल्दी से हमने गर्म कपड़े पहने और परिसर में ही बनी हुइ कैंटीन में खाना खाया। मिश्रा जी ने अपने साथ लाई मूंगफलियां गरम करवा लीं। यहाँ हमारी मुलाकात ओएनजीसी की एक पर्वतारोहण टीम से हुई जो सतोपंथ पर्वत की सफल चढ़ाई करके वापस आ रही थी। उन्हें इस अभियान में एक महीने का समय लगा था।

उस दिन मंगलवार था। हनुमान जी का दिन, मन ही मन सुन्दरकांड का जाप किया, और आगे की

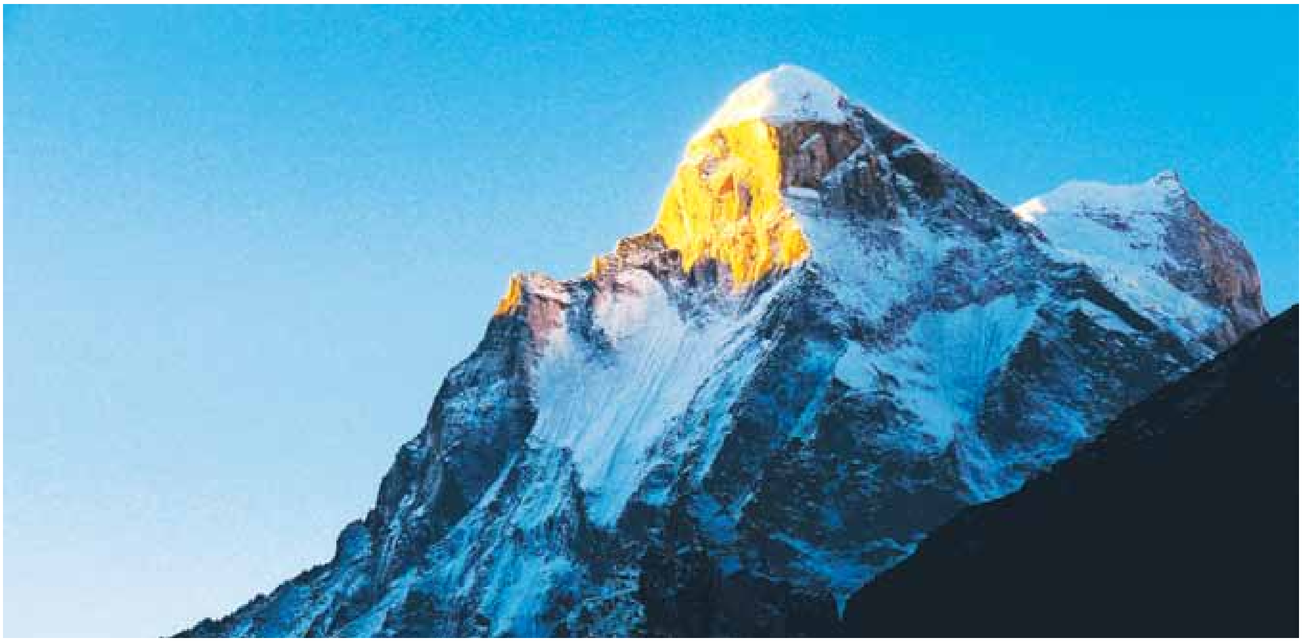

दूर से ली गई शिवलिंग पहाड़ की एक तस्वीर

यह एक घाटी है। यहां रहने के लिए गढ़वाल मंडल विकास निगम यानि GMVN का कॉटेज/टेंट स्टे और लाल बाबा का आश्रम है। दोनों का ही किराया 300 रुपये बैड है। लेकिन आश्रम में खाने का कोई पैसा नहीं लिया जाता है। हम पहले GMVN पहुंचे, टीन के बने हुए छोटे–छोटे कमरे पूरे भरे हुए थे पर टेंट खाली था। एक टेंट में साफ़ सुथरे 6–8 तख़्त

यात्रा के लिए भगवान से प्रार्थना की। लगभग सात बजे तक टेंट पूरा भर गया और लोग मिश्रा जी की बातों और कहानियों का आनंद लेने लगे। आठ बजे तो जनरेटर बंद कर दिया गया और बातचीत को विराम लग गया।

सुबह पांच का अलार्म लगा कर मैं भी सो गया। सुबह मौसम साफ़ था, अभी हवा नहीं थी। हम गौमुख

के लिए निकल पड़े। यहाँ से लगभग चार कि.मी. का कठिन रास्ता है, बाद का आधा रास्ता बोल्डर से भरा हुआ है और बहुत संभल कर चलना पड़ता है। जैसे जैसे हम आगे बढ़ते हैं, शिवलिंग पर्वत प्रकट होने लगता है। शिवलिंग पर्वत गौमुख की दायीं ओर तपोवन में है जहाँ से इसके पूर्ण दर्शन होते हैं पर गौमुख तक ये पर्वत लगभग पूर्णतः दृष्टिगोचर हो जाता है। एक घंटे के बाद उगते सूर्य की पहली स्वर्णिम किरणें जब इस पर्वत शिखर पर पड़ीं तब स्वर्ण के समान चमकता ये बड़ा ही दिव्य प्रतीत हुआ।

एक ओर भागीरथी और दूसरी ओर शिवलिंग पर्वत और दोनों ही स्वर्णिम रंग में रंगे, आँखें मानों ठिठक सी गई थीं। दो घंटे के बाद एक जगह रास्ता बंद था। आगे जाने का कोई मार्ग नहीं दिख रहा था, हम यहाँ सबसे पहले आये थे तो हमने रूक कर दूसरों की प्रतीक्षा की।

यहाँ आने से पहले मैंने पढ़ा था कि जुलाई में यहाँ भीषण भूस्खलन हुआ था जिससे गौमुख की वास्तविक संरचना नष्ट हो गयी और यह कई जगहों से टूट कर अपने स्थान से और पीछे चला गया। गौमुख से बिल्कुल पहले हमें इस आपदा के संकेत मिलने शुरू हो गए।

*पिछले 100 वर्षों में यह ग्लेशियर अपनी जगह से एक कि.मी. पीछे चला गया है और अब यह और तेजी से पिघल रहा है लगभग 22 मीटर प्रति वर्ष, जो बहुत खतरनाक संकेत है। यहाँ से निकला ताजा जल देश के करोड़ों लोगों की प्यास बुझाता है और इस विशाल स्रोत का इस तरह सूखना बहुत चिंता की बात है। इसके ऊपर तपोवन में भी झीलों का निर्माण हो रहा है और इनसे कभी भी बड़ी तबाही आ सकती है, इस बार के भूस्खलन की बड़ी वजह आकाशगंगा नदी में आया उफान था जो कि किसी झील के टूटने से हो सकता है।*

शिवलिंग पर्वत

लगभग 10 मिनट बाद पीछे से कुछ लोग आते दिखाई पड़े वो भी यहाँ आकर रुक गए, थोड़ी देर बाद कुछ और सदस्यों के साथ उनका गाइड भी आया था। पास ही पहाड़ी पर हुए भूस्खलन के कारण आयी मिटटी का एक बहुत ऊँचा ढेर बना था लगभग 2–3 मंजिला ऊँचा बहुत अस्थायी जो कभी भी अपनी जगह से हट सकता था। हमें यह बहुत असुरक्षित लगा और एक बार तो हमने वापस जाने का मन बना लिया। लेकिन गाइड उस पर चढ़ गया इसके उस पार नीचे उतर कर आगे का रास्ता था। गाइड लोगों को हाथ पकड़ कर चढाने और उतारने लगा, बाकी लोगों को चढ़ते देखकर हमनें भी हिम्मत जुटाई और गाइड की सहायता से इसके ऊपर चढ़ गए, नीचे उतरना तो और भी कठिन था, फिसलती मिटटी और पकड़ने के लिए कुछ नहीं, पर गाइड की सहायता से हम धीरे–धीरे नीचे उतर गए।

यह 10 मिनट बहुत ही कठिन बीते और इस पल हमनें जितना जीवंत अनुभव किया वह शायद इस यात्रा में फिर नहीं मिला। दूसरी ओर उतरकर मैं थोड़ी देर बैठ गया, मन आश्चर्यजनक रूप से शांत हो गया था, विचित्र अनुभव था इतनी शांति तो घंटों के ध्यान से भी नहीं मिलती है। मन ही मन भगवान शंकर को याद किया और ओम नमः शिवाय बोलकर आगे प्रस्थान किया।

थोड़ी देर बाद हम गौमुख पहुँच गए या कहें कि नए गौमुख तो अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि गाय के मुख सद्रश्य इसकी आकृति तो बहुत पहले ही नष्ट हो गयी है। पर आप बिल्कुल पास तक जाकर इसको देख सकते हैं। भागीरथी का कल–कल करता जल इस गुफा से ही बाहर आता था। पर इस बार के बड़े भूस्खलन के बाद भागीरथी ने मार्ग परिवर्तित कर लिया है, मार्ग अवरुद्ध हो जाने के कारण पहले लगभग तीन मीटर गहरी झील का निर्माण हुआ और फिर इस धारा को आगे जाने का मार्ग मिला।

अब यह धारा घूम कर आती है और आप बस कुछ ऊपर से ही इसे देख सकते हैं, उद्गम स्थल तक जाना अब असंभव हो गया है। हमने और साथ ही अन्य यात्रियों ने दूर से ही माँ गंगा को प्रणाम किया, शिवलिंग पर्वत यहाँ से साफ दिखता है, उज्जवल स्वेत बर्फ से ढका हुआ पर्वत यहाँ बड़ा ही दिव्य प्रतीत होता है, पर्वत को नमन कर और धूप, कपूर से भगवान शंकर की आरती कर हमने कुछ देर यहीं शांति से विश्राम किया।

4400 मीटर की ऊँचाई पर स्थित गौमुख एक समय ऋषियों–मुनियों की तपस्थली हुआ करता था, इसके दाहिनी ओर स्थित तपोवन में अभी भी कुछ संत तपस्या में लीन थे। पर अब यहाँ साधु सामान्यतः नजर नहीं आते, शायद उन्होंने भी स्थान बदल लिया हो, उनके भी अपने ही कारण हो सकते हैं।

*गंगोत्री जहाँ कभी भूली भटकी इक्का–दुक्का कारें ही दिखती थीं, अब एक मुख्य पर्यटन स्थल बन चुका है और यात्रा के समय यहाँ प्रतिदिन सैकड़ों कारें और अन्य वाहन आते हैं। इससे यहाँ का मौसम गर्म हो रहा है। इनमें से हम जैसे बहुत से लोग गौमुख और तपोवन भी जाते हैं, कुछ अकेले तो कुछ पूरे परिवार के साथ, जिससे यहाँ की शांति भंग होती है।*

गंगोत्री ग्लेशियर जो चौखम्भा (आस–पास का सबसे ऊँचा पर्वत 7000 मीटर) से शुरू होता है, लगभग 30 किमी लम्बा है और आधे से लेकर 2 किमी तक चौड़ा है, ग्लोबल वार्मिंग के कारण हर वर्ष 22–25 मीटर पीछे सरक रहा है और ये एक बहुत विकट

समस्या है। आस–पास के इलाकों के अंधाधुंध विकास और पेड़ों की कटाई से समस्या और विकराल होती जा रही है और ये भी सुनने में आया है कि इसको टूरिस्ट सेंटर के रूप में विकसित करने की योजना है। आप सोच सकते हैं कि हम लोग विकास के नाम पर कितने ज्यादा असंवेदनशील होते जा रहे हैं।

आसमान इतना भी नीला हो सकता है, धूप इतनी भी चमकीली हो सकती है या तारे इतनें भी साफ़ दिख सकते हैं, इसका आपको हिमालय के ऐसे स्थानों पर आकर ही अनुभव हो सकता है और मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझता हूँ की मुझे ये सब कई बार अनुभव करने का अवसर प्राप्त हुआ।

चौखम्भा ग्लेशियर गंगोत्री

प्रकृति पर विजय पाने की इच्छा पाले बहुत से पर्वतारोही इन दुर्गम स्थलों पर महीनों पड़े रहते हैं तो कुछ यूँ ही बस घूमने की इच्छा से इन जगहों पर चले आते हैं और इससे कमर्शियल ट्रेकिंग कंपनियों का बिज़नेस फल–फूल रहा है। लेकिन हम इससे अंजान बने हुए है कि इससे यहाँ के पारिस्थितिक तंत्र पर कितना बुरा असर पड़ रहा है।

मेरा ख्याल है कि अब आप समझ सकते हैं कि ऋषि मुनि क्यों यहाँ से अदृश्य हो गए। उनके पास दुरूह और अगम स्थलों में जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा और इसी के साथ यहाँ की शांति, सुन्दरता और दिव्यता भी कम होती जा रही है।

गौमुख में सुबह के नौ बज चुके थे और तापमान अभी से 15 डिग्री पहुँच चुका है, घूम के बहती गंगा माँ का कोलाहल सुनकर ऐसा लगता है मानों अपने पुराने स्वरुप को पाने के लिए पुकार रही हों। मैया को उनका वही पुराना गौरवशाली स्वरुप पुनः प्राप्त हो ऐसी भगवान शिव से प्रार्थना कर, मिश्रा जी के साथ मैंने शिवलिंग पर्वत को प्रणाम किया और इस दिव्य स्थल से प्रस्थान कर वापस चल दिए अपने गंतव्य की ओर।

ओम नमः शिवाय।।

*सभी फोटोग्राफ्सः*
*विनीत सोनी के सौजन्य से*

विमर्श

# भारत दर्पण

—सल्ला विजय कुमार

अब विश्व बिरादरी ने भी भारत देश में पर्यटन के महत्व का मूल्यांकन करना आरंभ कर दिया है। पिछले वर्ष भारत का 40वें स्थान पर आना एक बड़ी, उपलब्धि थी। अब 7 से 10 मार्च, 2018 तक जर्मनी के बर्लिन में हुआ इंटरनेशनल टूरिज्म बोर्स–2018 में भारत को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शक का पुरस्कार प्रदान किया गया। हम पहले से मौजूद परम्परागत विरासत विशेष एवं अवधारणाओं की ओर बढ़ तो रहे हैं लेकिन इन सभी के लिए अंजान भी है। आज के दौर में सम्पूर्ण मानव जाति स्थानीय वनस्पतियों और जीवों के प्रति अत्यंत रूचि दिखा रही है, परन्तु यह पूर्ण जानकारी वह एक स्थल से नहीं जुटा पाते हैं। केवल भारत एक ऐसा देश है जो इन सभी प्रकार की जानकारियों का भंडार माना जाने वाला देश है।

पर्यटन उद्योग भारत के लिए आर्थिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है तथा यह दिन प्रतिदिन तेजी से बढ़ भी रहा है। पर्यटन परिषद् की गणना के अनुसार पर्यटन से 39.5 मिलियन नौकरियों के अवसर बनने का विश्वास है। पर्यटन परिषद् ने 2013 से लेकर 2023 तक 7.9 प्रतिशत की औसत वार्षिक दर से बढ़ने की संभावना व्यक्त की है जिससे कि अगले दशक तक भारत देश पर्यटन उद्योग के क्षेत्र में सबसे तेज बढ़ने वाला तीसरा देश हो सकता है।

भारत एक सांस्कृतिक एवं पारम्परिक विविधता वाला देश है तथा इसका यह पहलू भी हमारे पर्यटन स्थलों पर परिलक्षित है। जिससे पर्यटक भिन्न भिन्न स्थलों की यात्रा करके अलग अलग ढंग से आनन्द उठा सकता है।

भारत सरकार के द्वारा संस्कृति और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के साथ साथ पर्यटन मंत्रालय ने देश में विभिन्न स्थलों और स्मारकों पर विश्वस्तरीय पर्यटन सुविधाएं प्रदान की परिकल्पना की है। जिसमें पर्यटन पर्व का सर्वाधिक योगदान रहा है। पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार का यह नया कार्यक्रम जागरूकता का एक प्रतीक है।

हमारे भारत देश के पास पर्यटन एक ऐसी शक्ति है जो देश की विविधता में एकता को भलिभांति दर्शाता है तथा इसी के अनुरूप में पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार को यह सुझाव देना चाहता हूं कि जिस प्रकार भारत देश स्वयं ही एक संग्रहालय स्वरूप है उसी प्रकार केंद्र से लेकर राज्यों तक एवं समुदायों के खान–पान की विशेषताओं को दर्शाने के लिए, भारतीय खान–पान संग्रहालयों का गठन भी किया जाना चाहिए।

*राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त व्याख्याता, होटल प्रबंध संस्थान, गांधी नगर (गुजरात)

बैंगलूरु

# एक शहर जो भुलाए न भूले

–विभा शर्मा

जीवन पर्यन्त हम अनेक शख्सियतों से मिलते हैं। इनमें से बहुतों को करीब से जानने का मौका मिलता है तो कुछेक से सिर्फ औपचारिकता का सम्बन्ध ही बन पाता है। पर कुछ ऐसे व्यक्तित्व के मालिक होते हैं जो हमारे अति आत्मीय बन जाते हैं। उनके साथ चाहे कम ही समय व्यतीत किया जाए पर ऐसी अनुभूति होती है मानो वे हमें सदियों से जानते और समझते हैं और ऐसी ही भावना हमारी उनके लिए भी होती है। उनके साथ किसी भी औपचारिकता की कोई आवश्यकता ही महसूस नहीं होती। उनके साथ बात करना ऐसा जान पड़ता है जैसे हम अपने आप से ही बात करे रहे हैं।

कुछ लोग इस परिभाषा को प्रमाणित करते हैं कि यह तो हम सब जानते ही हैं किन्तु कुछ वर्ष पहले ऐसी ही आत्मीयता का आभास मुझे एक जगह के लिए भी हुआ और ऐसा लगा कि हो न हो इस जगह, इस शहर से मेरा कुछ तो गहन नाता है। मैं बात कर रही हूँ बैंगलोर शहर की।

ऐसा भी नहीं है कि यह वह शहर हो जहाँ मैंने अपने इस जीवन की पहली साँस ली थी, यह वह शहर भी नहीं जहाँ मैं पली–बढ़ी और जीवन के नए रंग देखे, यह वह शहर भी नहीं जहाँ एक हमसफ़र के साथ जीवन को साँझा करने का निर्णय लिया हो। जीवन के किसी भी महत्त्वपूर्ण मील के पत्थरों की राह इस शहर से हो कर नहीं गुज़री है तो फिर यह शहर इतना अपना–सा क्यों लगता है? निश्चित रूप से कह पाना तो कठिन होगा पर कुछ संभावित कारण ज़रूर हैं जो मेरी इस भावना को पुष्ट करते हैं।

महल के अंदर का एक दृश्य

बैंगलोर में टीपू सुल्तान का भव्य महल जो सैलानियों को बीते युग के वैभव से रूबरू करवाता है। यह महल बेंगलुरू शहर की सुंदर

*संप्रति स्वतंत्र लेखिका

तथा उल्लेखनीय इमारतों में से एक है। टीपू सुल्तान द्वारा गर्मी के मौसम में इस महल का उपयोग किया जाता था। उस समय लोग इसे "रश्क–ए–जन्नत" कहा करते थे। लेकिन टीपू इसे "खुशी का घर" कहा करते थे। इस शहर के संस्थापक कैम्पे गौड़ा ने 1537 में यह किला बनवाया था, जिसे बाद में टीपू सुल्तान ने विस्तार दिया।

यहाँ का खूबसूरत लाल बाग़ जहाँ फूलों की महक से जीवन आनंदविभोर हो जाता है। असल में लाल बाग एक वनस्पति उद्यान है। यहाँ घास के लॉन, दूर तक फैली हरियाली, सैंकड़ों वर्ष पुराने पेड़, सुंदर झील, कमल के तालाब, गुलाबों की क्यारियाँ, दुर्लभ पौधे, सजावटी फूल देख कर मन को अजीब सी शान्ति मिलती हैं।

लाल बाग में फूलों से बनाया गया किला

पौधों और जीव–जंतुओं की अनेक प्रजातियों को आश्रय देने वाले कब्बन पार्क में संगीत पर थिरकते फ़व्वारे किसी भी शाम को रंगीन बनाने में पूर्णतया सक्षम हैं। यह सुंदर पार्क यहां के मुख्य आयुक्त मार्क कब्बन की परिकल्पना से 1864 में बनाया गया था और उन्हीं के नाम पर इसका नाम कब्बन पार्क रखा गया है। पार्क में बना सरकारी संग्रहालय देखने योग्य है। यहाँ होयसला काल की शिल्पकला, मोहनजोदड़ो से प्राप्त प्राचीन औजारों, सिक्कों और मिट्टी के पात्रों का अतुल्य और अविश्वसनीय संग्रह है।

उत्कृष्ट कारीगिरी का नमूना इस्कॉन मंदिर राजाजी नगर में हरे कृष्ण पहाड़ी पर है। सुंदर बगीचे के बीच में स्थित होने के कारण इस मंदिर के चारों ओर विश्राम करती हुई प्रकृति के सौंदर्य के अनुभव करते हुए ईश्वर के साथ एकाकार हुआ जा सकता है।

इस्कॉन मंदिर

यहां ऐसे और भी पर्यटन स्थल हैं जो इस शहर की गरिमा में चार चाँद लगाते हैं। पर क्या ये जग–प्रसिद्ध आकर्षण की जगहें इस शहर को मेरे लिए बहुत ख़ास बनाती हैं? जी नहीं।

बहुत बार किस्से कहानियों में जब ईश्वर के धाम का वर्णन पढ़ा और सुना था कि जहाँ सदा मन को लुभाने वाली समीर बहती हो, जहाँ का मौसम न अधिक गर्म होता हो, न अधिक सर्द, जहाँ सभी ऋतुओं में फूल खिले रहते हों और जहाँ प्रकृति अपने खजाने लुटाने को लालायित रहती हो, वहीं ईश्वर का धाम होता है।

शायद यही है मेरी इस शहर से सौहार्दता का रहस्य। प्रकृति की जो नियामतें इस शहर को हासिल हैं वे एक अनूठे ढंग से मेरे अंतर मन को स्पर्श कर जाती हैं। सुबह घर के किवाड़ खोलते ही एक अपनेपन को दर्शाती हुई मनमोहक पवन तन और मन को शीतल कर देती है। एक बेहतर दिन का वादा करते हुए वो अनजाने ही मुख की मुस्कान बन जाती है। बादलों से आच्छादित गगन मानो हर पल बदलता मनमोहक परिदृश्य प्रस्तुत करता रहता है। रवि अपनी किरणों से हर कोने को दीप्तियमान कर के अपनी गर्माहट से सराबोर कर देता है। जीवन का संचार करती उसकी किरणें मानो बादलों से और हर जीव–निर्जीव से आँख–मिचौली खेलती और अठखेलियाँ करती जान पड़ती हैं। यहां बादल भी कहाँ कम हैं, सूरज के तेज को बढ़ने ही नहीं देते। कहीं ज़रा सा सूर्य ने सबको गरमाया कि बादल आ गए उसे धकेलने और देखते ही देखते बादलों और हवाओं की सुनियोजित योजना शुरू। कहीं घनघोर काली घटाएं, कहीं कौंधती बिजली, कहीं शीतल तेज़ हवाएँ और फिर ज़रा भी देर न लगातीं बूंदों की लड़ियाँ। देखते ही देखते छमाछम बरसात सब के मन को तृप्त कर के भावविभोर कर देती है। पल–पल बदलता प्रकृति का ऐसा नाटकीय प्रदर्शन तो स्वाभाविक ही देखने को मिल जाता है यहाँ।

अकसर होने वाली बारिश ऐसी प्रतीत होती है कि जैसे बस मन में इच्छा भर करो और वो हाज़िर। जब जहाँ अपने मन की बात सुनी जाए और जहाँ उसकी अभिलाषा पूरी हो तो वह जगह कैसी होगी? मन में एक अनूठा सा संतोष होता है कि वह जो ऊपर बैठा है, जैसे हरदम मेरे साथ है, मुझे समझता है, उसके और मेरे बीच का दूरसंचार बहुत विश्वसनीय और पुष्ट है। एक बार नहीं, हर बार प्रकृति की रंगरेलियाँ देखते हुए जब भी मुख ऊपर करो ऐसा ही आभास होता है।

यह वही एक शहर है जहाँ सारी ऋतुएँ अपना सर्वोत्तम खूबसूरत रूप ले कर ही पदार्पण करती हैं। बसंत में पेड़ रंग–बिरंगे फूलों से लद जाते हैं। कचनार के फूलों के सफ़ेद, नारंगी और गहरे गुलाबी रंग, गुलमोहर के चटक लाल–पीले पुष्प, अमलतास के सहज ही झर कर पीली सेज सजाने वाले वह अनोखे फूल–कुछ ऐसे हैं जो अनायास ही मन को हर लेते हैं। बस किसी भी पेड़ के नीचे कुछ देर बिताई जाए तो इस अनूठे रंग–बिरंगे कोष से झोली भर जाती है। ऐसे खूबसूरत संगी–साथियों के होते हुए कैसा एकाकीपन और किसी और की कैसी प्रतीक्षा? इतना ही नहीं, पतझड़ में तो जैसे पेड़ों पर रंगों का मेला ही लग जाता है, फूल तो फूल, पत्ते भी सतरंगी रंग के बाने पहन लेते हैं। वे पत्ते जब पाँवों के नीचे आ जाने पर चुरमुराते हैं तो मानो संगीतमय अलविदा का गीत गुनगुनाते हैं। जाते–जाते भी वे मन के किसी कोने को प्रभावित कर जाते हैं।

*बेंगलुरु को अपना नाम कैसे मिला इसके बारे में यहां होयसाल राजा वीरा बल्लाला से जुड़ी हुई एक दिलचस्प कथा प्रचलित है। कहते है कि एक बार वीरा बल्लाला अपनी राजधानी हाम्पी से येलाहंका के जंगलों में शिकार करने गए और सैनिकों से अलग हो कर रास्ता भटक गए। कुछ घंटों तक लिए भटकने के बाद उन्हें एक झोपड़ी दिखी जहां एक बूढ़ी औरत रहती थी। राजा को देख कर उसने सेम जैसी बेंडा नामक कुछ फलियां उबाली और पानी के साथ राजा के सामने रख दी, राजा को बड़ी भूख लगी थी उसने खाया और बूढ़ी माता के आतिथ्य से खुश होकर उस स्थान पर एक नगर बसाया। जिसका नाम बेंडा काल ऊरु (बीन्स का शहर) रखा। कालांतर में ''बेंदा कादुरु'', ''बेंगागुरु'',बेंगलोर और अंत में बंगलूरु हो गया। हालांकि यह कहानी लोकप्रिय है और विश्वसनीय भी लगती है लेकिन इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं हैं।*

यहाँ रहते हुए ही मुझे ऐसा लगा कि मानो मेरी अपने–आप से भेंट हुई है। यहीं पर एहसास हुआ कि मेरा अंतर्मन और कायनात अनेकों अदृश्य धागों से जुड़े हैं। मैंने अपने–आप को इस प्रकृति का एक अटूट हिस्सा महसूस किया और इस आभास से पनपा इस शहर से एकात्मकता का बोध। यह अपने में एक अनमोल अनुभूति है जो इस शहर को मेरे लिए कुछ ख़ास, दरअसल, बहुत ख़ास बनाती है।

विधान सभा का दृश्य

कैसे पहुंचे :

**रेल मार्ग** : बंगलुरु में दो प्रमुख रेलवे स्टेशन है:– बंगलुरु सिटी जंक्शन और यशवंतपुर। यह दोनों ही स्टेशन भारत के प्रमुख शहरों से सीधे ही जुड़े हुए है।

**वायु मार्ग** : बेंगलुरु इंटरनेशनल एयरपोर्ट शहर से करीब 30 कि.मी. दूर है। यहां से 10 घरेलू और 21 अंतर्राष्ट्रीय नियमित उड़ाने उपलब्ध हैं।

**कहां ठहरें** : यहां ठहरने में समस्या नही है यहां आपको बजट होटल से लेकर पांचतारा होटल तक उपलब्ध हैं।

सम्पर्क: 5422/38, वेस्ट चंडीगढ़ –160014
मोबाइल: 08968212137

मरूस्थल पर्यटन

# पुष्कर

–ओम प्रकाश मीना

पुष्कर राजस्थान का एक विख्यात तीर्थ स्थान है। पुष्कर की प्राकृतिक सुन्दरता, धार्मिक वातावरण एवं मेले की चहल–पहल धार्मिक पर्यटकों को बार–बार अपनी ओर आकर्षित करती है। यहाँ आने वाला हर सैलानी इस दिव्य, अलौकिक स्थान में रहकर अपने आप को गौरान्वित महसूस करता है।

जिस प्रकार प्रयाग को "तीर्थराज" कहा जाता है, उसी प्रकार से इस तीर्थ को "पुष्करराज" कहा जाता है। पुष्कर की गणना पंचतीर्थों व पंच सरोवरों में की जाती है। प्राचीन धारणा के अनुसार यह कहा जाता है कि 'सारे तीर्थ बार–बार, पुष्कर तीर्थ एक बार', इसीलिए इसे तीर्थों का गुरु, पाँचवाँ धाम एवं पृथ्वी का तीसरा नेत्र कहा जाता है।

पुष्कर में एक तरफ तो विशाल सरोवर से सटी पुष्कर नगरी है तो दूसरी तरफ रेगिस्तान। पुष्कर में मुख्य ब्रह्माजी का मन्दिर है जो कि पुष्कर सरोवर से थोड़ी ही दूरी पर स्थित है। मन्दिर में चतुर्मुखी ब्रह्मा जी की दाहिनी ओर सावित्री एवं बायीं ओर गायत्री का मन्दिर है। ज्येष्ठ पुष्कर के देवता ब्रह्माजी, मध्य पुष्कर के देवता भगवान विष्णु और कनिष्ठ पुष्कर के देवता रुद्र यानि शिव हैं। पास में ही श्रीसनकादि मन्दिर है तो एक छोटा सा मन्दिर नारद जी का भी है।

पुष्कर में ब्रह्मा जी का मन्दिर

*सहायक निदेशक, पर्यटन मंत्रालय

*अजमेर शहर से 15 कि.मी. दूर उत्तर–पश्चिम में अरावली पहाड़ियों की गोद में बसा 'पुष्कर' एक छोटा सा शहर, भारत के प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों में से एक है। पर्यटकों का स्वर्ग 'तीर्थराज' पुष्कर, पद्म–पुराण के अनुसार सभी तीर्थो में श्रेष्ठ माना गया है। आज देश विदेश में अपनी विविध थाती परक आस्थाओं, मंदिरों, सरोवर और ग्राम्यांचल की सोंधी महक के लिये चर्चित यह नगर दुनिया में अकेला ऐसा स्थान है जहाँ ब्रह्मा की पूजा की जाती है।*

इसे वेदमाता गायत्री की जन्मभूमि भी माना जाता है। भगवान् शिव सहित अन्य देवताओं की शक्ति पीठ भी यही है। कार्तिक शुक्ल पक्ष के अंतिम पाँच दिनों में पुष्कर तीर्थ में स्नान– पूजा करने का अपना अलग ही महत्व है।

यहाँ पवित्र पुष्कर झील है तथा समीप में ब्रह्मा जी का पवित्र मंदिर है, जिससे प्रति वर्ष अनेक तीर्थयात्री यहाँ आते हैं। इसके आसपास के क्षेत्र में ज्वार, बाजरा, मक्का, गेहूँ तथा गन्ने की उपज होती है। कलापूर्ण कुटीर–वस्त्र–उद्योग, काष्ठ चित्रकला, तथा पशुओं के व्यापार के लिए यह विख्यात है। अक्टूबर, नवंबर के महीनों में यहाँ एक विशेष धार्मिक एवं व्यापारिक महत्व का मेला लगता है।

इस सरोवर की लंबाई और चौड़ाई समान है। डेढ़ किलोमीटर लंबे और इतने ही चौड़े पुष्कर सरोवर को पास की पहाड़ी से देखें तो यह वर्गाकार स्फटिक मणि समान प्रदीप्त लगता है। इसके चारों तरफ बने हुए बावन घाट इसके सौंदर्य को दुगना कर देते हैं।

## पुष्कर के बारे में :

पुष्कर की रचना कैसे हुई इस विषय में अनेक किवदंतियां हैं। पुष्कर का अर्थ है एक ऐसा सरोवर जिसकी रचना पुष्प से हुई हो। पुराणों के अनुसार ब्रह्माजी ने यज्ञ करने के लिए एक उचित स्थान चुनने की इच्छा से एक कमल गिराया था, जो इसी स्थान पर आकर गिरा और उसी से इस स्थान को पुष्कर के नाम से जाना गया। पुष्कर की उत्पत्ति के बारे में एक पौराणिक कथा के अनुसार, यहां भगवान ब्रहमा ने दानव वज्रनाभ का कमल के फूल से वध किया था। फलस्वरूप, कमल के फूल की तीन पंखुडियां झड़ गई, जिनमें से एक पुष्कर में गिर गई और उससे पवित्र झील बन गई। एक अन्य किवदंति के अनुसार समुद्र मंथन से निकले अमृतघट को छीनकर, जब एक राक्षस भाग रहा था तब उसमें से कुछ बूँदें इस सरोवर में गिर गईं तभी से यहाँ की पवित्र झील का पानी अमृत के समान हो गया जिसकी महिमा एवं रोगनाशक शक्ति का गुणगान इतिहास की में अनेक पुस्तकों में पाया जाता है।

रामायण में भी पुष्कर का उल्लेख मिलता है। सर्ग 62 श्लोक 28 श्लोक में विश्वामित्र के यहाँ तप करने तथा सर्ग 63 श्लोक15 के अनुसार यहाँ के पावन जल में मेनका द्वारा स्नान करने की बात कही गई है।

चौथी सदी के चीनी यात्री फाहियान के यात्रा वृत्तांत में भी इस पवित्र नगर का उल्लेख मिलता है।

भारत के विख्यात कवि कालिदास ने अपनी प्रसिद्ध रचना अभिज्ञान शाकुंतलम में पुष्कर की चर्चा करते हुए इसका गुणगान किया है।

ईसापूर्व दूसरी शताब्दी में बने साँची स्तूप के लेखों में ऐसे कई बौद्ध भिक्षुओं का वर्णन मिलता है जो पुष्कर में निवास करते थे। इन लेखों से पता चलता है कि ईस्वी सन् के आरंभ होने से पहले ही पुष्कर तीर्थस्थान के रूप में विख्यात था। स्वयं पुष्कर में भी कई प्राचीन लेख मिले है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में उल्लेख मिलता है कि अपने मानस पुत्र नारद द्वारा विवाह करने से इन्कार किए जाने पर ब्रह्मा ने उन्हें रोषपूर्वक शाप दे दिया कि –''तुमने मेरी आज्ञा की अवहेलना की है। मेरे शाप से तुम्हारा ज्ञान नष्ट हो जाएगा और तुम गन्धर्व योनि को प्राप्त करके कामिनियों के वशीभूत हो जाओगे।'' तब नारद ने भी दु:खी पिता ब्रह्मा को शाप दिया "तात! आपने बिना किसी कारण के सोचे – विचारे मुझे शाप दिया है। अत: मैं भी आपको शाप देता हूँ कि तीन कल्पों तक लोक में आपकी पूजा नहीं होगी और आपके मंत्र, श्लोक कवच आदि का लोप हो जाएगा।" तभी से ब्रह्मा जी की पूजा नहीं होती है। मात्र पुष्कर क्षेत्र में ही वर्ष में एक बार उनकी पूजा–अर्चना होती है।

इस छोटे से शहर में 500 से अधिक मंदिर और 52 घाट हैं। पुष्कर में स्थित ब्रहमा मंदिर, भारत में भगवान ब्रहमा को समर्पित एकमात्र मंदिर है। ब्रह्मा के मंदिर के अतिरिक्त यहाँ सावित्री, बदरीनारायण, वाराह और शिव आत्मेश्वर के मंदिर है, किंतु वे आधुनिक हैं। पुष्कर झील के तट पर जगह–जगह पक्के घाट बने हैं जो राजपूताना के देशी राज्यों के धनी मानी व्यक्तियों द्वारा बनाए गए हैं।

पुष्कर सरोवर में विभिन्न धर्म, जाति एवं सम्प्रदाय के लाखों लोग डुबकी लगाकर अपनी भावांजलि अर्पित कर आनंद की अनुभूति करते है। सरोवर के चारों ओर बने 52 घाटों पर अनेकता एकता में बदल ज़ाती है। यहाँ पर आने वाले विदेशी सैलानी यहां पर कई–कई दिन तक ठहरते हैं। यहां की हर चीज़ पुष्कर को पर्यटकों के बीच लोकप्रिय बनाती है।

आराधना करते विदेशी सैलानी

## अंतर्राष्ट्रीय रौनक

भारत के किसी भी धार्मिक स्थल पर आम तौर पर जितनी संख्या में पर्यटक आते हैं, पुष्कर में आने वाले पर्यटकों की संख्या उससे कहीं अधिक होती है। यहां आपको अधिकतर विदेशी सैलानी ही दिखाई देंगे, वह भी राजस्थानी पोशाकों में, क्योंकि उन्हें पुष्कर खास तौर पर पसंद है। विशेषकर कार्तिक पूर्णिमा के मेले में हजारों की संख्या में देश–विदेश से पर्यटक आते हैं और इस पवित्र पुष्कर झील में स्नान करने के बाद ही श्रीरंग जी एवं अन्य मंदिरों के दर्शन करते हैं।

इसके अतिरिक्त पुष्कर नगरी व्यावसायिक और पर्यटन की दृष्टि से भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। यहाँ प्रतिवर्ष दो विशाल मेलों का आयोजन किया जाता है। पहला मेला कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक तथा दूसरा मेला वैशाख शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक लगता है। पुरोहित संघ ट्रस्ट की ओर से पुष्कर झील के बीचों–बीच बनी छतरी पर झंडारोहण व महा आरती के साथ कार्तिक मेले की शुरुआत होती है।

## पुष्कर मेला

पुष्कर शहर, यहां लगने वाले पशु मेले के लिए भी लोकप्रिय है। यहां हर साल, नवंबर महीने में विश्व प्रसिद्ध पुष्कर पशु मेला लगता है, जो दुनिया का सबसे बड़ा मवेशियों का बाजार है। मवेशी या पशुओं के व्यापार के अलावा इस मेले में राजस्थानी परंपरा और संस्कृति के विभिन्न पक्षों को प्रदर्शित करने वाली वस्तुएं मिलती हैं।

कार्तिक महीने में लगने वाले पुष्कर मेले न तो इस स्थान की दुनिया भर में अलग ही पहचान दी है। ऊँट तो यहां होते ही हैं इसके अतिरिक्त घोडे, हाथी, और बाकी पशुओं का भी यहाँ व्यापार होता है। सैलानी इन पर सवारी करने का आनंद भी ले सकते हैं। भारत के सबसे बडे पशु मेलों में से एक यह मेला रेत के विशाल मैदान में लगाया जाता है। बड़े मैदान में कतार में लगी दुकानें, खाने–पीने की गुमटियाँ, करतब, झूले और मेलों में देखी जाने वाली सभी वस्तुओं का जमावड़ा यहाँ देखा जा सकता है। लोक संस्कृति व लोक संगीत का सौंदर्य हर जगह देखने को मिलता

है। रंग बिरंगी और राजसी पोशाकों में आये लोग इस मेले की सुन्दरता में चार चाँद लगा देते है और दूर तक फैले पर्वतों के बीच विस्तृत मैदान पर सैकड़ों ग्रामीण परिवार मेले में डेरे डाल लेते हैं। पशुओं की तरह–तरह की नस्लें, औजार, कृषि के यंत्र और उनके तंबू डेरे विविधता का सुंदर समा बाँध देते हैं।

इस मेले के और भी बहुत से आकर्षण है। जिसमें पशुओं से संबंधित विभिन्न कार्यक्रम भी किए जाते हैं। इनमें ऊंटों की दौड़, ऊंटों का नृत्य, घोड़ों के आकर्षक नृत्य आदि मुख्य होते हैं। मेले के दिनों में ऊंटों व घोडों की दौड खूब पसंद की जाती है। मेले के अंत में सबसे सुंदर ऊँट व ऊँटनी के साथ श्रेष्ठ नस्ल के पशुओं को पुरस्कृत किया जाता है। दिन में लोग जहाँ पशुओं के कारनामे देखते रहते हैं तो वहीं शाम का समय राजस्थान के लोक नृत्यों तथा लोक संगीत के कार्यक्रम होते हैं।

मेले के समय पुष्कर में कई संस्कृतियों का मिलन सा देखने को मिलता है। एक तरफ तो मेला देखने के लिए अनेक देशों के सैलानी बड़ी संख्या में पहुंचते हैं तो दूसरी तरफ राजस्थान व आसपास के आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों के लोग मेले में शामिल होने के लिए अपने–अपने पशुओं के साथ आते हैं।

घोड़ा नृत्य

ऊंट नृत्य

*रेत के विशाल मैदान में मेला लगाया जाता है। दुकानों की कतारें, खाने-पीने के स्टाल, झूले, सर्कस, और न जाने क्या-क्या ? ऊंट और रेगिस्तान का निकट का संबंध है इसलिए ऊंट तो हर तरफ देखने को मिलते ही हैं। लेकिन कालांतर में इसका स्वरूप विशाल पशु मेले का हो गया है।*

वर्तमान समय में इसकी देख-रेख की व्यवस्था राज्य सरकार के पास है। इसलिए यहां स्वच्छता बनाए रखने में भी काफ़ी मदद मिली है। राज्य प्रशासन भी इस मेले को विशेष महत्व देता है। स्थानीय प्रशासन इस मेले की व्यवस्था करता है एवं कला संस्कृति तथा पर्यटन विभाग इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

तेरह ताली राजस्थान के प्रसिद्ध लोक नृत्यों में से एक है जो पहले पारम्परिक रूप से कामदा सपेरा जनजाति द्वारा किया जाता था। लेकिन अब मिरासी, भांड, ढोली, नट आदि जनजातियां भी यह नृत्य करने लगी हैं। यह एक जटिल नृत्य है। इसमे महिला नर्तकियां अपने कमर, कोहनी, कलाई, कंधों, घुटनों आदि – शरीर के विभिन्न अंगों पर 13 मंजीरे बांधती हैं और हाथ में लिए एक मजीरे से बाकी तेरह मंजीरों को बजाते हुए विभिन्न भाव-भंगिमाएं प्रदर्शित करते हुए नृत्य करती है। इस नृत्य का आरंभ फर्श पर बैठकर किया जाता है और फिर धीरे धीरे गति बढ़ाते हुए यह तेज हो जाता है। यह नृत्य बहुत कुशल कलाकारों द्वारा किया जाता है। इसके साथ पुरूष कलाकार राजस्थानी लोकगीतों के साथ ढोलक, झांझ, सारंगी, हार्मोनियम जैसे वाद्यों का उपयोग करते हैं। कई बार तो पर्यटक भी इनके साथ ही नाचने लगते हैं।

कालबेलिया नाच और चकरी नृत्य का ऐसा समां बंधता है कि दर्शक भी झूमने लगते हैं। सपेरा जनजाति द्वारा किए जाने वाले इस नृत्य में मुख्य कलाकार महिलाएँ होती हैं जो काले घाघरे पहन कर

तेरहताली नृत्य

साँप की गतिविधियों की नकल करते हुए नाचती है। नृत्य प्रदर्शन को आकर्षक बनाने में पुरूष बीन, डफली, खंजरी, मोरचंग और ढोलक जैसे कई तरह के वाद्य यंत्र बजाते हैं। प्रदर्शन जैसे–जैसे आगे बढ़ता है धुन तेज होती जाती है और साथ ही नर्तकियों के नृत्य में भी गति आती जाती है। जब कलाकार नृत्य प्रस्तुत करते हैं तो पूरे परिवेश में एक शांति छा जाती है।

मेले के दिनों में पूरे पुष्कर को रोशनी से सजाया जाता है। राजस्थान के पारंपरिक एवं सांस्कृतिक नृत्य–गीत के अतिरिक्त देशी एवं विदेशी कलाकार भी अपनी कला का प्रदर्शन करते है।

उधर मेला स्थल से परे, पुष्कर नगरी का माहौल एक तीर्थनगरी सरीखा होता है। भारतीय मान्यताओं में कार्तिक में स्नान का ज्यादा महत्व है। इसलिए यहाँ साधु भी बडी संख्या में नजर आते हैं। सुबह का वातावरण बहुत ही स्वच्छ होता है। संध्या के समय मंदिरों के आँगन से आने वाली आरतियों की गूँज पूरे वातावरण को आस्था एवं शान्ति में डुबो देती है। इस छोटे से अंचल में ही पाँच सौ के आसपास मंदिर हैं, और जब किसी भी मंदिर में शंख, खड़ताल और घंटियाँ बज उठती हैं तो उनके अनहद स्वर हर नास्तिक के लिये चुनौती और हर आस्तिक के लिये गहन श्रद्धा बन जाते हैं। मंदिरों में आरती के समय विभिन्न प्रकार के सुगंधित धूएं से सारा वातावरण सुरभित हो उठता है।

सैलानियों की इतनी बडी संख्या के बावजूद यहां के स्वरूप में खास परिवर्तन नहीं आया है। इसलिये इसका प्राकृतिक रुप अभी भी आकर्षक बना हुआ है। सफेद संगमरमरी सीढियों से चलकर ब्रह्मा मंदिर के पास ही ऊँचे टीले पर दिन ढ़लने से कुछ पहले कैमरामैन सूर्यास्त की तस्वीरें कैद करने को तैयार मिलते हैं। शाम से पहले की लाली में धूल उड़ाती रेत पर ऊंटों और दूसरे जानवरों की लंबाती परछाइयाँ कुदरती चित्रकारी छायांकन का नायाब नमूना बन जाती है।

मेले में देशी विदेशी सभ्यता और संस्कृति का संगम अत्यंक आकर्षक लगता है। एक ओर जहाँ हजारों की संख्या में विदेशी सैलानी आते है तो दूसरी ओर आसपास के आदिवासी और ग्रामीण भी इसमें भाग लेते हैं। रंग–बिरंगे परिधानों में ग्रामीण महिलाएँ अपनी भाषा के गीत गाती है तो लगता है निश्छलता कंठों में स्वर बनकर छलक पड़ी है।

पुष्कर में घूमने का सबसे उत्तम मौसम सर्दियों में होता है, इस दौरान तापमान 8 से 25 डिग्री सेल्सियस के बीच रहता है। भारतीय संस्कृति की अनमोल, अपनी अद्वितीय पहचान रखने वाला पुष्कर देश की सनातन संस्कृति से पूरे विश्व को परिचित कराता है।

यहाँ आने वाला हर पर्यटक, यहाँ की पवित्रता और सौंदर्य की मन में एक याद संजोए जाता है।

**कैसे पहुंचें**

*रेल मार्ग : निकटतम रेलवे स्टेशन अजमेर है।*

*हवाई मार्ग : पुष्कर का सबसे निकटतम जयपुर का सांगानेर हवाई अड्डा है।*

*सड़क मार्ग : अजमेर शहर जयपुर, दिल्ली, मुंबई, जैसलमेर और उदयपुर जैसे बड़े शहरों से सुव्यस्थित रूप से सीधे ही जुड़ा हुआ है।*

***कहां ठहरें*** *: पुष्कर में बजट होटल और अच्छे गेस्ट हाउस उपलब्ध है।*

*पुष्कर से 20 किलोमीटर दूर अजमेर में तारागढ़ का किला : पर्यटकों का एक और लोकप्रिय गंतव्य*

**मुझे जब छुट्टियां बितानी होती हैं मैं अपने ही देश के किसी शहर में परिवार को ले जाता हूं। मुझे विदेशों में छुट्टियां मनाना अच्छा नहीं लगता। मेरा प्रिय शहर मनाली है।**

**–अक्षय कुमार, फिल्म अभिनेता**

पर्यटन

# पर्यटन के क्षेत्र में उभरती प्रवृत्तियां

डॉ. अमित कुमार सिंह

सही मायने में पर्यटन क्या है? इस प्रश्न के उत्तर को ढूंढने से पता चलता है कि पर्यटन अलग–2 लोगों के लिए अलग–2 मायने रखता है। एक राष्ट्र के लिए पर्यटन उद्योग है जो उसके लिए आय का एक साधन है। एक पर्यटक के लिए पर्यटन एक यात्रा है जिसे मनोरंजन या फुरसत के क्षणों का लुत्फ लेने के उद्देश्य से किया जाता है। पर्यटन किसी छात्र के लिए रोजगार का साधन है तो उन लोगों के लिए धन का स्रोत है जो सीधे तौर पर इनसे जुड़े है। इस प्रकार पर्यटन उन सभी लोगों के लिए लाभदायक है जो इनसे किसी न किसी तरह जुड़े है।

पर्यटन का विकास कब हुआ यह एक रहस्य है लेकिन निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि आदिमानव ने भोजन की तलाश में एक जगह से दूसरे जगह भटकना शुरू किया। और यह पर्यटन की एक शुरूआत मात्र थी। धीरे–2 विकास की गति ने इसे आधुनिक पर्यटन का नाम दे दिया जिसमें आराम तलब के अलावा सुरक्षा, सहयोग, सफाई, संरचना, स्वागत, सूचना, सुविधा आदि पर ज्यादा बल दिया जाने लगा। रोटी कपड़ा और मकान की चाह वाली पर्यटन क्रिया अब आधुनिकीकरण एवं पर्यटकों की इच्छा के अनुसार बहुत सारे विकल्प लेकर आया जिसमें परंपरागत पर्यटन के अलावा गैर परंपरागत पर्यटन संसाधनों पर भी बल दिया जाने लगा। आधुनिक पर्यटन एक उद्योग का स्वरूप ले चुका है जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक घटनाओं का समावेश है। साथ ही साथ यह एक व्यापार का मापदंड, उत्पादन तथा रोजगार को सृजन का एक साधन बन गया है।

**किसी भी विकासशील राष्ट्र की उन्नति उसके राजस्व में वृद्धि, कार्मिक क्षेत्र में सुधार, रोजगार के साधनों की वृद्धि, उत्पादन के अधिकतम क्षेत्रों में भुगतान का संतुलन, उत्पादकता में वृद्धि, राष्ट्रीय विकास आदि पर निर्भर करता है और वास्तव में पर्यटन एक ऐसा साधन है जो सभी मापदंडो को पूरा करता है।**

पर्यटन आज पूरे विश्व में एक उद्योग के तौर पर अपना परचम लहरा रहा है। इस महत्ता को देखते हुए पर्यटन एवं इसके विभिन्न आयाम पर शोध भी होने लगे है। अर्थशास्त्र की भाषा में पर्यटन को अदृश्य व्यापार कि संज्ञा दी गयी है क्योंकि इस तरह के व्यापार में हम कोई वस्तु (उत्पाद) एक देश से दूसरे देश में नहीं भेजते बल्कि सेवा का संवर्धन करते है। उदाहरण के तौर पर कई छोटे–2 देश जैसे थाईलैंड, मिस्र, सिंगापुर, मलेशिया, नेपाल तथा प्रमुख द्वीप राष्ट्र जैसे हवाई, फीजी, सेंट लुशिया आदि के लिए पर्यटन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह राष्ट्र पर्यटन पर पूरी तरह आश्रित है, पर्यटन से बहुत अधिक मात्रा में धन अर्जित करते है और सेवा उद्योग में रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देते है।

*सहायक प्रोफेसर, पर्यटन विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय सिक्किम, गंगटोक

आधुनिक परिवेश में पर्यटन एक आर्थिक गतिविधि के तौर पर जाना जाने लगा है जिससे किसी भी राष्ट्र को उसकी उन्नति और प्रोन्नति में पर्यटन एक कारगर हथियार के तौर पर उपयोग किया जाता है। आज पर्यटन की महत्ता सिर्फ मनोरंजन या भ्रमण तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह रोजगार का एक साधन बन चुका है। एक आंकड़े के अनुसार भारत में राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) मे इसका योगदान 6.23 प्रतिशत और भारत के कुल रोजगार में 8.78 प्रतिशत का योगदान है। पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार के अनुसार भारत में वर्ष 2016 में लगभग 89 लाख अंतराष्ट्रीय पर्यटकों का आगमन हुआ था और उनसे करीब 155650 करोड़ रूपये की आमदनी हुई जो किसी भी राष्ट्र के विकास में सहायक हो सकता है।

भारत वर्ष की सभ्यता और संस्कृति को विश्व में सबसे पुरानी सभ्यताओं में शुमार किया जाता है और इस तरह पर्यटन के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाई हुई है। भारत में पर्यटन के मुख्यतः दो ही अंश है— सांस्कृतिक पर्यटन एवं धार्मिक पर्यटन। भारत विविधताओं का देश है। यहाँ अनेकता में एकता का वास है। यहां के पर्यटन संसाधनों में विविधता है। हर राज्य अपने में अलग—2 संस्कृतियों को आत्मसात किये हुए है। जहाँ पर्यटन का प्रश्न है, भारत आरम्भ से ही धार्मिक पर्यटन की सोच से जुड़ा हुआ है। पर्यटन शब्द की उत्पत्ति संस्कृत साहित्य में प्रयोग किये गये शब्द 'अटना' की तरफ इंगित करता है जिसका मतलब है घूमना। यह शब्द हैं तीर्थाटन, देशाटन एवं पर्यटन। 'तीर्थाटन' का मतलब है तीर्थ के लिए यात्रा करना। भारत में चार धामों का होना इस बात का प्रमाण देता है कि तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद तथा उचित यातायात के साधनों के अभाव में भी लोग इन धार्मिक यात्राओं पर जाया करते थे। इस बहाने दूरदराज के धार्मिक स्थलों की यात्रा तो हो ही जाती थी साथ ही साथ रास्ते में पड़ने वाले अन्य स्थलों की सभ्यता एवं संस्कृति तथा वहाँ के रहन—सहन के बारे में भी पता चलता था। 'देशाटन' शब्द देश की यात्रा के लिए प्रयोग किया गया है। इस तरह की यात्रा का प्रायोजन व्यापार एव वाणिज्य के लिए होता था जब व्यक्ति अपने सामान आदि की बिक्री के लिए एक जगह से दूसरे जगह की यात्रा करता था। देशाटन का एक दूसरा पहलू ज्ञान की खोज को भी दर्शाता है।

हवेनसांग, फाहयान, इब्नबतूता आदि घूमक्कड़ कई देशों की यात्रा के बाद जब भारत आये तो यहां की संस्कृति एवं सभ्यता को देखकर मंत्रमुग्ध हो गये थे। 'पर्यटन' शब्द का प्रयोग ऐसी यात्रा से था जिसमें व्यक्ति मनोरंजन आदि के लिए एक जगह से दूसरी जगह पर जाया करता था। आधुनिक काल में यह एक ऐसी क्रिया से जुड़ा है जो फुरसत के क्षणों के लिए बना है और जिसका उद्देश्य मनोरंजन, ज्ञानार्जन, स्वास्थ्य, खेलकूद आदि है। इस प्रकार हम पाते है कि प्राचीन काल में भारत में धार्मिक पर्यटन काफी फलीभूत था। चार धामों का होना इस बात का प्रमाण देता है कि कठिन विषम परिस्थितियों के बावजूद मोक्ष की चाह में यह एक जरूरी यात्रा होती थी। चूंकि पर्यटन में

सिर्फ और सिर्फ एक ही चीज दिखाकर बार–2 उन्ही पर्यटकों के आकर्षित नहीं किया जा सकता इसलिए भारत सरकार ने अपने पर्यटन संसाधनों में से ऐसे बहुत से संसाधनों की खोज की है जो पर्यटकों को अपनी तरफ लुभाने की पूरी क्षमता रखते है और अगर इसका सही ढंग से दोहन किया जाये तो आने वाले समय में भारत विश्व में पर्यटन व्यवसाय में अग्रणी हो जायेगा। वर्ल्ड ट्रैवल एण्ड टूरिज्म कांउसील (WTTC) ने अपने रिपोर्ट में लिखा है कि भारत वर्ष में टूरिजम की जितनी संभावनाएं व्याप्त है उतनी संभावनाएं विश्व के किसी अन्य देश में नही है। आप हर तरह के पर्यटन को भारत में विकसित होना देख सकते है। पहाड़ से लेकर नदी, झरने, समुद्र आदि संसाधन प्रचुर मात्रा में है, जरूरत है तो बस इस बात की इसका दोहन कैसे किया जाए। भारत में मुख्यतः सांस्कृतिक पर्यटन है लेकिन अन्य उद्देश्यों के तहत आने वाले पर्यटक हालांकि कम है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संभाव्य पर्यटन संसाधनों पर शोध करके कई अन्य तरह के पर्यटन उत्पादों का एक खाका तैयार किया हैं जिसमें प्रसाद, स्वदेश दर्शन आदि प्रमुख है।

साधारण शब्दों में पर्यटन का अर्थ मनोरंजन है लेकिन आधुनिक परिवेश में यह एक उद्योग के तौर पर विकसित हो रहा है और इसको आर्थिक संपन्नता के स्रोत के तौर पर देखा जा रहा है। ऐसी स्थिति में पर्यटन एक अहम भूमिका अदा कर रहा है। जिसमें अंतराष्ट्रीय सैलानी हमारे देश में आकर हमारे लिए विदेशी मुद्रा छोड़ जाते है और जिनका उपयोग हम अपने लिए आधारभूत संरचनाओं के निर्माण आदि में खर्च कर रहे है। पर्यटन एक ऐसी क्रिया है जिसमें किसी स्थान पर अनिवासियों की यात्रा और उनके वहाँ ठहरने से उत्पन्न होती है। इस क्रिया में न तो व्यक्ति उस स्थान पर स्थायी रूप से बसता है और न ही धन कमाने के लिए कोई कार्य करता है। पर्यटन शब्द की उत्पत्ति अंग्रेजी के शब्द Tourism के समानार्थक शब्द 'Tour' से हुई है। 'Tour' एक लैटिन शब्द है। जिसकी उत्पति tornos शब्द से हुई है और जिसका मतलब एक उपकरण से है जो पहिए के समान गोल होता है। इस प्रकार एक पर्यटक अपने घर से निकलकर कुछ दूरी पर स्थित गंतव्य स्थल तक जाता है, कुछ समय बिताकर वह पुनः अपने घर पर लौट आता है। इस प्रकार वह अपना यात्रा चक्र पूरा कर लेता है। एक अन्य मत के अनुसार "Tour" शब्द का संबंध यहूदियों से है। क्योकि इस "Tour" शब्द की उत्पति ''हिब्रु'' से हुई है जिसका अर्थ अध्ययन है। इस अध्ययन में हम यहूदी संस्कृति, सभ्यता उनके जीवन यापन आदि के बारे में जानने की कोशिश करते है। शब्द "Torah" यहूदियों के विधान से संबंधित है और यह यहूदी रहन–सहन की परिभाषा को वर्णित करता है। उपरोक्त से यह स्पष्ट है कि जब कोई पर्यटक किसी स्थान आदि की यात्रा करता है तो उसका उद्देश्य एक मात्र घूमना ही नहीं होता है बल्कि उसे उस स्थान की ऐतिहासिकता, संस्कृति, खान–पान, रीति–रिवाजों आदि की भी जानकारी रखना आवश्यक है।

आम लोगों के लिए पर्यटन एक मनोरंजन का साधन हो सकता है लेकिन परिभाषा की दृष्टि से किसी यात्री को पर्यटक तभी कहेगे जब उसका संबंध "अर्थ" से भी है। पर्यटन एक आर्थिक क्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने कार्य स्थल पर मेहनत से कमाए हुए पैसे को एकत्रित करके उसको अपने घूमने वाली जगह पर खर्च करता है। निःसंदेह पर्यटन को एक आर्थिक क्रिया माना गया है क्योंकि किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को यह फलने–फूलने का अवसर प्रदान करती है।

पर्यटन के प्रति लोगों की भिन्न–2

अवधारणाएं है और इस कारण प्रत्येक व्यक्ति ने पर्यटन की अलग–2 परिभाषाएं दी है। कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएं इस प्रकार है :–

1. **हंजिकर एवं क्रास्ट के अनुसार**:– "पर्यटन प्रवासियों के ठहरने और भ्रमण करने से उत्पन्न होने वाले संबंधों और परिघटना का योग है बशर्ते यह ठहराव अस्थायी हो और वह (पर्यटक) किसी प्रकार की कमाई में संलिप्त न हो।"

2. **लीग आफ नेशन्स** ने 1937 में पर्यटन को परिभाषित करते हुए कहा था कि "पर्यटन एक ऐसी सामाजिक गतिविधि है जिसमें एक व्यक्ति किसी देश में अपने निर्धारित कार्यक्रम के अलावा 24 घण्टें या इससे ज्यादा ठहरता है।

3. **रोम सम्मेलन (1963) के अनुसार** – पर्यटन–यह एक ऐसी गतिविधि है कि जिसमें एक आगंतुक अपने आराम, व्यापार, परिवार, मिशन या बैठक के लिए कम से कम 24 घण्टे ठहरता है। सैर सपाटा – यह एक ऐसी गतिविधि है जिसमें एक आगन्तुक 24 घण्टे से कम कर सकता है पर इसमें यात्रा कर रहे लोगों को शामिल नहीं किया जाता।

4. **ब्रिटेन की टुअरिज्म सोसायटी के अनुसार (1976)** – "पर्यटन एक अस्थायी और लघु अवधि गतिविधि है जिसमें लोग कुछ समय के लिए अपने कार्य स्थलों, घरों, निवास स्थान से बाहर निकलकर दूसरी जगह जाते है, वहाँ रहते है और काम करते है। इन स्थानों पर रुकने के दौरान उनकी गतिविधियाँ, दिन के आगमन और सैर–सपाटे को भी शामिल किया जाता है।

5. **भारत सरकार (1970)** – एक व्यक्ति जो विदेशी पासपोर्ट पर भारत की यात्रा न्यूनतम 24 घण्टे के लिए करें लेकिन यहाँ वह 6 माह से अधिक न रुके और साथ ही यह यात्रा बिना देशान्तर वास और बिना रोजगार के हो तो इसे पर्यटन कहेगें।

उपरोक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि पर्यटक एक अस्थायी यात्रा होती है जो किसी गंतव्य स्थान पर कम से कम 24 घण्टे रुकता है और जिसके यात्रा का उद्देश्य मनोरंजन अवकाश, स्वास्थ्य लाभ, अध्ययन, धर्म व खेल–कूद आदि हो सकता है। 24 घण्टे से कम ठहरने वाले व्यक्ति को सैलानी, मनोरंजन, भ्रमणकारी अथवा यात्री आगंतुक कहा जाता है। पर्यटन के दौरान व्यक्ति का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन, ज्ञानार्जन, मौज–मस्ती आदि है। लगभग सभी परिभाषाओं में निम्नलिखित चीजें समान है :–

1. पर्यटक अस्थाई निवासी है।

2. कम से कम 24 घण्टे या इससे अधिक समय वह किसी स्थान पर व्यतीत करता है।

3. एक माह से अधिक किसी पर्यटक स्थल पर ठहरने वाले को पर्यटक नहीं कहा जा सकता।

4. यात्रा का उद्देश्य पैसा कमाना या आजीविका नहीं हो सकता।

## पर्यटन के प्रमुख परंपरागत प्रकार :-

1. **आराम और आनन्द** :– इस प्रकार के पर्यटन में पर्यटक अपने रोजमर्रा की जिंदगी

से हटकर आराम के कुछ पल किसी पर्वतीय स्थल, समुन्द्र तट आदि पर व्यतीत करता है। इसे छुट्टी या अवकाश भ्रमण भी कह सकते है।

2. **पलायन पर्यटन** :– यह भी एक तरह का पर्यटन है जसमें पर्यटक अपने कार्य स्थल के नजदीक किसी हिल स्टेशन, जंगल सफारी, थीम पार्क आदि की यात्रा पर जाता है। इस तरह का पर्यटन सप्ताहांत (शनिवार और रविवार) की छुट्टियों के दौरान होता है। अपने आप को ताजा करने के लिए, परिवार एवं मित्रों एवं सहकर्मियों को लेकर किया जाने वाला पर्यटन है। ऐसे पर्यटक जब सोमवार को आफिस जाते है तो उनके कार्य करने के तरीके में एक जोश और उमंग देखा जा सकता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने कर्मचारियों को कार्य के प्रति प्रेरित करने के लिए इस तरह का पर्यटन करवाती है।

3. **समूह पर्यटन** :– अपने परिवार के साथ और मित्रों के संग खुशी के क्षण को बिताना, नये माहौल से परिचित होना ही समूह पर्यटन कहलाता है। यह एक सामूहिक पर्यटन है, जिसमें लोग एक समूह बनाकर घूमने निकलते है और पर्यटन क्षेत्र की सुविधाओं का लाभ उठाते है।

4. **शिक्षा पर्यटन** :– इस तरह के पर्यटन में पर्यटक अपने ही देश में या विदेश में यात्रा करता है और वहाँ की संस्कृति के बारे में जानने की कोशिश करता है। ज्ञान की लालसा उसको एक जगह से दूसरी जगह घूमने की प्रेरणा देती है। शोध एवं अध्ययन के उद्देश्यों के लिए किया जाने वाला पर्यटन भी शिक्षा पर्यटन कहलाता है।

5. **विशेष रूचि पर्यटन** :– इस तरह के पर्यटन में पर्यटक अपने रूचि के अनुसार अपना गंतव्य स्थल चुनता है। जैसे चिकित्सा, इतिहास, विरासत आदि शामिल हैं।

6. **रोमांच और वन्य जीवन** :– इस तरह के पर्यटन में पर्यटक उन गंतव्य स्थलों को अपनी प्राथमिकता देता है जो रोमांच से भरे है। साहसिक खेलों जैसे राफ्टींग, रॉक क्लाइबिंग, पारासेलिंग, पाराग्लाईडिंग आदि जैसे साहसिक खेलों की तरफ लोगों का रूझान धीरे–2 बढ़ रहा है। वन्य जीवन से संबंधित स्थल जैसे राष्ट्रीय प्राणि उद्यान, वन्य जीवन अभ्यारण्य आदि पर्यटकों को वन्य जीवों की एक झलक प्रदान करते है।

7. **परंपरागत पर्यटन**:– इस प्रकार का पर्यटन प्राचीन काल से चला आ रहा है। इसमें काम के साथ आराम की परिकल्पना होती है। इस प्रकार के पर्यटन में पर्यटन स्थलों पर सम्मेलनों और बैठकों का आयोजन किया जाता है।

8. **धार्मिक पर्यटन**:– प्राचीन काल से चला आ रहा यह पर्यटन आज भी अपने उसी स्वरूप में व्याप्त है। धार्मिक यात्राओं पर जाना, आध्यात्मिक स्थलों की सैर करना आदि इस पर्यटन की खासियत है। इस प्रकार के पर्यटन का उद्देश्य धर्म लाभ, आत्मिक,

मानसिक शान्ति प्राप्त करना होता है।

9. **व्यावसायिक पर्यटन** :– इसका दूसरा नाम व्यापार पर्यटन है। इस तरह के पर्यटन में पर्यटक बैठकों, सम्मेलनों और प्रदर्शनियों में भाग लेता है। व्यावसायिक पर्यटन को प्राथमिक और माध्यमिक गतिविधियों में विभाजित किया जा सकता है। प्राथमिक पर्यटन व्यापार कार्य से संबंधित है जिसमें परामर्श, निरीक्षण और बैठकों में भाग लेने जैसी गतिविधियाँ शामिल है। माध्यमिक गतिविधियां पर्यटन से संबंधित है जिसमें भोजन, मनोरंजन, खरीददारी, पर्यटन स्थलों का भ्रमण आदि शामिल है। व्यावसायिक पर्यटन में व्यक्तिगत और छोटे समूह की यात्राा शामिल हो सकती है। गतंव्य स्थलों पर होने वाले सम्मेलनों, व्यापार मेलों और प्रदर्शनियों सहित बड़ी बैठकों में शामिल हो सकते है।

## आधुनिक काल में पर्यटन के क्षेत्र में उभरती नई प्रवृत्तियां:-

देखा जाये तो भारत में हर तरह के पर्यटन संसाधन विद्यमान है जो पर्यटकों को अपनी तरफ लुभाते है। परिणाम स्वरूप लगभग हर तरह के पर्यटक विश्व के हर कोने से भारत आते है। इन उपलब्ध पर्यटन संसाधनों में से कुछ ऐसे पर्यटन संसाधन है जिनमें पर्यटकों को लुभाने की अपार क्षमता है और जिनका संवर्धन आवश्यक है। इस तरह की क्षमता वाले पर्यटक उत्पादों को हम पर्यटन की भाषा में उभरती हुई प्रवृत्तियां कहते है। इन उभरती हुई प्रवृत्तियों में से प्रमुख प्रवृत्तियों का वर्णन इस प्रकार है :–

1. **मेडिकल टूरिज्म** : मेडिकल टूरिज्म का अर्थ है ऐसा पर्यटन जिसमें पर्यटक चिकित्सा उपचार के लिए अपने देश के बाहर किसी अन्य देश में जाना चाहता है जहाँ कम खर्च एवं कम समय में ही उसका उपचार हो सके। मेडिकल टूरिज्म के भी कई आयाम है जैसे कि सर्जरी, दंत, मनोचिकित्सा, स्वास्थ्य देखभाल, यहाँ तक की दफन सेवाएं भी शामिल है। मेडिकल टूरिज्म एक व्यापक शब्द है जिसका प्रयोग हम प्रायः चिकित्सा उपचार और स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं के लिए करते है। इसमें स्वास्थोन्मुखी, निवारक और स्वास्थ्य प्रवाहकीय उपचारों से लेकर पुनर्वास तक जैसे विस्तृत क्षेत्र को शामिल किया गया है। अगर हम चिकित्सा यात्रा के प्रमुख कारणों पर प्रकाश डालते है तो पता चलता है कि स्वास्थ्य सेवाओं में उच्च लागत, कुछ शल्य प्रक्रियाओं के लिए लंबा इतंजार का समय, आसानी से होने वाली अंतराष्ट्रीय यात्रा एवं सामर्थ्य और साथ ही साथ देखभाल एवं देखभाल के मानकों में सुधार को माना गया है। भारत उच्च स्तर की अत्याधुनिक चिकित्सा सेवाएं अंतराष्ट्रीय बाजार के मुकाबले काफी कम मूल्य पर उपलब्ध कराने वाला गंतव्य स्थल बन चुका है। जिस कारण आज दुनिया भर से लोग विभिन्न प्रकार की चिकित्सा सुविधाएं प्राप्त करने के लिए ही भारत आने लगे है। इस संदर्भ में आने वाले यात्रियों को अब चिकित्सा पर्यटन के अंतर्गत रखा जाने लगा है।

2. **साहसिक पर्यटन**:– साहसिक पर्यटन का अर्थ है ऐसा पर्यटन जिसमें रोमांच की

अनूभूति हो। इस तरह के पर्यटन में पर्यटक जोखिम का अनुभव करता है तथा साथ ही साथ अपने को संकट जनक परिस्थितियों में डालता है। पर्वतारोहण अभियान, ट्रैकिंग, बंजी जंपिंग, रिवर राफ्टिंग, राक क्लाईबिंग, अक्सर साहसिक पर्यटन के रूप में शुमार किये जाते है। साहसिक पर्यटन के दो प्रकार है :–

क. हार्ड एडवेंचर टूरिज्म जिसमें जोखिम और जान का खतरा ज्यादा होता है। इस पर्यटन को करने के लिए कुशलता और ट्रेंनिग की आवश्यकता है।

ख. सॉफ्ट एडवेंचर टूरिज्म जिसको करने के लिए कोई बहुत कुशलता की जरूरत नहीं पड़ती और न ही किसी खास किस्म की ट्रेंनिग की जरूरत है।

3. **ग्रामीण पर्यटन** :– इस तरह के पर्यटन का प्रचलन शहर से सटे हुए इलाकों में शुरु किया जा रहा है। यह एक तरह का बनावटी एवं संरक्षित क्षेत्र होता है जिसमें गाँव के वातावरण की व्याख्या की गई है जैसे कि पशुओं के साथ क्रिया कलाप, कुएं/ट्यूबवेल के पानी में नहाना, चूल्हे की रोटी एवं इसके बनाने की प्रक्रिया, दूध से बनने वाले ग्रामीण उत्पाद आदि प्रमुख है। इसके अलावा ग्रामीण परिवेश के पहनावे, हाथ से बनने वाली हस्तशिल्प आदि का प्रदर्शन भी उल्लेखनीय है।

4. **गोल्फ पर्यटन** :– विशेष रूप से 2010 में राष्ट्रमंडल खेलों के सफल आयोजन के बाद भारत में खेल पर्यटन के प्रति लोगों का रुझान बढ़ा है। गोल्फ पर्यटन के नवीनतम रुझानों से पता चलता है कि दुनिया भर में, युवाओं के बीच इस खेल को लेकर जागरूकता बढ़ी है। भारत में अंतराष्ट्रीय मानकों के कई गोल्फ कोर्स है। इसके अलावा, भारत में आयोजित गोल्फ आयोजन भी घरेलू और अंतराष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करते है। अगले कुछ वर्षों में अंतराष्ट्रीय पर्यटको के साथ ही साथ आंगतुकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए भारत गोल्फ पर्यटन के क्षेत्र में कटिबद्ध है। गोल्फ पर्यटन में इस बढ़ती हुई रूचि को टैप करने के लिए पर्यटन मंत्रालय भारत में गोल्फ पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक और समन्वित ढाँचा तैयार कर रहा है।

5. **दुस्साहसी पर्यटन** :– इसे अक्सर सदमा पर्यटन के रूप में जाना जाता है। यह एक पर्यटन उद्योग में आला है जिसमें पर्यटक खतरनाक स्थानों जैसे पहाड़ों, जंगलो, रेगिस्तान, गुफाओं, घाटियों आदि की यात्रा पर जाता है या फिर खतरनाक आयोजनों में भाग लेता है। चरम पर्यटन, चरम खेल के साथ ओवरलैप करते है। ये दोनों

'एड्रेनालाइन रश' जो की चरम पर्यटन का मुख्य आकर्षण और हिस्सा है। हालांकि पारंपरिक पर्यटन के लिए होटल, सड़क आदि में महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता होती है लेकिन चरम पर्यटन के व्यवसाय को शुरू करने के लिए बहुत कम पूँजी निवेश की आवश्यकता होती है। चरम पर्यटन से संबंधित दुनिया के कुछ प्रसिद्ध आकर्षण चेरनोबिल टूर्स, यूक्रेन, व्हाइट सागर में बर्फ डाइविंग, चीन में माउंट हुआ पर प्लानिंग से चलना, मेक्सिको स्थित निगल की गुफा आदि है।

6. **सतत पर्यटन** :– सतत पर्यटन एक अवधारण ।ा है जिसमें पर्यटक एक स्थान पर जाता है और पर्यावरण, समाज, और अर्थव्यवस्था पर केवल सकारात्मक प्रभाव डालने की कोशिश करता है। इस तरह का पर्यटन सामान्य स्थान, स्थानीय परिवहन, आवास, मनोरंजन, पोषण और खरीददारी को शामिल कर सकता है। इस तरह का अवकाश, व्यवसाय, वीएफआर (दोस्तों और रिश्तेदारों का दौरा) की यात्रा संबंधित हो सकता है। अब व्यापक सहमति है कि पर्यटन विकास स्थायी होना चाहिए। हालांकि यह कैसे प्राप्त होगा एक बहस का मुद्दा है। बिना यात्रा के कोई पर्यटन नहीं हैं, इसलिए टिकाऊ पर्यटन की अवधारणा टिकाऊ गतिशीलता की अवधारणा से जुड़ा हुआ है।

7. **कैम्पिग पर्यटन** : यह एक आउटडोर गतिविधि है जिसमें पर्यटक रात भर अपने घर से दूर एक आश्रय में रहता है जैसे कि तंबू, एक कैरेवेन या एक मोटर होम। आम तौर पर इस तरह के पर्यटन में प्रतिभागी विकसित क्षेत्र को छोड़कर अपने घर से बाहर प्रकृति के गोद में समय व्यतीत करता है और इस तरह की गतिविधियों में उसे आनंद की प्राप्ति होती है। माना जाता है कि कैम्पिग के लिए कम से कम एक रात घर से बाहर बिताया जाये। इसे दिन की पिकनिक या अन्य इसी तरह की अल्पकालिक मनोरंजक गतिविधियों से अलग माना जाना चाहिए।

8. **विशेष रुचि पर्यटन** :– विशेष रुचि पर्यटन को अनुकूलित अवकाश और व्यक्तिगत और समूह के विशिष्ट व्यक्त हितों द्वारा चलित मनोरंजन अनुभवों के प्रावधान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। विशेष रूचि पर्यटन में विभिन्न विशेष रूचि के यात्रा प्रकार शामिल है और जिन्हें आला बाजार (Niche Market) के तौर पर जाना जाता है। समय के अनुसार इस तरह के आला बाजार (Niche Market) की लोकप्रियता पर्यटन उद्योग और उद्यमी दोनों के बीच बढ़ती चली गयी।

उपरोक्त से यह स्पष्ट है कि पर्यटकों को घर से बाहर निकलने का मौका मिलना चाहिए वजह चाहे जो भी हो वे इसके लिए अपना गतंव्य स्थल, खर्च करने के लिए पैसे और समय की पहचान खुद से करते है। यह भी स्पष्ट है कि पर्यटन के प्रकार भी पर्यटकों की इच्छा के अनुसार ही विकसित किये जाने की आवश्यकता है।

एक कहानी

# कसक

–माम चंद सागर

उसने मोहब्बत की राह में, मन की हसरत को कभी होठों पर नहीं आने दिया और इस न कह पाने की त्रासदी को उसने कई वर्षों तक भोगा। यह सच है कि उसने संघप्रिया को अपने अन्तर्मन में बसा लिया था। तन्हा–सा रहता और आँखों में लपट लिए सोचता..... ''यह मुझे क्या हो गया है, कि मैं हमेशा उसके खयालों में ही खोया रहता हूँ। किसी के ध्यान में डूबे रहना.. .. यह कैसी विवशता है? मैं क्यूँ उसके कफ़स में कैद हो गया हूँ''...... और इस तरह वह मोहब्बत के पांवों के नीचे कारण की जमीन तलाशता और नाकाम होकर रह जाता।

संघप्रिया की आंखों में प्यार का तूफान भरा था। वह भी चाहती थी कि इस तूफान को शब्दों की मुट्ठी में बाँधकर उसे सौंप दे। लेकिन शब्दों की यह मुट्ठी उसे कभी नसीब नहीं हो सकी। जब–जब नीलाभ की आंखों से उसकी निगाहें टकरातीं, वह रोमांचित हो उठती। यूँ तो यह प्रक्रिया क्षण–भर की होती लेकिन देर तक दोनों की रूहों को विचलित कर जाती। मस्तिष्क के चिंतन और मन के स्पंदन के मध्य मोहब्बत उम्र का झूला झूलने लगी।

सड़क के एक ओर सरसों के पीले फूलों से खेत पटे पड़े थे तो दूसरी ओर बनती गगनचुंबी इमारतें गगन को चूमना चाहती थीं। जब कोई हवा का तेज झोंका आता तो नीलाभ के ख़यालों का गुच्छा भी संघप्रिया की नाक से, कानों से टकराकर निकल जाता। उस वक्त वह पूरी की पूरी महक उठती। उसे आभास होता कि प्रकृति का नैसर्गिक सौंदर्य कितना अभिभूत करता है। यह क्षण उसके खयालों की खुशबू से महके होते और वह अपने पिता के साथ चलते हुए भी नीलाभ के साथ चल रही होती। ऐसा अक्सर हर शाम को होता। पिता को शाम को टहलने की आदत थी। वे इन इमारतों को बड़े गौर से देखते और सोचते. ..प्राइवेट बिल्डिंग कितनी तेजी से तैयार हो जाती हैं और सरकारी इमारतें वर्षों अधूरी पड़ी रहती हैं, जबकि संघप्रिया पीले फूलों के कारवाँ से गुजरते हुए नीलाभ की साँसों की धड़कनें गिन रही होती।

संघप्रिया में अनोखा परिवर्तन आ गया था। वह सभी कार्य विशेष रुचि के साथ करने लगी थी। उसका हर कदम चाव से भरा होता। होठों पर सदा मुस्कान तैरती रहती। आँखों में फुलझड़ियाँ–सी चमकती थीं। उसे अब एकांत अच्छा लगने लगा था और न जाने किन सपनों में खोई–खोई सी रहने लगी थी।

एक दिन उसकी बचपन की प्रिय सहेली सुनयना बहुत दिनों बाद बाजार में मिल गई और मिलते ही हैरान–सी चहकते हुए बोली, ''अरे मेरी ईद की चाँद..... कहाँ रहने लगी हो। कुछ अता–पता ही नहीं तुम्हारा तो। कई बार सोचती थी तुमसे मिलूँ, तुम न जाने कौन–सी दुनिया में रहती हो। आते–जाते कभी दिखती ही नहीं हो। क्या चुपके–चुपके कुछ कर लिया है?'' संघप्रिया ने एक ही साँस में सारे सवाल सुनयना के सामने उंडेल दिए थे। सुनयना संघप्रिया की घनिष्टतम सहेलियों में से एक थी। वह उससे

* बिक्री पर्यवेक्षक, भारत पर्यटन विकास निगम लिमिटेड, नई दिल्ली

मिलकर बहुत खुश हुई। दोनों पास के एक रेस्तरान में आकर बैठ गईं। बातों का सिलसिला शुरू हुआ और बात पर बात निकलने लगी थी। लेकिन असल बात अब भी मन में दबी हुई थी। चाय के प्याले के साथ संघप्रिया ने कुछ झिझकते हुए अपने मन की बात शुरू की......''सुनयना, मैं तुमसे कई दिनों से मिलने की सोच रही थी, ...बात दरअसल यह है कि मैं अपने ऑफिस मे कार्य करने वाले एक लड़के के प्रति आकर्षित हो गई हूँ। जाने क्या है उसकी निगाहों में ...मुझे लगता है कि उसकी आँखें भी मेरे प्रति प्यार की गहरी अभिव्यक्ति प्रकट करती हैं। कभी–कभी तो मुझे भ्रम होता है कि कहीं यह मेरे मन की कल्पना तो नहीं। लेकिन मेरा मन नहीं मानता। मुझे लगता है कि वह अपने प्यार का इजहार नहीं कर पा रहा है। हो सकता है, मुझसे डरता हो। उसका निश्छलता और पर्सनैलिटी मुझे बरबस ही खींचते हैं।'' सुनैना उसकी बातों को बड़ी गंभीरता से सुन रही थी। गंभीरता को छिपाते हुए मुस्कुराकर बोली,

.....शादी करोगी उससे ?

......हां, मगर एक उलझन है !

......क्या ?

.....उसने अभी तक मुझे प्रोपोज नहीं किया है। मैं जानती हूँ कि वह भी मेरी ओर आकर्षित है और यही मेरे प्रेम के विश्वास का आधार है। अब इसे तुम मेरे मन की कल्पना मानो या सच्चा प्रेम।

चाय पी जा चुकी थी। संघप्रिया ने एक चाय और बनाते हुए अपनी बात आगे बढ़ाई.....

..एक उलझन और है!

...क्या? .....वह उम्र में मुझसे कुछ छोटा है शायद उसके पास अच्छा घर भी नहीं है और...

..और क्या

...सबसे बड़ी अड़चन यह है कि वह दलित है। पिताजी को तो तुम जानती ही हो... वह तो इन सारी कमियों को बिल्कुल स्वीकार नहीं करेंगे। तुम्हारा क्या ख्याल है?

..संघप्रिया, ख़याल तुम्हारे प्यार की तरह सच्चा है। लेकिन दोनों की सच्चाई में 36 का आंकड़ा लगता है, दोनों के मुँह विलोम दिशा में है। यार, तुम दोनों एक दूसरे की हकीकत को देख नहीं पा रहे हैं। मेरे ख़याल में यथार्थ की उपजाऊ मिट्टी से कल्पना के फूल आएं तो ज्यादा आकर्षक होंगे.....ज्यादा महकदार होंगे। ज़िंदगी प्यार के दो–चार पल नहीं होती, वह बड़ी लंबी होती है, जहाँ हमें बंजर और कंकरीली जमीन को भी तय करना होता है। अगर हम फूलों पर चलने के आदि हों तो वहाँ हमारे पाँव लहूलुहान ही होंगे। हमारे साथी इस ज़िंदगी के सफर मे बहुत आगे निकल जाएंगे...... और हम अपने लहूलुहान पैरों को देखकर लज्जित ही होंगे। ज़िंदगी जिल्लत बनकर रह जाती है। इसलिए मैं तो सोचती हूं कि जो व्यक्ति अपना स्टेटस बनाकर नहीं रख सकता, जिसके पास न अच्छा घर नहीं है, नौकरी भी स्टेटस वाली नहीं है .... वह तुम्हारा निर्वाह कैसे करेगा, ख़ासतौर पर दलित परिवार से संबंध रखते हुए उसकी सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों मे तुम कैसे अपने आपको ढाल पाओगी। इस समाज में आज भी जातीयता की जड़ें कितनी गहरी हैं, तुम नहीं जानती, लोग तानों से बींध डालेंगे। तुम समझ रही हो ना .... मैं क्या कहना चाह रही हूँ। तुम आधुनिक समाज की शिक्षित और अभिजात युवती हो, किताबों की फिल्मी दुनिया का रूमानी सफर तुम्हारे लिए नहीं है। मुझे देख रही हो.....तुमने आज तक नहीं पूछा कि मैनें विवाह क्यों नहीं किया? मेरे साथ भी ऐसी ही घटना हुई थी। वह लड़का भी दूसरी जाति का था। मेरे घर परिवार में इसका विरोध हुआ पर मैं उसे

नहीं भुला सकी। घर–समाज से टकराने की हिम्मत नहीं कर पाई और...बस बाद में सोचते सोचते उम्र ढलने लगी। आज मैं 35 की हूं अब शादी के बारे में सोचने को मन ही नहीं करता। अच्छा कमाती हूं. .. आज भी मम्मी पापा के साथ रहती हूं और अपनी जिंदगी से खुश हूं। इसलिए मेरी मानो या तो हिम्मत करो और पापा से बगावत करो पर इससे पहले एक दिन उससे खुलकर बात कर लो और नहीं तो समाज के व्यावहारिक सच को जियो। अगर नहीं कर सकती तो उस लड़के के प्रति तुम्हारा उदासीन रुख ही इस आकर्षण के प्रेम से मुक्ति दिला सकता है। तुम्हारी उदासीनता से वह स्वयं समझ जाएगा कि तुम उसके लिए दूर की कौड़ी हो।

सुनयना के एक–एक वाक्य का सच संघप्रिया को तलवार की धार की तरह नंगा और बेरहम लग रहा था। उसे लगा कि वह भूख की सताई हुई, कई दिनों से एक काल–कोठरी में बंद है और एक सिपाही आकर समाज के सच की थाली उसके सामने रखकर चला गया है, जिसे खाकर ही वह जिंदा रह पाएगी।

संघप्रिया को ढांढस बंधाते हुए सुनयना चली गई। संघप्रिया उदास हो गई, इस उदासी में चिड़चिड़ापन समाहित हो गया था। वह अपने को संयत रख पाने में कठिनाई महसूस कर रही थी। यह सच है, सुनयना के सुझाव में दुनियादारी का कायदा था और कायदे का एक–एक हर्फ संघप्रिया को चिड़ा रहा था। लेकिन अभी भी एक सच संघप्रिया के जहन में कुलबुला रहा था....'' क्या धन और उच्च जाति के बिना मनुष्य का स्वतंत्र अस्तित्व कुछ नहीं है ? साधारण मनुष्य साधारण जीवन यापन करता है, क्या उसे प्रेम की अनुमति नहीं, क्या वह केवल वर्ग, जाति देखकर ही प्रेम करे..... और फिर यह भी तो आवश्यक नहीं कि जो आज आम है ..कल खास नहीं हो सकता। संवेदना, प्रेम, विश्वास और आदर्श क्या किताबों का ही सच होता है, क्या इसे व्यवहार में नहीं भोगा जा सकता। क्या नीलाभ उसकी किस्मत में सिर्फ इसलिए नहीं आ सकता क्योंकि उसके पास स्टेटस की नौकरी नहीं है और वह दलित है। हाय री दुनिया, हाय री किस्मत...... प्यार का फूल खिला भी तो कहाँ?'

संघप्रिया धीरे–धीरे नीलाभ के विचार को मन से निकालने लगी। उसे लगता कि स्वाभाविक संघप्रिया का अंत हो रहा है, और एक कृत्रिम संघप्रिया जन्म ले रही है। संघप्रिया ने अपना मन किताबों में रमा दिया। कुछ रिश्ते आए पर उसे जमे नहीं और ...ज़िंदगी की कशमकश में दिन बीते.... फिर साल।

हिमाचल बहुत खूबसूरत प्रदेश है, यहाँ की धरती के पग–पग पर स्वर्ग–सी सुंदरता फैली हुई है .....इसी सुंदरता को देखने एवं ज़िंदगी की बोरियत को कुछ कम करने के लिए अपने मम्मी पापा के साथ संघप्रिया करीब दो साल बाद यहाँ घूमने के इरादे से आई है। होटल की लॉबी में बैठे थे कि संघप्रिया की नजर अनायास ही एक अति सुन्दर जोड़े की ओर चली गई साथ में दो बच्चियां भी थीं। अधिकतर लोग उन्हें ही देख रहे हैं और वह लोग अपनी प्रेम–भरी चुहल में बच्चियों के साथ खेलने में मस्त थे। युवती की आँखों के सुरमे में शाम का रंग जज़्ब था। सुरमई आंखों के लाल डोरे सांझ के सूरज से नजर मिला रहे थे। इस मद–भरी सांझ की बेला में धरती के हरित आंचल पर मानो आसमान से दो सितारे आकर बैठ गए हों। मोरनी–सी गर्दन पर दूधिया सुंदर चेहरा आधा लटों से ढका था..... उसे आभास हुआ कि उस युवती को कहीं देखा है। उसने थोड़ा पहचानने की कोशिश की, अरे यह तो उसकी दूर के मामा की लड़की स्नेहा थी... ...शायद वह उसे पुकारने ही लगी थी कि उसका ध्यान उसके पति के चेहरे पर चला गया......वह भी कहीं देखा हुआ लगा ..... अपनी जानकारी को पुख्ता करने

कविता

# पड़ोसी

... सुशांत सुप्रिय

मेरे घर के
ठीक बगल में हैं उनके घर
पर नहीं जानता मैं उनके बारे में
ज़्यादा कुछ

उनकी हँसी.खुशी
उनकी रुदन.उदासी की डोरी से
नहीं बँधा हूँ मैं

मेरी कहानियों के पात्र
वे नहीं हैं
उनके गीतों की लय.तान
मैं नहीं हूँ

एक खाई है
जो पाटी नहीं गई मुझसे
एक सफ़र है
जिसे हम अकेले ही
तय करते हैं

आते–जाते हुए अकसर हम
एक.दूसरे की ओर
केवल परस्पर अभिवादन के
काग़ज़ी हवाई जहाज़
उड़ा देते हैं

मिलना तो ऐसे चाहिए मुझे उनसे
जैसे चीनी घुल.मिल जाती है पानी में
पर महानगर की
मुखौटों वाली जीवन–शैली
पहाड़ बन सामने खड़ी हो जाती है

मुखौटों वाली इसी जीवन.शैली से है
मेरी पहली लड़ाई
बाक़ी के युद्ध तो
मैं बाद में लड़ लूँगा

प्रेषकः सुशांत सुप्रिय
I–5001, गौड़ ग्रीन सिटी,
वैभव खंड, इंदिरापुरम

के लिए वह उनके और नजदीक चली आई देखा तो नीलाभ ही था। स्नेहा ने उसे पहचान लिया और हाथ मिलाया और नीलाभ का परिचय देते हुए कह, ''मेरे पति निलाभ, पंजाब में डिप्टी कलैक्टर हैं, मेरी बेटियां.... कह कर उसने बच्चियों को बुलाया देखों आपकी मौसी जी नमस्ते करो। नीलाभ ने भी हाथ जोड़कर कहा मैडमजी नमस्ते.....शायद उसने पहचान लिया था। 'अरे अंकल आंटी भी हैं', कह कर स्नेहा लॉबी में बैठे मेरे मम्मी पापा के पास जा बैठी।

संघप्रिया यह सब सहन नहीं हो रहा था वह वहाँ से तुरंत दबे पाँव चली आई, सोचने........लगी देश की शीर्ष परीक्षा पास करके एक बड़ा अधिकारी बन गया था और यहां अपनी विजातीय पत्नी को घुमाने लेकर आया था। एक कसक... तूफान की मानिंद उठी...... जिसे उसने मनके सात तालों के भीतर हमेशा के लिए दफना दिया। होटल के कमरे में आकर फूट– फूटकर रोई, लेकिन यहाँ उसके रुदन को सुनने वाला उसके सिवाय कोई नहीं था।

आतिथ्य शिक्षा

## भाषा, शिक्षा और रोज़गार

# बदले आतिथ्य शिक्षा का चेहरा!

—कृष्ण गोपाल दुबे

आज के प्रगतिशील भारत के सभी नेता या अभिनेता जहां भी भाषण देते हैं, उनकी यही कोशिश रहती है कि उनके विचार जनमानस के समझ में आ जाएं। इसके लिए वह, कुछ अपवादों को छोड़कर, हिंदी भाषा का दिल खोल कर प्रयोग करते हैं। इन अपवादों में भी अधिकतर अंग्रेज़ी का प्रयोग नहीं करते है। कई वैज्ञानिक शोधों से पता चलता है कि छात्र किसी भी तरह की उच्च शिक्षा को अपनी मातृ भाषा में आसानी से समझ लेते हैं, बजाय अंग्रेज़ी के। शिक्षा और भाषा का वही सम्बन्ध है जो हाथ और दस्ताने का है। दोनों में सामंजस्य होना ही चाहिये। वस्तुतः शिक्षा के अन्तर्गत ही भाषा है।

हम सब जानते हैं कि आज भी देश के 65% लोग गाँवों में रहते हैं और वहाँ की शिक्षा मूलतः हिंदी में अथवा उनकी है मातृ भाषा में ही दी जाती है। पर्यटन और आतिथ्य सेवा में होटल प्रबंध संस्थान (IHM) और खाद्य शिल्प संस्थान (FCI) इस देश का सबसे बड़ा रोज़गार सृज़न का स्रोत है जहां पर छात्र, किसी भी प्रतिशत में, बारहवीं उतीर्ण करने के बाद दाखिला ले सकते हैं। विडम्बना यह है कि यहाँ के सभी विषय अंग्रेज़ी भाषा में पढ़ाये जाते हैं जो कि अधिकाँश छात्रों के लिए बहुत कठिन हो जाता है और उन्हें पाठ्यक्रम पहाड़ के बोझ समान लगने लगता है। फिर हम कैसे आशा कर सकते हैं कि 35–50% वाले छात्रों को अच्छी अंग्रेज़ी आती होगी। इस सच्चाई को झुठलाया नहीं जा सकता कि कई छात्र तो अपना नाम भी अंग्रेज़ी में शुद्धता से नहीं लिख पाते हैं। ज्यादातर युवक इसी कारण होटल प्रबंधन की पढ़ाई करने से कतराते/ बिमुख होते हैं और जो किसी कारण दाखिला ले भी लेते हैं उनको अंग्रेज़ी नामक विशाल जोखिम पहाड़ का सामना करना पड़ता है और इस प्रकार उनमें नीरसता और कुंठा का भाव उत्पन्न हो जाता है। कुछ विद्यार्थी तकनीकी और व्यावहारिक रूप से बहुत योग्य होते हैं और प्रयोगात्मक परीक्षा में अव्वल होते हैं। उनका प्रयोगिक ज्ञान भी असाधारण होता है लेकिन सैद्धांतिक परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते क्योंकि वे अंग्रेजी में अपने ज्ञान को व्यक्त नहीं कर पाते, जिसके कारण उन्हें या तो कम अंक मिलते हैं या फिर अनुत्तीर्ण हो जाते हैं। उनमें से कई मजबूरी में कोर्स छोड़कर गुमनामी में खो जाते हैं। इन्हीं सब कारणों से कई संस्थानों में समुचित विद्यार्थियों की भर्ती नहीं हो पाती और सीटें खाली रह जाती हैं।

देश में सबसे अधिक संख्या मध्य श्रेणी के होटलों की है और इनमें पेशेवर कर्मचारियों की कमी रहती है। दूसरी ओर हम एक उत्कृष्ट कार्यबल खो देते हैं, वह भी इसलिए कि उन्हें अच्छी अंग्रेज़ी नहीं आती। इस प्रकार से प्रति वर्ष हजारों की तादाद में युवा बेरोजगार रह जाते हैं और उनकी जिन्दगी अंधकारमय हो जाती है।

* 'प्राचार्य, खाद्य शिल्प संस्थान, जबलपुर

*भारत में अंग्रेज़ों का वर्चस्व होने के पहले तक भारत के आम नागरिक दैनिक कार्यों में स्थानीय भाषाओं का इस्तेमाल करते थे। उच्च शिक्षा, शास्त्रीय चर्चा जैसे कार्यों के लिए संस्कृत का व्यवहार करते थे। मुगलों के सम्पर्क में आने के बाद कुछ सरकारी कार्यों के लिए फ़ारसी का प्रयोग भी होने लगा था। अँग्रेज़ों ने सत्ता हथियाने पर पहले तो हिन्दी–उर्दू मिश्रित भाषा में सरकारी कामकाज किया। परन्तु बाद में अँग्रेज़ी को सरकारी कामकाज की भाषा बनाया ताकि वह सारा काम उनकी ही देख–रेख में हो सके। इस काम के लिए उन्हें अँग्रेज़ी के भी जानकार भारतीयों की जरूरत थी। इसके लिए उन्होने अँग्रेज़ी शिक्षा की बुनियाद डाली और शिक्षा का माध्यम अँग्रेज़ी कर दिया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कई मंचों पर इस बारे में चिंतन–मनन किया गया। लेकिन एक विशेष लॉबी के दबाव में शिक्षा के माध्यम की भाषा एक बड़ी समस्या बनी रही है और इस अनसुलझी समस्या ने शिक्षा के स्तर को एकदम निम्न स्थिति में पंहुचा दिया है।*

World Economic Forum (WEF) के अनुसार पर्यटन और अतिथि सेवा के क्षेत्र में स्पेन, फ्रांस, जर्मनी, जापान, चीन, इटली, सिंगापुर, पुर्तगाल, कोरिया, इज़राइल आदि हमसे ज्यादा उन्नत और उच्च पायदान पर हैं क्योंकि वहाँ पर इसकी शिक्षा उनके अपनी भाषा में दी जाती है– तब यह फिर हमारे देश में क्यों नहीं? यह सर्व विदित है कि हिंदी विश्व की सबसे ज्यादा लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं में दूसरे स्थान पर है।

आज हिंदी माध्यम/भाषा में शिक्षा देने हेतु बहुत सी बाधाएं बताई जाती है, जैसे–

1. हिंदी में पाठ्य पुस्तकों और शिक्षण सामग्रियों का न होना,
2. शिक्षकों को हिंदी की समुचित जानकारी न होना,
3. हिंदी में मूल्यांकनकर्ताओं की कमी,
4. गैर हिंदी भाषी प्रान्तों में नौकरी न मिलना या वहाँ के लिए अनुकूलनीय न होना,
5. विदेशों में नौकरी न मिलना।

पर सब क्षणिक हैं, हम शुरू तो कर ही सकते हैं:

1. धीरे–धीरे हिंदी में पाठ्य पुस्तकों का प्रचलन, भारतीय लेखकों को प्रोत्साहित करना, भारतीय लेखकों द्वारा अन्य भाषाओं में लिखित पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद कराना आदि। "आभातशिप" (AICTE) द्वारा वर्ष 2013 से हिंदी भाषा में सभी प्रबंधन की पुस्तिकाओं का अनुवाद या लेखन में कार्य किया जा रहा है– इसे समय समय पर सरकारी प्रोत्साहन की ज़रुरत है।
2. सभी संस्थाएं छात्रों को विषय अनुसार अंग्रेज़ी के साथ–साथ हिंगलिश (अंग्रेज़ी और हिंदी का मिश्रण) में पढ़ाएं– जो कि अधिकतर संस्थाओं में हो भी रहा है। आई.एच.एम और खाद्य शिल्प संस्थानों में कक्षाओं में 80% हिंदी क्षेत्र के छात्रों का ही बोलबाला है।
3. यदि उत्तर–पुस्तिकाएं हिंगलिश में होंगी तब मूल्यांकनकर्ता को मूल्यांकन करने में कोई असुविधा नहीं होगी। समय के साथ वो भी

सीख जायेंगे (इसका अर्थ यह हुआ कि हिंदी की शब्दावली का लाभ दोनों पक्षों को मिलेगा)।

4. हिंगलिश में शिक्षा लेने पर गैर–हिंदी प्रांत में रोज़गार पर कोई विशेष असर नहीं होगा। कुछ विशेष कार्य क्षेत्र के लिए शुद्ध अंग्रेज़ी की ज़रुरत पड़ सकती है जो अलग से 3–4 महीने में सीखा जा सकता।

5. विदेशों में नौकरी करने वाले अधिकांश लोगों को भी इस मिश्रित भाषा से कोई परेशानी नहीं होगी।

6. होटल प्रबंधन, खासकर खाद्य शिल्प संस्थानों में निम्न श्रेणी के हिंदी भाषी क्षेत्रों के युवाओं को आकर्षित करनें के लिए हिंगलिश में पठन पाठन पर जोर देना होगा, जिससे कि ग्रामीण/ जनजातीय युवकों को रोज़गार मिल सके।

7. देश के कुछ राज्यों की लगभग आधी आबादी अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति एवं पिछड़े वर्गों की आबादी है जो कि अत्यंत पिछड़े हुए वर्ग है। इन इलाकों में पर्यटन गतिविधियाँ बहुत है तथा पर्यटन की और संभावनाएं तलाशी जा रही हैं। लेकिन भाषाई बंधनों के कारण स्थानीय युवापीढ़ी को इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है जिस वजह से इनका उत्थान नहीं हो पा रहा है।

पिछले दिनों संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट में दो बाते सामने आई थी :

1. विकासशील देशों में अधिकांश बच्चे स्कूल जाने से कतराते है क्योंकि उनकी शिक्षा का माध्यम वह भाषा नहीं है, जो भाषा उनके घर में बोली जाती है।

2 संयुक्त राष्ट्र संघ के बाल अधिकारों के घोषणा पत्र में भी यह कहा गया है कि बच्चों को उसी भाषा में शिक्षा प्रदान की जाए जिस भाषा का प्रयोग उसके माता–पिता, दादा–दादी, भाई–बहन एवं सारे पारिवारिक सदस्य करते हों।

अनुसंधानों के अनुसार हमारी पठनगति मातृभाषा में अधिकाधिक होती है क्योंकि उसके सारे शब्द परिचित होते हैं। अन्य माध्यम से पढ़ने वाले विद्यार्थी को दो भाषाओं का बोझ उठाना पड़ता है। परिणामतः बच्चे दोनों भाषाओ के साथ न्याय नहीं कर पाते और उनकी पठन क्षमता क्रमशः कम होती जाती है। इसकी ''न्यूरोलॉजिकल थियरी ऑफ लर्निंग'' द्वारा पुष्टि की गई है और वैश्विक स्तर पर इसे पूरी दुनिया में स्वीकार किया गया है।

भारत सरकार ने चहुँमुखी विकास के पांच स्तंभों में से पर्यटन और अथिति उद्योग को एक प्रमुख स्तंभ माना है और इस स्तंभ को तभी मजबूती मिल सकती है जब इसके प्रत्येक घटकों को सुव्यवस्थित कर अनुकूल माहौल बनाया जाय।

आज इस विषय पर गंभीरता से विचार किए जाने की आवश्यकता है ताकि इस तरह के रोज़गार परक कोर्स सभी वर्ग के नवयुवकों/नवयुवतियों तक पहुँच सके और वे उसका फ़ायदा उठा सकें और राष्ट्र की उन्नति तेज़ी से हो सके।

एडवेंचर और
आध्यात्मिक पर्यटन

# नवनंदुलु से नवनरसिंहम्

–मोहन सिंह

नल्लमाला पहाड़ियों के पूर्व में स्थित, घने वनों से घिरा हुआ महानंदी एक सुरम्य गांव है। यहां का मुख्य मंदिर, महानंदीश्वर मंदिर है और इस गांव की 15 किलोमीटर की परिधि में यहां शिव के वाहन के प्रतीक नौ नंदी बनाए गए हैं। इसलिए इस क्षेत्र को 'नवनंदुलु' या 'नवनंदी' के नाम से भी जाना जाता है। यहां विभिन्न स्थानों पर बने नंदी मंदिरों में महानंदी, शिवनंदी, विनायकनंदी, सोमनंदी, प्रथमानंदी, गरुड़ानंदी, सूर्यनंदी, कृष्णानंदी और नागनंदी स्थापित किए गए हैं। आजकल कुछ भक्तगण महानंदीश्वर मंदिर से आरंभ कर इनकी एकसाथ ही परिक्रमा भी करने लगे हैं। निकट ही साक्षी गणपति का मंदिर है। नवनंदी की परिक्रमा से पहले यहां आशीर्वाद प्राप्त करना महत्वपूर्ण माना जाता है।

**प्रथम नंदी** – यात्रा के अनुक्रम में पहला नंदी मंदिर है। इस मंदिर में केदारेश्वरी देवी प्रथम नंदीश्वर की पत्नी हैं।

**नाग नंदी**– नाग नंदी की मूर्ति बस स्टैंड के नजदीक अंजनेय मंदिर में स्थित है।

**सोमा नंदी** – सोमा नंदी जगन्नी मंदिर के पास नंदी के पूर्व की तरफ है।

**सूर्य नंदी** – यह एक छोटा तीर्थ है जो महानंदी के रास्ते पर स्थित है। यह क्षेत्र में चारों ओर सुंदर पेड़ और हरियाली के है।

**शिव नंदी** – यह एक प्राचीन और सुंदर मंदिर है जिसे चालुक्य स्थापत्य शैली में पत्थरों से बनाया गया है।

**विष्णु नंदी और कृष्णा नंदी**–यह दोनों ही एक शांत मंदिर हैं। यहां भगवान शिव की देवता को समर्पित सुंदर मूर्तियां हैं।

**गरुड़ नंदी**– महानदी मंदिर के सामने यह मुख्य सड़क पर एक बहुत छोटा मंदिर है।

**विनायक नंदी**– यह मंदिर एक ही परिसर में महानंदेश्वर मंदिर के रूप में स्थित है।

भक्तजन प्रायः इन नंदियों के कान में धीरे से अपनी मनोकामना बताते हैं और विश्वास करते हैं कि शिव उनकी कामना अवश्य पूर्ण करेंगे।

*पिछले अंक में हमने आपको यझांती में उमा महेश्वर के बारे में बताया था। आइए अब आपको ले चलते हैं नवनंदुलू यानि महानंदीश्वर जो नंदियाल से 19 कि.मी. दूर और यझांती से लगभग 58 कि.मी. दूर आंध्र प्रदेश का एक लोकप्रिय शैव तीर्थस्थल है। पर्यटन की दृष्टि से भी यह एक अच्छा स्थान है। यझांती से महानंदीश्वर आने के लिए सरकारी बसों के अलावा निजी वाहन भी मिलते हैं, जो डेढ़ से दो घंटे में आपको यहां पहुंचा देते हैं।*

* कंसलटेंट, पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली

## महानंदीश्वर के बारे में...

महानंदीश्वर मंदिर में स्थापित शिवलिंग के बारे में प्रचलित एक कथा के अनुसार इसका एक रोचक इतिहास बताया जाता है। नंदियाल के राजा नंद की इच्छा हुई कि भगवान शिव का दूध से अभिषेक करें। उन्होंने गांव के एक ग्वाले को पर्याप्त मात्रा में दूध लाने का आदेश दिया। ग्वाले को लगा कि एक गाय दूध नहीं देती है। यह देखने के लिए कि गाय दूध क्यों नहीं दे रही उसने अगले दिन उस गाय का पीछा किया तो देखा वह गांव के बाहर पहाड़ी पर चढ़ने लगी और चोटी पर जाकर खड़ी हो गई। कुछ देर बाद वहां नीले से रंग का एक बालक आया और उसने गाय का दूध पीना शुरू कर दिया, गाय चुपचाप खड़ी रही। ग्वाले ने आकर राजा को यह बात बताई। राजा भी चकित रह गए और अगले दिन दोनों ही उस पहाड़ी पर जाकर छुप गए।

प्रतिदिन की तरह वह गाय वहां पहुंची और कृष्ण जैसे रूप में एक बच्चा आया और गाय का दूध पीने लगा। यह दृश्य देख राजा प्रसन्न हो कर जोर जोर से बोलने लगे। उनकी आवाज सुन कर बच्चा और गाय दोनों विलोप हो गए उन्होंने दोनों को बहुत ढूंढा लेकिन दोनों ही दिखाई नहीं दिए, बस गाय के पैरों के गहरे निशान बचे थे।

उसी रात राजा को स्वप्न में भगवान शिव के दर्शन हुए और राजा ने दूसरे दिन उसी स्थान पर जाकर शिव की आराधना की तथा एक मंदिर बनवाया और इसी मंदिर में शिव का दुग्धाभिषेक किया। पुरातत्व साक्ष्यों के अनुसार इस मंदिर को सातवीं सदी में बना माना जाता है। कई मायनों में अद्वितीय है और इस मंदिर में शिवलिंग के पास ही गाय के चरणचिन्ह आज भी मौजूद हैं।

महानंदीश्वर

महानंदी मंदिर का प्रवेश द्वार

*नौ नंदी मंदिरों के कारण विजयनगर साम्राज्य काल से ही नंदियाल एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। नंदियाल पहाड़ियों से घिरा हुआ है, इसके पश्चिम में कुंडू नदी, पूर्व में नल्लमाला पहाड़ियाँ के घने जंगल और दक्षिण में ग्रेनाइट की खानें हैं। यह क्षेत्र जल संसाधनों के रूप में कई जलाशयों से समृद्ध है। यहां पूरे साल भर लगभग एक समान मौसम रहता है।*

भगवान शिव को समर्पित 7वीं शताब्दी में बना यह प्राचीन महानंदीश्वर मंदिर बहुत प्रसिद्ध है और पवित्रतीर्थ माना जाता है। मंदिर तथा अन्य संरचनाओं पर विजयनगर की वास्तुकला की शैली का प्रभाव दिखाई देता है। यद्यपि इसकी आरंभिक संरचना का निर्माण सातवीं शताब्दी में चालुक्यों द्वारा की गई थी, लेकिन 10वीं और 15वीं शताब्दी तक इसमें अनेक राजाओं ने योगदान देते हुए अपने अपने समय के अनुसार इसमें कई और निर्माण कराए। इसके मध्य में गोपुरम का निर्माण बादामी चालुक्य ने करवाया था। 10वीं सदी के शिलालेखों में मंदिर की कई बार मरम्मत/ पुनर्निर्माण की बात पाई गई है। इनके अनुसार, नंदी नामक स्थानीय राजाओं ने 10 वीं ईस्वी में यहां शासन किया था और उन्होंने कई मंदिरों का निर्माण कराया चूंकि नन्दी को वह अपना पितृदेव मानते थे इसलिए सभी का नाम महानंदी ही रखा गया था।

यहां की पुष्करिणी का पानी एकदम शुद्ध और साफ है। इसकी एक खासियत यह है कि यहां पानी इतना साफ है कि तल में गिरी एक सुई को भी साफ साफ देखा जा सकता है। यहां पूरे वर्ष पानी रहता है। महानंदीश्वर मंदिर में तीन पुष्करिणी अर्थात तालाब हैं। इनमें दो मंदिर के बाहर स्थित हैं और एक मंदिर परिसर के भीतर है जिसे कल्याणी पुष्करिणी कहा जाता है। मंदिर के गर्भगृह में कल्याणी पुष्करिणी में जलस्रोत की विशेषता यह भी है कि ऋतु के परिवर्तन के बावजूद इसका प्रवाह निरंतर बना रहता है।

यहां मुख्य शिवलिंग स्थापित है। इसके मध्य में 60 वर्ग फुट आकार का मंडपम है और इसमें जल के प्रवेश तथा निकास की इस प्रकार व्यवस्था की गई है कि जलस्तर हमेशा पांच फीट ऊँचा रहता है।

भक्तों को इस पवित्र पुष्करिणी में एक डुबकी लगाकर ही अंदर जाने और शिव लिंग की आराधना करने की अनुमति है। महाशिवरात्रि के समय में पानी के नीचे शिवलिंगम् को छूने की भी अनुमति है। भक्तगण जलमग्न शिवलिंगम् का स्पर्श कर प्रार्थना कर सकते हैं। यह एक असामान्य बात है क्योंकि पारंपरिक रूप से मंदिरों में देवमूर्ति को भक्तों के स्पर्श से दूर रखा जाता है।

हल्का गर्म होता है तथा इसके विपरीत गर्मियों में ठंडा होता है। सुबह के दौरान, पानी गुनगुना होता है और दिन के तापमान में वृद्धि के साथ धीरे–धीरे ठंडा हो जाता है।

*यहां का निकटतम रेलवे स्टेशन नंदियाल है जो महानंदीश्वर मंदिर से मात्र 19 कि.मी. दूर है और यहां आने के लिए सरकारी बसों के अलावा टैक्सियां आदि उपलब्ध हैं। पर्यटकों तथा श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु कुड्डप्पा, हैदराबाद, तिरुपति, नेल्लोर, चेन्नई और कुरनूल से नंदियाल के लिए वोल्वो और डीलक्स बसें भी मिलती हैं।*

पुष्करिणी

कल्याणी पुष्करिणी के जल के निकास से गांव की लगभग 2,000 एकड़ उपजाऊ जमीन की सिंचाई की जाती है। आसपास के क्षेत्र में चावल के खेत हैं। इसके अलावा यहां फल, सब्जी और फूलों की फसलें उगाई जाती है। सर्दियों के मौसम के दौरान पानी

इस शहर का आकर्षण महानंदीश्वर मंदिर के बाहर विश्व की सबसे बड़ी नंदी प्रतिमा है। फरवरी/मार्च में यहां महाशिवरात्रि पर्व बड़ी भव्यता से मनाया जाता है। इस दौरान भक्तों की अपार भीड़ होती है और कहा जाता है कि आंध्र के लगभग प्रत्येक भाग से लोग यहां दर्शन के लिए उपस्थित होते हैं। यहां दर्शन के

लिए अलग–अलग टिकटें लगती है जिनका मूल्य 20 रूपए से 1000 रूपए तक है। सायं 05:30 – 06:30 के बीच हर दिन स्पर्श दर्शन के लिए विशेष दर्शन टिकट दिया जाता है।

महानंदी जाने का सबसे अच्छा समय नवंबर से मार्च है, जबकि व्यस्ततम समय फरवरी से मार्च तक है क्योंकि इस दौरान यहां महाशिव रात्रि का पर्व आयोजित किया जाता है। आम तौर पर केवल महानंदी की यात्रा में आधा दिन लग जाता है। किंतु कुछ लोग सभी ''नवनंदुलु'' की पैदल परिक्रमा कर दर्शन करना चाहें तो पूरा दिन लग जाता है। स्थानीय नगर निगम द्वारा ''नवनंदुलु'' परिक्रमा के लिए साफ–सुथरा और सुविधापरक मार्ग बनाया गया है जो नौ नंदियों के प्रत्येक मंदिर के पास से गुजरता है।

निकट के अन्य स्थानों में आप कोदंडरामालय और कामेश्वरी देवी के मंदिर भी जा सकते हैं। मंदिर के पास आंध्र प्रदेश पर्यटन निगम के हरित हेरिटेज होटल के साथ ही कई प्राईवेट लॉज और बजट होटल उपलब्ध हैं।

## अहोबिलम्

आइए, अब चलते हैं नवनरसिंहम् क्षेत्र–अहोबिलम् जो महानंदीश्वर से 65 कि.मी. दूर है और यहां से सरकारी बसों के अलावा प्राइवेट बसें, कारें तथा टैक्सियां मिल जाती हैं। यहां पूर्वी घाट की पहाड़ियों में उत्तर–पश्चिम में नौ कि.मी. की परिधि में आसपास भगवान नृसिंह के नौ मंदिर हैं। नौ मंदिरों के अलावा, पर्वत की तलहटी में प्रहलादवर्धन का भी एक मंदिर है।

महाभारत, कुर्म पुराण, पद्य पुराण और विष्णु पुराण जैसे प्राचीन ग्रंथों में अहोबिलम और यहां के परंपरागत देव नरसिंह का उल्लेख मिलता है। ब्रह्मांड पुराण के अनुसार यह स्थान हिरण्यकश्यप का राज्य था। यहीं श्रीमन्नारायण अपने भक्त प्रह्लाद की रक्षा के लिए एक स्तंभ से नरसिंह के रूप में प्रकट हुए थे और इस पर्वत श्रृंखला की प्राकृतिक सुंदरता को देख भगवान नरसिम्हा प्रसन्न होकर इस स्थल पर "स्वयं व्यक्तक्षेत्रम" के रूप में स्थापित हुए।

इस पूरे परिसर को दो हिस्सों में वर्गीकृत किया गया है–पहाड़ी के ऊपरी क्षेत्र को ईगुवा अहोबिलम् (ऊपरी अहोबिलम्) और दूसरे निचले क्षेत्र को दिवुबू अहोबिलम (लोअर अहोबिलम्) के नाम से जाना जाता है। यहीं कुछ दूरी पर श्रीलक्ष्मी नरसिम्हा का मंदिर है जो सड़क से लगभग 12.8 किलोमीटर दूर है। सरकार के प्रयासों से इस क्षेत्र में लोअर अहोबिलम से ऊपरी अहोबिलम तक मार्गों को सुविधाजनक बनाया गया है ताकि सभी आयु वर्ग के लोग आसानी से इन स्थानों पर जा सकें।

*यह कहानी तो हम सभी ने बचपन में ही पढ़ी–सुनी थी कि हिरण्यकश्यप ने अपनी कठिन तपस्या से ब्रहमा को प्रसन्न किया और उनसे यह वरदान प्राप्त कर लिया कि न दिन में, न ही रात में, न घर के अंदर और न बाहर, न तो कोई अस्त्र और न ही किसी शस्त्र का प्रहार, न कोई मनुष्य, न ही पशु, उसके प्राण नहीं ले सकेगा। इस वरदान ने उसे अहंकारी बना दिया और वह अपने को अमर समझने लगा। उसने इंद्र का राज्य छीन लिया और तीनों लोकों को प्रताड़ित करने लगा। वह चाहता था कि सब लोग उसे ही भगवान मानें।*

*वहीं हिरण्यकश्यप के घर में उसका पुत्र प्रह्लाद भगवान विष्णु का उपासक था। पिता द्वारा अनेक प्रकार की यातनाएं देने के बाद भी, वह सुरक्षित रहा और विष्णु की आराधना करता रहा। अंतिम प्रयास में हिरण्यकश्यप ने लोहे के एक स्तंभ को गर्म कर लाल कर दिया तथा प्रह्लाद को उसे गले लगाने को कहा। तब प्रह्लाद की रक्षा के लिए भगवान विष्णु उस स्तंभ से स्वयं नरसिंह के रूप में प्रकट हुए तथा महल के प्रवेश द्वार की चौखट पर, जो न घर के अंदर था और न ही बाहर, गोधूलि बेला में – जब न दिन था न रात, नरसिंह के रूप में – जो न नर था न पशु – अपने लंबे तेज़ नाखूनों से – जो न अस्त्र थे न शस्त्र – हिरण्यकश्यप का वध किया।*

पुराणों के अनुसार, 'अहोबल' शब्द की व्युत्पत्ति के लिए दो लोकप्रिय किंवदंतियां हैं। यह कहा गया है कि देवताओं के भयानक रूप यानि उग्र कला को देखते हुए, प्रहलाद ने श्रीविष्णु का अपनी स्तुति में 'अहोबल' यानि महाशक्तिशाली के रूप में स्तुति गान किया था जो इस प्रकार है : – **"अहो वीर्यम अहो शौर्यम अहो बहुप्राक्रमः नरसिंहम् परम देवम अहोबिलम अहो बलम"**

अन्य कथा यह भी है कि हिरण्यकश्यप के अत्याचारों से तीनों लोकों को बचाने के लिए गरुड़ ने एक गुफा में तपस्या आरंभ की और विष्णु जी से नृसिंह के रूप में प्रकट होने का अनुरोध किया। गरुड़ की इच्छा पूर्ण करने के लिए विष्णु जी ने नरसिंह के रूप में अवतार लिया तथा अपने नौ विभिन्न रूपों में इन्ही घने जंगलों के बीच पहाड़ियों में बस गए। इस कारण से यह क्षेत्र गरुड़ाद्रि, गरुड़ाचलम और गरुड़ाशैलम के नाम से भी जाना जाता है।

हिरण्यकश्यप के महल के अवशेष

मैकेंज़ी के रजिस्टर 'अहोबिलम कैफियेट्स' में अहोबिलम् के मंदिरों बारे में बहुत महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। कैफियेट्स या कैफियत में कर्नल मैकेंज़ी के अधीन काम करने वाले पंडितों द्वारा दक्षिण के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और गांवों की स्थितियों पर जानकारी तैयार की गई थी। 'अहोबिलम कैफियत' तेलगु में है और हैदराबाद के राज्य अभिलेखागार में संरक्षित बताई जाती है।

अभिलेखागार के पूर्व आयुक्त डॉ. पी. सीतापति बताते हैं कि इस रिकॉर्ड के अनुसार, "नल्लमाला पहाड़ियों में से एक श्रीशैल पर, गरुड़ ने श्रीविष्णु भगवान के नरसिंह रूप में दर्शन प्राप्त करने के लिए आठ मास तक मौन तपस्या शुरू की थी। परंतु हिरण्यकश्यप ने उसमें विघ्न डाल कर तपस्या भंग कर दी। गरुड़ ने तब पुनः श्रीविष्णु की आराधना की और उनकी प्रशंसा में 'अहोबलम् महाबलम अर्थात 'हे शक्ति के महान साधक' का गान किया। अंततः कई वर्षों तक तपस्या करने के पश्चात श्रीविष्णु ने स्वयं गरुड़ के समक्ष इस गुफा में नरसिंह रूप में प्रकट हुए थे। उन्होंने भगवान की दिव्य मंगल–विग्रह आराधना की। गरूड़ ने उन्हें यहीं रह जाने कर अनुरोध किया ताकि लोगों को उनके नरसिंह रूप के दर्शन होते रहें। आज भी नरसिंहस्वामी के कई त्यौहारों के अवसर पर भगवान के दर्शन के बाद भक्तजन गरुड़ के भी दर्शन कर खुद को धन्य मानते हैं। इसके बाद इस दिव्य स्थान को अहोबिलम् नाम दिया गया।"

संस्कृत के अनेक ग्रंथों में अहोबिलम् को स्थलपुराण बताते हुए, नरसिंह के नौ रूपों का विवरण दिया है। पारंपरिक रूप से इस स्थान को नवनरसिंह क्षेत्र भी कहा जाता है। यहां नौ–नरसिंह ऋषि स्थापित हैं :

भार्गव नरसिंहस्वामी

## 1. भार्गव नरसिंहस्वामी

भार्गव नरसिंह स्वामी, लोअर अहोबिलम् से दो किलोमीटर दूर एक पहाड़ी पर, पुष्करिणी (तालाब) के पास स्थित है। इसे 'भार्गव तीर्थम' भी कहा जाता है क्योंकि यहां श्रीराम ने तपस्या की थी। इसलिए मंदिर के भगवान को श्रीभार्गव नरसिंहस्वामी के नाम से जाना जाता है। यहां लोअर अहोबिलम् से पैदल चलकर पहुंचा जा सकता है। मंदिर के बाहर तक अपने किसी वाहन से भी आ सकते हैं। प्राकृतिक नजारों का आनंद लेने के लिए यह एक अच्छा स्थान है।

## 2. योगानंद नरसिंहस्वामी

यह मंदिर लोअर अहोबिलम् के दक्षिण–पूर्व में दो किलोमीटर दूर है। यहां योगानंद नरसिंहस्वामी पद्यासन मुद्रा में विराजमान हैं। लोकप्रिय किंवदंती यह है कि हिरण्यकश्यप का वध करने के पश्चात, नरसिंहस्वामी ने प्रहलाद को कई यौगिक मुद्राएं सिखाई थी। इसलिए उनके इस रूप को योगानंद नरसिंहस्वामी कहते हैं।

## 3. क्षेत्रावर्त नरसिंहस्वामी

लोअर अहोबिलम् से लगभग तीन किलोमीटर दूर, नरसिंह की मूर्ति को कांटेदार झाड़ियों से घिरे पीपल के वृक्ष के नीचे स्थापित किया गया है। इसलिए, भगवान को क्षेत्रवर्त नरसिंहस्वामी कहा जाता है।

क्षेत्रावर्त नरसिंहस्वामी मंदिर

## 4. अहोबिलम् नरसिंहस्वामी

लोअर अहोबिलम् से आठ किलोमीटर की दूरी पर ऊपरी अहोबिलम् में स्थित यह मंदिर ही मुख्य मंदिर है और वहां के सभी नौ मंदिरों में सबसे पहला और प्राचीन मंदिर माना जाता है। यह विश्वास किया जाता है कि भगवान नरसिंह यहीं पर भयंकर रूप में 'स्वयं' प्रकट हुए थे इसलिए इन्हें उग्र नरसिंह भी कहा जाता है। यही इन मंदिरों के मुख्य देव माने जाते हैं और इन्हें अहोबिलम् नृसिंहस्वामी के नाम से जाना जाता है। सुरक्षा कारणों और दैनिक पूजा करने में कठिनाई के कारण, सभी नवनरसिंह मंदिरों के अधिकतर विग्रह उत्सवों का आयोजन इस मुख्य मंदिर में ही रखा जाता है।

*नल्लमाला पहाड़ियों में स्थित, इन नौ तीर्थों की यात्रा करने से पहले, आइए देखते हैं कि हम इस स्थान पर कैसे पहुंच सकते हैं। यज्ञंती से यदि सीधे ही आते हैं तो अहोबिलम् लगभग 170 कि.मी. दूर है और सरकारी बसों से करीब पांच घंटे का सफर है। अहोबिलम् अल्लागड्डा तालुक मुख्यालय से 24 किलोमीटर है और नंदीयाल से 65 किलोमीटर दूर है। हैदराबाद और कुरनूल से बस तथा रेल द्वारा भी यहां पहुंचा जा सकता है।*

## 5. क्रोधकारी (वराह) नरसिंहस्वामी

यह मंदिर ऊपरी अहोबिलम् नृसिंहस्वामी के मुख्य मंदिर से एक किलोमीटर दूर है। यहां भगवान की आकृति में एक वराह की छवि दिखाई देती है। इसलिए मंदिर को क्रोधकारी वराह नरसिंहस्वामी के नाम से जाना जाता है।

## 5. करंज नरसिंहस्वामी

श्री करंज नरसिंहस्वामी क्षेत्र को पांचवें स्थान पर माना जाता है। पुराणों के अनुसार कपिल ऋषि ने दुर्वासा ऋषि के श्राप से मुक्ति प्राप्त करने के लिए करंज की आराधना की थी। करंज नरसिंहस्वामी क्षेत्र अनेक प्रकार से अपने आप में ही अनोखा है। लोअर अहोबिलम् से ऊपरी अहोबिलम् की ओर से एक किलोमीटर और सड़क से मात्र सौ मीटर ही दूर है। यहां नरसिंह के मंदिर के आस पास करंज के वृक्ष हैं। चूंकि यहां देवमूर्ति को करंज के वृक्ष के नीचे स्थापित किया गया है इसलिए इसे करंज नरसिंहस्वामी के नाम से जाना जाता है। यह कई मायनों में अद्वितीय है। यह मंदिर एक बहुत ही खूबसूरत स्थान पर स्थित है और नयनाभिराम दृश्य प्रदान करता है। यहां से थोड़ी ही दूर भावनाश्रीनी नदी है जो वातावरण को बहुत सुंदर बनाती है।

भावनाश्रीनी नदी

करंज नरसिंहस्वामी चतुर्भुज मुद्रा में है। उनके एक हाथ में करंज स्थानीय भाषा में पेंगा (हेन्ना) नामक वृक्ष के पत्ते है। दूसरे में धनुष–बाण, जो सामान्य रूप से श्री राम के हाथों में देखे जाते हैं। तीसरे ऊपरी हाथ में सुदर्शनचक्र और निचला हाथ अभय मुद्रा में हैं।

## 7. मालोला नरसिंहस्वामी

ऊपरी अहोबिलम् के मुख्य मंदिर से लगभग दो किलोमीटर दूर, मालोला नरसिंहस्वामी का प्रसिद्ध मंदिर है। यहां नरसिंह देव सौम्य और प्रसन्न मुद्रा में अपनी पत्नी लक्ष्मी के साथ विराजमान है। 'मालोला' का शाब्दिक अर्थ है प्यारी लक्ष्मी यानि (मा = लक्ष्मी + लोला = प्रिय), इसलिए उन्हें मालोला नरसिंह स्वामी के नाम से जाना जाता है।

## 8. ज्वाला नरसिंहस्वामी

ज्वाला नरसिंहस्वामी का मंदिर, इस क्षेत्र के सबसे ऊंचे स्थान, 'अचलाचय मेरु' नामक पहाड़ी पर स्थित है, जिसे यह ऊपरी अहोबिलम् मंदिर से लगभग चार किलोमीटर दूर है। इसे ही वह वास्तविक स्थान माना जाता है, जहां भगवान का भयंकर क्रोध चरम पर पहुंच गया और उन्होंने हिरण्यकश्यप को चीर कर उसका वध किया था। क्रोधकारी नरसिंह स्वामी मंदिर से ज्वाला नरसिंह स्वामी मंदिर के लिए एक रास्ता कटता है। इस रास्ते पर घने जंगल हैं। फिर भी इस रास्ते पर चलना स्फूर्तिदायक होता है। ज्वाला नरसिंह मंदिर का रास्ता कुछ चट्टानों से घिरा है और चलने में मुश्किल लगता है। सूरज की रोशनी कम हो जाती है। गर्मी के मौसम में आधे घंटे की यह छोटी सी यात्रा आपको थका सकती है। लेकिन नल्लमाला पहाड़ियों की हरियाली आपको ऊर्जा प्रदान करती है। आधा रास्ता पार करने पर आप यहां से उग्र स्तम्भ देख सकते हैं।

## 9. पावन नरसिंहस्वामी

पावन नरसिंह का मंदिर ऊपरी अहोबिलम् मंदिर से लगभग छह किलोमीटर दूर है। पवना नदी के किनारे पर स्थित होने के कारण नरसिंह भगवान को पावन नरसिंहस्वामी कहा जाता है। इसके निकट ही प्रहलाद वरदा संनिधि के नाम से प्रचलित प्रसिद्ध मंदिर है जो भक्त प्रहलाद को समर्पित है। इसमें भगवान नरसिंहस्वामी के चरणों में भक्त प्रहलाद विराजमान है।

इस स्थान पर दो अन्य महत्वपूर्ण स्थान 'उग्र स्तम्भम् और 'प्रहलाद मेट्टू' हैं।

### (क) उग्र स्तंभम्

ऊपरी अहोबिलम् मंदिर से आठ किलोमीटर की दूरी पर, पहाड़ के दो भागों या चोटियों को देखकर लगता है कि पहाड़ को दो भागों में विभाजित किया गया होगा। आज भी लोगों की आस्था है कि यहीं भगवान नरसिंह के रूप में अवतरित हुए थे और उनके उग्र रूप को देख भगदड़ के कारण पर्वत में दरार आ गई होगी। इस दरार को 'उग्र स्तम्भम' कहा जाता है।

## (ख) प्रल्हाद मेट्टू

उग्र स्तंभम् और ऊपरी अहोबिलम् के बीच तीन प्रकर्षों से घिरी पहाड़ी पर एक गुफा में स्थित यह छोटा मंदिर भक्त प्रहलाद को समर्पित है। यहां देवमूर्ति प्रहलाद को आशीर्वाद देने की मुद्रा में हैं। प्रहलाद की मूर्ति एक छोटी गुफा में स्थापित है। इस जगह के आसपास कई पवित्र 'तीर्थम' हैं। इनमें से, एक सबसे महत्वपूर्ण है रक्तकुंडम। यह माना जाता है कि हिरण्यकश्यप का वध करने के बाद भगवान नरसिंह ने इस कुंड में हाथ धोए थे। इसलिए आज भी इस कुंड का पानी देखने में लाल दिखाई देता है। यहां में मंदिर के बाहर विजयनगर शैली के कई मंडप हैं।

यहां से थोड़ी दूरी पर, दक्षिण पश्चिम में श्री वैंकटेश्वर को समर्पित एक और नरसिंहस्वामी मंदिर है और कहा जाता है कि भगवान वैंकटेश्वर ने पद्मवती के साथ विवाह के समय यहीं नरसिंह का आशीर्वाद प्राप्त किया था।

इस मंडप का उपयोग अब विवाह–समारोह आदि के लिए कल्याण मंडप के रूप में किया जाता है। लक्ष्मीनरसिम्हा के मुख्य मंदिर में एक मुखमंडपम और रंगमंडपम हैं जिसके स्तंभों जपर जटिल तथा सुंदर नक्काशी की गई समृद्ध मूर्तियां हैं। लक्ष्मी, अंडाल और अझवर के तीन छोटे मंदिर भी हैं।

स्तंभ पर की गई नक्काशी

आंध्र प्रदेश सरकार के अक्षयनिधि विभाग (एंडोमेंट्स विभाग) के प्रयासों से इस क्षेत्र का पुनरोद्धार/ नवीनीकरण किया गया है। फिर भी, अभी बहुत कुछ किए जाने की आवश्यकता है जैसे कि श्रृद्धालु पर्यटकों के ठहरने और आराम के लिए मुफ्त

या भुगतान पर ठहरने की व्यवस्था, पर्याप्त पेयजल, अच्छे शौचालय आदि की व्यवस्था। कुल मिलाकर देसी विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए भी अभी बहुत कुछ किए जाने की जरूरत है।

प्रति वर्ष फरवरी में आयोजित किए जाने वाले वार्षिक ब्रह्मोत्स्वम् ने भी लोगों को आकर्षित किया है। इसके भक्ति कार्यक्रमों में आम जनता के साथ–साथ धार्मिक विद्वान भी शामिल होते हैं।

अभी तक प्रायः श्रृद्धालु पर्यटक ही अहोबिलम् आते हैं। अब तो दक्षिण के प्रमुख शहरों से कई पर्यटक ऑपरेटर अहोबिलम् के लिए धार्मिक यात्राओं की व्यवस्था करते हैं।

**अतुल्य भारत' पत्रिका में प्रकाशन हेतु पर्यटन क्षेत्र के लेखकों, अनुसंधानकर्ताओं, तकनीकी विशेषज्ञों, उद्यमियों आदि से लेख आमंत्रित हैं।**

- ❖ लेख का विषय पर्यटन और उससे संबंधित क्षेत्र में किसी सामयिक विषय एवं विकास कार्यों पर आधारित हो।
- ❖ साधारणतया लेख अधिकतम लगभग 3,000 शब्दों का हो वस्तुस्थिति के अनुसार अधिक भी हो सकता है। किसी विशेष अवसर अथवा स्तंभ के लिए भेजे गए लेख में लगभग 1500 शब्दों अथवा अधिकतम का भी स्वागत है। लेख को बोधगम्य एवं सुरूचिपूर्ण बनाने हेतु कृपया लेख के साथ उपयुक्त फोटोचित्र/रेखाचित्र (प्रिंट करने योग्य क्वालिटी के) भी संलग्न करें।
- ❖ लेख सरल हिंदी भाषा में लिखा हो।
- ❖ ई–मेल से भेजे जाने वाले लेख OPEN FILE में तथा फोटोग्राफ यदि कोई हो, . jpg अथवा .png में ही भेजें। कोई भी लेख/सामग्री pdf. में भेजने का कष्ट नहीं करें। कागज के एक ओर टाइप किया हुआ या स्पष्ट रूप से हस्तलिखित हो। टाइप किया लेख (फोन्ट सहित) ई–मेल माध्यम से भेजें।
- ❖ लेखक द्वारा भेजे गए लेख एवं फोटोचित्रों/रेखाचित्रों के संदर्भ में कॉपीराइट संबंधी उत्तरदायित्व स्वयं लेखक का होगा।
- ❖ लेख इस पते पर भेजें : प्रबंध संपादक, अतुल्य भारत, पर्यटन मंत्रालय,कमरा नं0 18, सी–1 हटमेंट्स, दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली–110011, ई–मेल : editor.atulyabharat@gmail.com है।

**अगला अंक**

# बौद्ध परिपथ विशेषांक

ई– ग्रंथालय

# एक कदम डिजिटल इंडिया की ओर

–अबिनाश दाश

विश्व के जानकार देशों के साथ ही एक संपूर्ण डिजिटल सशक्त भारत में बदलने के लिये 1 जुलाई 2015 (डिजिटल सप्ताह के रुप में 1 जुलाई से 7 जुलाई तक) को भारत सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया प्रोजेक्ट की शुरुआत हुई। एक आशाजनक अच्छे प्रतिफल को प्राप्त करने के लिये विभिन्न सरकारी विभागों जैसे आईटी, शिक्षा, कृषि आदि के द्वारा ये प्रोजेक्ट परस्पर संबद्ध है। दूरसंचार और सूचना तकनीकी मंत्रालय द्वारा इसकी योजना और नेतृत्व प्रदान किया गया। अगर ये अच्छे से लागू हुआ तो भारत के लिये ये एक सुनहरे अवसर के समान होगा। इस प्रोजेक्ट के लोकार्पण के बेहद शुरुआत में ही लगभग 250,000 गाँवों और देश के दूसरे आवासीय इलाकों में तेज गति के इंटरनेट कनेक्शन को उपलब्ध कराने के लिये राज्य सरकारों के द्वारा एक योजना बनायी गयी थी। इस प्रोजेक्ट में 'भारत ब्रॉडबैंड नेटवर्क लिमिटेड' द्वारा एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है गयी जो वाकई सराहनीय है।

डिजिटल इंडिया में डेटा का डिजिटलाईजेशन आसानी से होगा जो भविष्य में चीजों को तेज और ज्यादा दक्ष बनाने में मदद करेगा। यह कागजी कार्य, समय और मानव श्रम की भी बचत करेगा। सरकार और निजी क्षेत्र के बीच गठबंधन के द्वारा यह परियोजनाएं गति पकड़ेंगी। तेज गति नेटवर्क के साथ आपस में जुड़े हुए बड़ी संख्या के गाँव वास्तव में पिछड़े क्षेत्रों से पूर्ण रुप से डिजिटली लैस इलाकों के रुप में एक बड़े बदलाव से गुजरेंगे। भारत में सभी शहर, नगर और गाँव ज्यादा तकनीकी होंगे। मुख्य कंपनियों (राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय) के निवेश के साथ 2019 तक इस प्रोजेक्ट को पूरा करने की योजना है। डिजिटल इंडिया प्रोजेक्ट में लगभग 2.5 लाख करोड़ के निवेश के लिये अंबानी के द्वारा घोषणा की गई है।

ई–ग्रंथालय मुख्य वेब पेज

सरकारी विभागों और प्रमुख कंपनियों (राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर) के एकीकरण के द्वारा डिजिटल रुप से सशक्त भारतीय समाज के लिये यह एक योजनागत पहल है। भारतीय नागरिकों के लिये आसान पहुँच पर सभी सरकारी सेवाएं उपलब्ध कराना इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य है। इस कार्यक्रम के तीन मुख्य क्षेत्र हैं:

भारतीय लोगों के लिये एक जनोपयोगी सेवा

*पुस्तकालयाध्यक्ष, होटल प्रबंध संस्थान, भुबनेश्वर

की तरह पूरे देश में डिजिटल संरचना हो ताकि यह तेज गति की इंटरनेट पहुँच उपलब्ध कराए और सभी सरकारी सेवाएं आम लोगों तक आसानी और तेजी से पहुँच सकें। यह नागरिकों को जीवन पर्यन्त, अनोखा, ऑनलाईन और प्रामाणिक रुप से डिजिटल पहचान उपलब्ध करायेगा। ये किसी भी ऑनलाईन सेवा जैसे बैंक खाता, वित्त प्रबंधन, सुरक्षित और सुनिश्चित साईबर स्पेस, शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा आदि के लिये बेहद कारगर साबित होगा।

सुशासन की अत्यधिक माँग और ऑनलाईन सेवा डिजिटलाइजेशन के द्वारा वास्तविक समय में सभी सेवाओं को उपलब्ध करायेगा। डिजिटल रुप से बदली हुई सेवा भी वित्तीय लेन–देन को आसान, इलेक्ट्रॉनिक और बिना नकद के बनाने के द्वारा ऑनलाईन व्यापार करने के लिये लोगों को बढ़ावा देगी।

भारतीय लोगों का डिजिटल सशक्तिकरण डिजिटल संसाधनों की वैश्विक पहुँच के द्वारा डिजिटल साक्षरता को वास्तव में मुमकिन बनाएगी। ऑनलाईन प्रमाणपत्र या जरुरी दस्तावेज़ों को जमा करने के लिये लोगों को सक्षम बनाएंगी। इससे अब स्कूल, कॉलेज, कार्यालय या किसी संस्थान में भौतिक रुप से प्रस्तुत होने की जरुरत नहीं होगी।

इस पहल के निम्न लक्ष्यों को सुनिश्चित करने के लिये भारत सरकार के द्वारा डिजिटल इंडिया कार्यक्रम को लागू किया गया है।

- ब्रॉडबैंड हाइवे सुनिश्चित करना।
- मोबाईल फोन के लिये वैश्विक पहुँच सुनिश्चित करना।
- तेज गति इंटरनेट से लोगों को सुगम बनाना।
- डिजिटलाईजेशन के माध्यम से सरकार में सुधार के द्वारा ई–गर्वनेंस लाना।
- सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक डिलिवरी के द्वारा ई–क्रांति लाना।
- सभी के लिये ऑनलाईन सूचना उपलब्ध कराना।
- आईटी क्षेत्र में अधिक नौकरियां सुनिश्चित करना।

ई–ग्रंथालय, लाइब्रेरी स्वचालन और नेटवर्किंग के लिए भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र (एनआईसी) द्वारा विकसित सॉफ़्टवेयर है। यह सॉफ्टवेयर पुस्तकालय और सूचना विज्ञान अनुशासन से विशेषज्ञों की एक टीम द्वारा विकसित किया गया है। इस से पुस्तकालय की आंतरिक गतिविधियों के स्वचालन तथा विभिन्न ऑनलाइन सदस्य सेवाएं प्रदान करने के लिए उपयोगी है। यह सॉफ्टवेयर इंटरनेट पर पुस्तकालय सूची को प्रकाशित करने के लिए निर्मित वेब ओपीएसी इंटरफेस प्रदान करता है और यूनिकोड अनुरूप है। यह स्थानीय भाषाओं में डेटा प्रविष्टि को भी वहन करता है। ई–ग्रंथलाय का नवीनतम संस्करण i.e. Ver. 4.0 एक 'क्लाउड रेडी एप्लिकेशन' है और एंटरप्राइज मोड में एक वेब आधारित डाटा एंट्री समाधान प्रदान करता है जिसमें पुस्तकालयों के क्लस्टर के लिए एक केंद्रीकृत डेटाबेस है। ई–ग्रंथलाय 4.0 पोस्टग्रेएसक्यूएल – बैक एण्ड डेटाबेस समाधान के रूप में ओपन सोर्स डीबीएमएस का उपयोग करता है और एनआईसी द्वारा नेशनल मेघ (मेघराज) में सरकारी पुस्तकालयों के लिए उपलब्ध कराया जाता है।

ई–ग्रंथालय को 'एनआईसी, बेंगलुरु के कर्नाटक स्टेट सेंटर' में एक आंतरिक परियोजना के रूप में शुरू किया गया था और सॉफ्टवेयर का पहला संस्करण राज्य में सार्वजनिक पुस्तकालयों के लिए बनाया गया था। बाद में, एनआईसी मुख्यालयों की लाइब्रेरी और सूचना सेवा प्रभाग ने सॉफ्टवेयर की डिजाइनिंग को संभाला, जहां पुस्तकालय पेशेवर डिजाइनिंग प्रक्रिया में शामिल थे और इस प्रकार, सॉफ्टवेयर को बेहतर यूजर इंटरफेस के साथ में सुधार किया और लाइब्रेरी कार्यों के कार्य प्रवाह को सरल बनाया ताकि ये सभी प्रकार के पुस्तकालयों के लिए उपयुक्त हो सकता है निम्नलिखित तालिका में सॉफ़्टवेयर के विभिन्न संस्करणों के विवरण दिए गए हैं।

| प्रौद्योगिकी / प्लेटफ़ॉर्म किया गया इस्तेमाल | संस्करण | साल | डीबीएमएस |
|---|---|---|---|
| विजुअल बेसिक 6 एएसपी /एचटीएमएल | 1.0 | 2003 | एमएस SQL सर्वर 7 |
| विजुअल बेसिक 6 एएसपी / एचटीएमएल | 2.0 | 2005 | एमएस एसक्यूएल सर्वर 2000 |
| भी.बी.नेट/ईएसपी.नेट 2.0 | 3.0 | 2007 | एमएस एसक्यूएल सर्वर 2005 |
| एएसपी.नेट 4.0/एजेएक्स/जेक्जरी जेएसओएन / सिल्वरलाइट | 4.0 | 2015 | पोस्टग्रेएसक्यूएल–एक ओपन सोर्स डीबीएमएस |

## संचार हेतु आवश्यकताएं

- एनआईसी नेशनल क्लाउड में संचार तथा सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया है और डाटा एंट्री और सदस्य सेवा के लिए यूजर पुस्तकालयों द्वारा ऑनलाइन इस्तेमाल किया जा सकता है।
- सदस्य पुस्तकालयों को अलग से कोई घटक स्थापित करना तथा रखरखाव की सुविधा रखने की जरूरत नहीं है क्योंकि एनआईसी नेशनल मेघ में पहले से ही डाटाबेस और एप्लीकेशन उपलब्ध कराए गए हैं।
- ई–ग्रंथलाय को संचालित तथा त्वरित सेवा प्रदान के लिए लाइब्रेरी में उच्च–स्पीड इंटरनेट कनेक्टिविटी (न्यूनतम 4 एमबीपीएस के साथ) के साथ डेस्कटॉप उपलब्ध होना चाहिए।
- उपयोगकर्ता पुस्तकालय में अन्य बुनियादी सुविधाओं के साथ ई–ग्रंथलाय उपयोग के लिए डेस्कटॉप बार कोड प्रिंटर, स्कैनर, छोटे लेजर प्रिंटर जैसे उपकरणों की आवश्यकता है।

## सॉफ्टवेयर अवयव

- ई–ग्रंथालय 4.0 में निम्न घटक शामिल हैं–
- डेटाबेस (प्रत्येक पुस्तकालय क्लस्टर के लिए अलग डेटाबेस)
- ई–ग्रंथालय 4.0 आवेदन
- क्रिस्टल रिपोर्ट निष्पादन योग्य
- Z39.50 पुस्तकालय

ई–ग्रंथालय सॉफ्टवेयर केवल सरकारी संगठनों जैसे केंद्र सरकार और उसके अंतर्गत स्वायत निकाय संस्थानो के पुस्तकालय को प्रदान किया जाता है।

ई–ग्रंथालय सॉफ्टवेयर की नई लागत नीति के तहत प्रक्रिया चल रही है, इसलिए सॉफ्टवेयर का वितरण अस्थायी रूप से बंद हो गया है। अब नई नीति के अनुसार पुनः कार्यान्वयन किया जाएगा।

## विशेषताएं

- PostgreSQL का उपयोग करता है – एक ओपन सोर्स डीबीएमएस।
- वेब–आधारित डेटा प्रविष्टि समाधान प्रदान करता है।
- यूनिकोड अनुरूप, स्थानीय भाषा में डेटा प्रविष्टि का समर्थन करता है।
- मॉड्यूल – सॉफ्टवेयर उपयोगकर्ताओं के लिए अनुमति।
- भारतीय पुस्तकालयों के अनुसार कार्य प्रवाह।
- एकल फॉर्म में पुस्तकों के प्रत्यक्ष डेटा प्रविष्टि के लिए रेट्रो रूपांतरण।
- प्राधिकरण फ़ाइलें / लेखक, प्रकाशक, विषय आदि के लिए मास्टर टेबल।
- मल्टी–वॉल, मल्टी–कॉपी और चाइल्ड–जनक रिलेशनशिप पैटर्न
- इंटरनेट से कैटलॉग रिकॉड्र्स डाउनलोड करें
- Z39.50 बिल्ट–इन क्लाइंट खोज
- प्रिंट के लिए विस्तृत रिपोर्ट
- सीएसवी/टेक्स्ट फाइल/एमएआरसी 21/एमएआरसी एक्सएमएल/आईएसओः 2709 /एमएस एक्सेस / एक्सेल स्वरूपों में निर्यात रिकॉड्र्स
- एक्सेल फाइल से आयात रिकॉड्र्स
- एक्सेल फ़ाइल से सदस्यता आयात करें
- एक संगठन के अंतर्गत सभी पुस्तकालयों के लिए सामान्य / केंद्रीय डाटाबेस, डाटा एंट्री को कम से कम करना
- मुख्य / शाखा पुस्तकालय अधिग्रहण / सूचीकरण
- प्रिंट परिमाण विभिन्न प्रारूपों में रजिस्टर करें
- बुनियादी / अग्रिम / बूलियन मापदंडों के साथ अंतनिहित खोज मॉड्यूल
- लाइब्रेरी सांख्यिकी रिपोर्ट
- सीएएस / एसडीआई सेवाएं और दस्तावेज़ीकरण बुलेटिन
- कॉम्पैक्ट / सारांश / विस्तृत रिपोर्ट विकल्प
- एएसीआर 2 में ग्रंथसूची तैयार करें
- डेटा प्रविष्टि सांख्यिकी निर्मित में पूर्ण पाठ समाचार कतरन सेवाएँ अंतर्निहित
- पीडीएफ / एचटीएमएल / टिफ दस्तावेजों को अपलोड करने / डाउनलोड करने के साथ डिजिटल लाइब्रेरी एकीकरण
- माइक्रो–दस्तावेज़ मैनेजर (आलेख / अध्याय इंडेक्सिंग) पीडीएफ / एचटीएमएल फॉर्मेट में पूर्ण–टेक्स्ट आलेख अपलोड करने के साथ
- ऑटो जनरेट शेड्यूल के साथ सदस्यता के लिए सीरियल नियंत्रण प्रणाली
- बिल रजिस्टर पीढी के साथ बजट मॉड्यूल,

मल्टी—बजट प्रमुखों का प्रबंधन करता है

- किसी भी संरचित स्रोत से डेटा आयात करें (MARC21 / एक्सेल)
- अलग—अलग सदस्यता मॉड्यूल के साथ अच्छी तरह से संपूर्ण वेब आधारित ओपीएसी इंटरफेस
- ऑटो—एक्सेशन नंबर के साथ सिंगल क्लिक के साथ बंटवारे में बहुसंख्यक प्रतियां स्वीकार नहीं की जा सकतीं।
- पीडीएफ या अन्य प्रारूपों में डिजिटल फाइलों के साथ ई—पुस्तक को प्रबंधित करता है, ई—बुक व्यूअर की सुविधा प्रदान करता है।
- फोटो गैलरी उपलब्ध फोटो और संगठनों की तस्वीरें अपलोड करने के लिए — पुस्तकालय वेब साइट पर प्रकाशित।
- गैर—किताब सामग्री के लिए मेटा डेटा का प्रबंधन भी कानूनी दस्तावेजों के लिए डेटाबेस फ़ील्ड्स शामिल करता है, इस प्रकार कानून पुस्तकालयों के लिए भी उतना ही उपयुक्त है।
- बारकोड / एसएमएस / ईमेल / स्मार्ट कार्ड / आरएफआईडी प्रौद्योगिकी के साथ अच्छी तरह से एकीकृत
- पुस्तकालयों में प्रचलित पुस्तकालय प्रौद्योगिकी और आईसीटी के साथ अनुपालन।

## क्लाउड पर ई-ग्रन्थालय 4.0 एक्सेस कैसे करें?

एक बार पुस्तकालय एनआईसी से ई—ग्रंथालय 4.0 का एक ऑनलाइन अकाउंट प्राप्त करता है, तो यूजर उपयोगकर्ता आवेदन तक पहुंच सकता है http://eg4.nic.in ई—ग्रंथालय 4.0 — लाइव लिंक पर क्लिक किया जा सकता है और फिर क्लस्टर का चयन करें — तब प्रवेश करके एक्सेस किया जा सकता है।

पुस्तकालय अध्यक्ष
होटल प्रबंधन खानपान प्रौद्योगिकी तथा
अनुप्रयुक्त पोषाहार संस्थान
वीर सुरेन्द्र साई नगर
भुवनेश्वर—7, ओड़ीशा

ई—ग्रंथालय परियोजना के अंतर्गत आईएचएम पुस्तकालय का सांख्यिक आंकड़ा (पुस्तकों और प्रयोक्ताओं की कुल संख्या)

ई—ग्रंथालय आई.एच.एम, भुवनेश्वर पुस्तकालय का खोज पेज

पर्यटन

## स्वच्छ भारत मिशन

# पर्यटन एवं रोजगार

–विश्वरंजन

भारत की धरती अतुल्य अद्भुत सुंदर दृश्य और सौंदर्य से भरा हुआ है। हम सभी इस अतुल्य धरती पर जन्म पाकर अपने आप को सौभाग्यशाली समझते हैं, हमें गर्व होता है कि हम भारत भूमि पर अनेक ऋतुएं एवं विभिन्न पर्यटन स्थल तथा नाना प्रकार के व्यंजन इस भूमि पर देखने को मिलते है और हमें इसे संभालना है। विभिन्न ऋतुओं में विभिन्न पर्यटन स्थल पर नाना प्रकार के व्यंजन उपलब्ध है। उसकी शुद्धता और स्वच्छता कैसे बनाई रखी जाए उसके लिए पर्यटन मंत्रालय पुरजोर कोशिश कर रहा है। हमारी अनेक प्रकार के जायकेदार व्यंजन है जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं तथा उस स्वादिष्ट जायके को सैलानी एक बार चखना जरूर चाहता है लेकिन स्वच्छता के प्रति सजगता में हमारी थोड़ी सी लापरवाही उनके पूरे जायके को बदल कर रख देती है। सैलानी कहीं का भी हो किसी पर्यटन स्थल का भ्रमण करते समय वहां की सफाई को भी देखता है। यदि वहां गंदगी फैली होगी तो वह अगली बार वहां नहीं आना चाहेगा ।

एक कहावत सभी ने सुनी होगी कि 'हर कामयाब आदमी के पीछे किसी न किसी का हाथ होता है' ठीक उसी तरह इस भारत को सुखद, समृद्धि और प्रगतिशील बनाने में भी प्रत्येक भारतवासी का हाथ होना चाहिए। भारत की तरक्की में हम सभी को अपना उत्कृष्ट योगदान देना होगा। आइए भारत को स्वच्छ सुंदर और अविस्मरणीय बनाने में सजगता की मुहिम कि चलाई जाए। हमारी एक छोटी सी कोशिश अगर चिंगारी बन सकती है तो इस देश मैं स्वच्छता के प्रति जो समस्या उत्पन्न हो रही है वे जल्द ही निपटा लिया जाएगा।

स्वच्छता बनाये रखने के लिए फल बेचने वालों को दिये गये लिफाफे ताकि लोग छिलके इन लिफाफों में डाले

पर्यटक को लुभाने के लिए प्रथमतया उस केंद्र पर स्वच्छता देखी जाती है और स्वच्छता के लिए हमें सफाई कर्मियों और व्यवस्थापकों की जरूरत होती है और इस क्षेत्र में बहुतायत मात्रा में कंपनियां लोगों को रोजगार मुहैया करा रही है इसमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कंपनियां कार्यरत है पर्यटन मंत्रालय ने इसके लिए अनेक उपाय किए हैं, साथ ही साथ स्वच्छ भारत अभियान और एक कदम स्वच्छता की ओर में

*सहायक प्रोजेक्ट मैनेजर, पीएमयूएसडी, पर्यटन मंत्रालय

अग्रणी भूमिका निभाती रही है स्वच्छ और गुणवत्ता से जुड़ें प्रशिक्षण कार्यक्रम को ''हुनर से रोजगार तक'' के अंतर्गत चला रही है यह कार्यक्रम सिर्फ प्रशिक्षण ही देना नहीं है साथ ही साथ उन सभी प्रशिक्षित व्यक्तियों को रोजगार भी मुहैया कराना है। पर्यटन मंत्रालय की इस पहल से भारत के अनेक युवाओं और बेरोजगारों को रोजगार मिल रहा है। मंत्रालय ने पर्यटन क्षेत्र में रोजगार के लिए अनेक कार्यक्रम और योजनाएं बनाई है तथा मुस्तैदी से संचालित की जा रही हैं ।

**स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा आरंभ किया गया राष्ट्रीय स्तर का अभियान है जिसका उद्देश्य गलियों, सड़कों तथा आस पास की संरचनाओं को साफ–सुथरा रखना है। यह अभियान महात्मा गांधी के जन्मदिवस 02 अक्टूबर 2014 को आरंभ किया गया।**

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने स्वतंत्रता आन्दोलन का नेतृत्व कर देश को आजादी दिलाई, लेकिन 'क्लीन इण्डिया' का उनका सपना पूरा नहीं हुआ। महात्मा गांधी बहुत पहले से ही लोगों को अपने आसपास साफ–सफाई बनाए रखने के लिए राष्ट्र को संदेश दिया करते थे।

सही मायनों में आधिकारिक रूप से भारत सरकार ने 1 अप्रैल 1999 को व्यापक ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम की घोषणा की थी और पूर्ण स्वच्छता अभियान शुरू किया जिसे बाद में, 1 अप्रैल 2012 को तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा निर्मल भारत अभियान नाम दिया गया। स्वच्छ भारत अभियान के रूप में 24 सितंबर 2014 को केंद्रीय मंत्रिमंडल की मंजूरी से निर्मल भारत अभियान का पुनर्गठन कर स्वच्छ भारत अभियान कर दिया गया था।

भारत सरकार द्वारा निर्मल भारत अभियान, 1999 से 2012 तक पूर्ण स्वच्छता के एक अभियान शुरू किया गया था। इस कार्यक्रम में समुदाय की अगुवाई में पूर्ण स्वच्छता के सिद्धांतों का पालन करते हुए अपने ग्राम तथा उसके आस–पास सफाई रखना था। इस स्थिति को हासिल करने वाले गांवों को निर्मल ग्राम पुरस्कार नामक कार्यक्रम के तहत नकद पुरस्कार प्रदान किए गए थे।

स्वच्छ भारत का उद्देश्य व्यक्तिगत और सामुदायिक शौचालयों के निर्माण के माध्यम से खुले में शौच की समस्या को समाप्त करना भी है। स्वच्छ भारत मिशन शौचालयों के उपयोग और निर्माण की निगरानी के जवाबदेही तंत्र को स्थापित करने की भी पहल करेगा। इसके माध्यम से देश भर में लोगों ने एकल रूप से या गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से गांवों में शौचालयों का निर्माण किया जा रहा है जिससे हजारों राज–मजदूरों को भी रोजगार के अवसर मिले है।

**श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छ भारत मिशन की नई दिल्ली, राजपथ पर शुरूआत करते हुए कहा था कि ''एक स्वच्छ भारत के द्वारा ही देश 2019 में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर अपनी सर्वोत्तम श्रद्धांजलि दे सकते हैं।'' 2 अक्टूबर, 2014 को स्वच्छ भारत मिशन देश भर में व्यापक तौर पर राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में शुरू किया गया था।**

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा चलाया गया सबसे महत्वपूर्ण स्वच्छता अभियान है। श्री नरेन्द्र मोदी ने इंडिया गेट पर स्वच्छता के लिए आयोजित एक प्रतिज्ञा समारोह की अगुआई की थी। जिसमें देश भर से आए हुए लाखों सरकारी कर्मचारियों ने भाग लिया। स्वच्छता के महत्व को समझाते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इसके साथ ही साथ स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को हल करने की बात भी उठाई है। स्वास्थ्य की बहुत सी समस्यायें लगभग आधे भारतीय परिवारों को घर में उचित साफ–सफाई न होने के कारण झेलनी पड़ रही हैं।

स्वच्छता के जन अभियान की अगुआई करते हुए प्रधान मंत्री ने जनता को महात्मा गांधी के स्वच्छ और स्वास्थ्यवर्धक वातावरण वाले भारत के निर्माण के सपने को साकार करने के लिए प्रेरित किया। स्वच्छ भारत अभियान को पूरे राष्ट्र के लिए एक जन–आंदोलन का रूप देते हुए उन्होंने लोगों को याद दिलाया कि न तो स्वयं गंदगी फैलानी चाहिए और न ही किसी और को फैलाने देना चाहिए। उन्होंने ''न गंदगी करेंगे, न करने देंगे।'' का मंत्र भी दिया।

देश के जाने–माने और प्रसिद्ध लोगों के इस अभियान में शामिल होने से स्वच्छता अभियान एक राष्ट्रीय आंदोलन का रूप ले चुका है। स्वच्छ भारत अभियान के संदेश ने लोगों में एक दायित्वबोध की अनुभूति जगा दी है। अब जबकि नागरिक पूरे देश में स्वच्छता के कामों में सक्रिय रूप से सम्मिलित हो रहे हैं, महात्मा गांधी द्वारा देखा गया 'स्वच्छ भारत' का सपना अब साकार होने लगा है।

इस काम में एनजीओ और स्थानीय सामुदायिक केन्द्र भी शामिल हैं, नाटकों और संगीत के माध्यम से सफाई–सुथराई और स्वास्थ्य के गहरे संबंध के संदेश को लोगों तक पहुंचाने के लिए बड़े पैमाने पर पूरे देश में स्वच्छता अभियान चलाये जा रहे हैं।

पर्यटन किसी देश का हो वह उस देश के धरोहर और महत्ता को दर्शाता है। हम सभी भारत वासियों ने किसी न किसी धरोहर को अवश्य ही देखा होगा जो आपके समीप है। बस एक मुहिम चलाना है और जागरूकता फैलाना है कि जो हमें विरासत में मिला है उसे साफ सुथरा कर पर्यटक स्थल की तरह कैसे विकसित की जाए। क्योंकि पर्यटक स्थल पर रोजगार की संभावना मिलती रहती है चाहे वह टूरिस्ट गाइड का हो या मीना बाजार लगा कर चाहे वह खाद्य पदार्थ बेचकर या दिनचर्या के सुविधा प्रदान कर, संभावनाएं पर्यटक स्थल पर रोजगार की बहुतायत मात्रा में है हमें बस एक कदम स्वच्छता की ओर बढ़ाना होगा हर किसी की आशा होती है कि वह स्वच्छ और सुंदर अविस्मरणीय जगह एवं वस्तुओं को देखे। हमारा भारत अतुल्य भारत है मुझे गर्व है की में अतुल्य भारत की भूमि पर पला–बढ़ा हूँ।

मोबाइल : 9852583535

E-mail : vishwranjan@yahoo.com

**क्या आप जानते हैं कि भारत की प्रसिद्ध फिल्म ''मुगल–ए–आज़म'' को शुरू में तीन भाषाओं में– हिन्दी, अंग्रेजी और तमिल – बनाया जा रहा था। उस समय आजकल की तरह के आधुनिक उपकरण और सुविधाएं नहीं थी। किसी भी भाषा में फिल्म एक साथ ही बनती थी। इसलिए तमिल संस्करण बनाने में बहुत कठिनाईयां आ रही थी। आखिर में केवल हिंदी में ही फिल्म बनाने का फैसला हुआ और अंग्रेजी संस्करण को इंग्लैंड में 'डब' कराया गया। –हिंदुस्तान टाइम्स से साभार**

## इंग्लैंड में

# 'राष्ट्रीय समोसा सप्ताह'

–प्रस्तुति : रामबाबू

अगर आपसे पूछा जाए कि आपका फेवरिट स्नैक कौन सा है तो शायद आपका जवाब होगा – समोसा। भारत में समोसा ऐसा स्नैक है जो छोटे से लेकर बड़े फंक्शन तक में खूब पसंद किया जाता है। सुबह का नाश्ता हो या शाम की चाय, समोसा कहीं भी एडजस्ट हो जाता है। भारत में अगर सर्वे किया जाए तो स्नैक लवर्स को सबसे ज्यादा समोसा ही पसंद होगा इतना ही नहीं छोटे गांव या कस्बे की बात हो या बड़े मेट्रो शहर की, कश्मीर की वादियां हों या फिर साउथ का समंदर भारत में ऐसी कोई जगह नहीं है जहां समोसे नहीं मिलते हों। मगर आश्चर्य की बात तो यह है कि समोसा अब भारत में ही नहीं बल्कि भारत की सीमाओं को लांघ कर सात समंदर पार ब्रिटेन पहुंच गया है।

**समोसा भारत का सबसे स्वादिष्ट व्यंजन है जिसे कई रूपों में बनाया और बेचा जाता है। इंग्लैंड में अगले महीने 9 से 13 अप्रैल तक 'राष्ट्रीय समोसा सप्ताह' का आयोजन होने जा रहा है। इसमें छह शहर भाग लेंगे। यह एक चैरिटी प्रोग्राम होगा जिसमें भाग लेने वाले लोग समोसा बनाएंगे, बेचेंगे और स्वयं भी खाएंगे।**

इंग्लैंड में समोसा सप्ताह का आयोजन लिसेस्टर के एक मीडिया कारोबारी श्री रोमेल गुलजार कर रहे हैं। उनका मानना है कि समोसा ने देश–दुनिया की कई बाधाओं को तोड़कर इंग्लैंड के अलग–अलग समुदायों को एक सूत्र में बांधने का काम किया है।

उन्होनें इंडियन एक्सप्रेस को बताया, ब्रिटेन के अधिकतर लोग इसे चाय के साथ खाना पसंद करते हैं। लेकिन इसकी खासियत इससे भी कहीं ज्यादा है। हम समोसा के माध्यम से दक्षिण एशिया की समृद्ध संस्कृति और खान–पान की विरासत को लोगों तक पहुंचाना चाहते हैं। तिकोने आकार का यह व्यंजन मूल रूप से दक्षिण पूर्व की देन है। बहुत पहले सफर करने वाले सौदागर इसका उपयोग करते थे/ खाते थे। शायद यही कारण है समोसे ने भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश से लेकर अमेरिका और ब्रिटेन तक अपना सफर पूरा किया।

रोमेल गुलजार लिसेस्टर स्थित एक न्यूज सर्विस पुकार न्यूज के संपादक हैं। इस कार्यक्रम के अभियान में बर्मिंघम, मैनचेस्टर, कॉवेंट्री, नॉटिंघमशायर और रैडेलेट के लोग हिस्सा ले रहे हैं। इस कार्यक्रम में 'समोसाइटिंग कॉन्टेस्ट', पॉप अप समोसा और टेस्टिएस्ट समोसा अवॉर्ड्स भी दिए जाएंगे। इस मुहिम को 'मेंटल हेल्थ चैरिटी लैंप' और 'केयर ऑफ पुलिस सरवाइवर्स' नामक गैर सरकारी संगठनों ने मिलकर शुरू किया है और इसका उद्देश्य उन पुलिस अधिकारियों के परिवारों को मदद पहुंचाना है जिन्होंने काम के दौरान अपनी जिंदगी गंवा दी।

हैरानी की बात तो यह है कि भारत के इस व्यंजन का ब्रिटेन भी अपने यहां एक खास अंदाज में स्वागत कर रहा है। ब्रिटेन के लिए यह स्नैक बेहद

*कनिष्ठ अनुवादक, पर्यटन मंत्रालय

अनोखा है। मगर दुनिया भर में समोसे की लोकप्रियता को देखते हुए ब्रिटेन में इस स्नैक को वहां के नागरिकों के बीच अनोखे ढंग से पेश किया जा रहा है। दरअसल ब्रिटेन में समोसे को इंट्रोड्यूस करने के लिए 'नेशनल समोसा डे' मनाया जा रहा है। यह ईवेंट 9 अप्रैल से 13 अप्रैल तक होगा। इसमें देश के छह शहर भाग लेंगे। यह एक तरह से चैरिटी प्रोग्राम होगा जिसमें भाग लेने वाले लोग समोसा बनाएंगे, बेचेंगे और खाएंगे ।

पाकिस्तान में जन्मे गुलजार बाद में दुबई आ गए। उसके बाद स्थाई रूप से इंग्लैंड में रहने लगे। गुलजार कहते हैं, इस प्रतिस्पर्धा में आने के लिए हम कोई। हमें लगता है इसकी शुरुआत आगे चलकर काफी लोकप्रिय हो सकती है।

2016 में एक ऐसा ही लिसेस्टर करी अवॉड्र्स भी शुरू किया गया था। गुलजार को लगता है कि दुनिया का सबसे स्वादिष्ट समोसा दिल्ली में बनता है, इसीलिए वे इंग्लैंड में समोसा सप्ताह आयोजित कर इसे लोगों तक पहुंचाना चाहते हैं। 13 अप्रैल, 2018 राष्ट्रीय समोसा सप्ताह के समापन के अवसर पर विजेताओं को लिसेस्टर करी अवॉड्र्स 2018 दिया जाएगा। इसमें अलग–अलग शहरों के 22 चुनिंदा रेस्त्रां हिस्सा लेंगे।

कविता

# नदी की वेदना

–विश्वरंजन

तू धार है!

तू प्यार है!

तू गीत है!

तू मनमीत है ।

उच्च शिखर पर पहुंचने वाली तू जीत है
तू जीत है तू जीत है।

तू अंजू है!, विनय है!

मेरे जीवन का तू लय हैं

जो कण तुझमे घुला है !

उस कण के मन में,

क्या मेरी भी जगह है।

तू एहसास है ।

तू सब के मन का विश्वास है ।

तू अमृत है, परम्परा की रीत है।

तू रुकना नही, उस मंजिल से पहले

ये मेरी तमन्ना की रीत है!!

सहायक प्रोजेक्ट मेंनेजर, पी एम यू एस डी
मोबाइल : 9852583535
E-mail : vishwranjan@yahoo.com

पर्यटन

# आतिथ्य एक जीवनशैली तथा एक आजीविका

–एल. के. गांगुली

भारत आज आतिथ्य एवं पर्यटन के क्षेत्र में तीव्र गति से प्रगति पथ के पर अग्रसर है। आतिथ्य उद्योग के समस्त अग्रणी वैश्विक ब्रांड आज देश भर में अपनी परियोजनाएँ स्थापित कर रहे है। देश के युवा छात्रों के लिए यह उपयुक्त समय है कि वह इस व्यवस्था की विधिवत शिक्षा लेकर एक स्वर्णिम भविष्य के भागीदार बने।

डिग्री कार्यक्रम चलाता है। इस रोजगारोन्मुखी कार्यक्रम में प्रवेश संयुक्त प्रवेश परीक्षा के माध्यम से किया जाता है। छात्रों को परीक्षा में उनकी वरीयता एवं स्व–रुचि के आधार पर संस्थान आबंटित किए जाते हैं। राष्ट्रीय परिषद अपने सभी संबद्ध संस्थानों में समान पाठ्यक्रम एवं परीक्षा का आयोजन करता है।

संकाय सदस्यों का प्रशिक्षण

देश में कई संस्थान एवं विश्वविद्यालय होटल प्रबंध पाठ्यक्रम चलाते हैं। पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन राष्ट्रीय होटल प्रबंध एवं केटरिंग तकनॉलॉजी परिषद, इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण घटक है। यह अपने 58 संबद्ध संस्थानों के माध्यम से (जिसमे 8 संस्थानों की वृद्धि संभावित है) त्रि–वर्षीय बीएससी

प्रशिक्षण की गुणवत्ता बरकरार रखने के उद्देश्य से राष्ट्रीय परिषद अपने संबद्ध संस्थानों के संकाय सदस्यों के लिए भी समय–समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाता रहता है। उद्योग में सामयिक एवं नवीन रुझानों के अनुसार इसकी आधुनिकता बनाए रखने के लिए पाठ्यक्रमों में क्रमिक परिवर्तन भी किए

*निदेशक, राष्ट्रीय होटल प्रबंध एवं केटरिंग तकनॉलॉजी परिषद, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

जाते हैं। यह उद्योग के नवीनतम रुझानों के अनुरूप पाठ्यक्रम को लगातार आधुनिकतम बनाता है। यह पर्यटन मंत्रालय के साथ संस्थानों के आधुनिकीकरण के लिए अनुदान जारी करने का समन्वय करता है और युवाओं की कौशल दक्षताओं के कई कार्यक्रम चलाता है। राष्ट्रीय परिषद मेधावी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति, पुरस्कार व अक्षय निधि प्रदान करता है। यह संस्था उद्योग साझेदारी के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करने के साथ–साथ विशेष क्षेत्रों में आवश्यकता आधारित कार्यक्रम भी प्रदान करता है।

होटल प्रबंध संस्थानों का देश में न केवल इस क्षेत्र में मार्ग–दर्शक अपितु आतिथ्य शिक्षा के सर्वोत्तम संस्थानों  के रूप में एक लंबा इतिहास है। इनमें से प्रमुख होटल प्रबंध संस्थान, पूसा नई दिल्ली; होटल प्रबंध संस्थान मुंबई; होटल प्रबंध संस्थान चेन्नई; होटल प्रबंध संस्थान कोलकाता; होटल प्रबंध संस्थान बंगलौर इत्यादि है। गत कुछ वर्षों में इस क्षेत्र में कई निजी संस्थानों ने भी पाठयक्रम शुरू किए है, इनमे से कुछ संस्थान सराहनीय कार्य कर रहे हैं किन्तु यह देखा गया है कि कई निजी संस्थानों में गुणवत्ता को लेकर प्रतिबद्धता का अभाव है। राष्ट्रीय परिषद से संबद्धित संस्थानों में मूलभूत सुविधाओं को लेकर मापदंड पूर्व निर्धारित हैं। यह इन संस्थानों की प्रयोगशालाओं, शिक्षकों, पाठ्यक्रमों, उद्योग से सामंजस्य इत्यादि से भलीभाँति परिलक्षित होता है।

हमारे संस्थानों के प्रशिक्षक हमारी सबसे बड़ी शक्ति हैं। इन्होने अगणित संख्या में उद्योग को प्रबन्धक दिये हैं। आतिथ्य उद्योग की नज़र में आज भी राष्ट्रीय परिषद प्रशिक्षित मानव संसाधनों का सबसे बड़ा प्रदायक है। आईएचएम में होनी वाली इतनी सारी कैम्पस प्लेसमेंट गतिविधि इसका जीता जागता साक्ष्य है।

निजी क्षेत्र में आतिथ्य शिक्षा संस्थानों की अल्प अवधि में तेज़ी से हुई वृद्धि, कार्यक्रमों की बहुतायत और अनियमित शुल्क संरचना, आतिथ्य पाठ्यक्रमों की तलाश करने वाले उम्मीदवारों के दिमाग में वास्तविक भ्रम पैदा कर रहे हैं। इसलिए छात्रों को सावधान रहना चाहिए और केवल उन्ही अनुमोदित संस्थानो और पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेना चाहिए जो किसी विश्वविद्यालय से संबद्ध हो। उन्हें यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि खुले अथवा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से पाठ्यक्रम की पेशकश करने वाले विश्वविद्यालय अपने उस अधिकार क्षेत्र से आगे नहीं जा सकते जिसके लिए उनके पास उचित संबद्धता है अतः  धोखाधड़ी से अपना बचाव करें।

आतिथ्य उद्योग उन प्रतिभाशाली छात्रों के लिए खुला है जिनमें कड़ी मेहनत करने का स्वभाव, अभिवृद्धि व क्षमता है उन्हे अपनी अभिरुचि और व्यक्तित्व के आधार पर इस क्षेत्र का चयन करना चाहिए। इस वर्ष संयुक्त प्रवेश परीक्षा 28 अप्रैल 2018 को प्रातः 10 बजे से अपराह्न 1.00 बजे तक आयोजित की जाएगी जिसके लिए दिनांक 1/07/2018 को छात्र की अधिकतम आयु 22 वर्ष (अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति/शारीरिक रूप से अक्षम उम्मीदवार के लिए 25 वर्ष) तथा एक विषय के रूप में अँग्रेजी के साथ 10+2 उत्तीर्ण होना चाहिए।

(राष्ट्रीय होटल प्रबंध एवं केटरिग तकनॉलॉजी परिषद पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त निकाय है )

पर्यटन

# भारत में पर्यटन और सुग्राहीकरण कार्यक्रम

–सुधीर कुमार

भारत का इतिहास और सभ्यता अत्यंत प्राचीन और विविध रंगी है और यहाँ प्रत्येक क्षेत्र की अपनी अनूठी संस्कृति है। इस कारण यह पर्यटकों के आकर्षण का विशेष केंद्र बन गया है और भारत में पर्यटन उद्योग तेज़ी से फल फूल रहा हैं।

भारत के लगभग प्रत्येक हिस्से में ऐतिहासिक स्मारक पाए जाते हैं, जो इसके गौरवशाली अतीत की झलक प्रस्तुत करते हैं। इनकी वास्तु कला पर्यटकों को विशेष रूप से आकर्षित करती है। मुग़ल कालीन स्थापत्य वास्तु कला से बने हुए ऐतिहासिक स्मारक जैसे कि विश्व प्रसिद्ध ताज महल, लाल किला, कुतुब मीनार के अलावा उनके द्वारा बनवाए सुन्दर किले, मकबरे, मस्जिदें और बागीचे मुगलों के वास्तुकला कौशल की कहानी बयान करते हैं। प्राचीन समय में दक्षिण के हिन्दू राजा मंदिर निर्माण में बहुत रूचि लेते थे। दक्षिण भारत के मंदिर अपने निर्माणकर्ता राजाओं की संस्कृति की बानगी पेश करते हैं। भारत के सभी ऐतिहासिक स्मारक विविध प्रकार की वास्तुकला, चित्रकारी और स्थापत्यकला से युक्त हैं। इसी प्रकार, वाराणसी, गया, लेह, धर्मशाला, ओडिशा में कोणार्क और पूरी के मंदिर, तमिलनाडु में मीनाक्षी मंदिर तथा दिल्ली में हाल ही में निर्मित अक्षर धाम मंदिर जैसे कई अन्य सांस्कृतिक स्थल भी बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते है।

*सेवानिवृत्त सहायक महानिदेशक, पर्यटन मंत्रालय

पर्यटन से सांस्कृतिक संबंधों का विस्तार होता है। यह केवल लोगों का आवागमन नहीं है। मेहमान का असर मेजबान पर भी पड़ता है। इसकी प्रतिक्रिया भी होती है। यह अच्छे और खराब दोनों रूपों में हो सकता है। आप देखेंगे कि बहुत से पर्यटक जब राजस्थान आते हैं तो अपना पहनावा छोड़कर वहां के स्थानीय वस्त्र धारण कर लेते हैं।

पर्यटन से राष्ट्रीय एकता भी बढ़ती है। वैश्विक स्तर पर भी एक दूसरे को समझने का अवसर मिलता है। जब लोग घूमने फिरने के लिए एक–दूसरे स्थान पर जाते हैं तो उस स्थान के रहन–सहन और व्यंजनों के बारे में भी जानते हैं। जब घरेलु पर्यटन कम था तब दक्षिण भारत में उत्तर के प्रति अनर्गल बातें फैलाई गई, हिंदी विरोधी आंदोलन चले। पर्यटन बढ़ा तो ऐसी संकुचित सोच कम होने लगी। आज उत्तर के लोग तिरूपति, रामेश्वरम के अलावा केरल के समुद्रतटों पर भी जा रहे हैं, इसी तरह दक्षिण के लोग वैष्णव देवी, हरिद्वार आदि की यात्राएं कर रहे हैं। पर्यटन स्थलों के कई व्यावसाइयों ने दूसरे प्रदेशों की भाषाएं भी सीख ली हैं।

## पर्यटन में भारतीय संस्कृति का महत्व..

राजस्थान तो जैसे पर्यटकों के लिए आकर्षण का गढ़ ही है। यहां के लोक नृत्य, मेले आदि पर्यटकों को खूब आकर्षित करते हैं। आज भी विदेशों से आने वाले बहुत से पर्यटक अक्सर अपनी यात्रा के कार्यक्रम

इस प्रकार बनाते है कि वे राजस्थान के पुष्कर मेले और खजुराहों के उत्सव में जरूर शामिल हो सकें।

भारतीय चिकित्सा पद्धतियों में आयुर्वेद और योगा थेरेपी भी विदेशी सैलानियों को बहुत आकर्षित कर रही है। प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से उच्च सांद्रता की दवाओं के उपयोग से बचने के लिए विदेशी आयुर्वेद और योगा की इन पद्धतियों से बिमारियों का इलाज कराने भारत की ओर रूख कर रहे हैं। अब पर्यटन पैकेजों में योगा पैकेज भी शामिल किए जा रहे हैं। आज बहुत से पर्यटक हमारे देश का दौरा करने की योजना बनाते समय योग केन्द्रों को भी पसंदीदा स्थल बना रहे हैं।

अतुल्य ! भारत
Incredible !ndia
www.incredibleindia.org

2002 में, पर्यटन मंत्रालय ने भारत का, एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल के रूप में संवर्धन करने के लिए एक अभियान शुरू किया था, जिसका नाम रखा गया 'इंक्रेडिबल इंडिया' यानि "अतुल्य भारत"। इस वाक्यांश को मंत्रालय द्वारा एक नारे के रूप में अपनाया गया था। इसमें पर्यटकों के लिए उनकी पसंद के गंतव्य के रूप में भारत का प्रचार करने के उद्देश्य से एक एकीकृत संचार रणनीति तैयार की गई। अतुल्य भारत अभियान को इस प्रकार डिजाइन किया गया है कि भारतीय संस्कृति, इतिहास, योगा, आध्यात्म आदि के विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित करके भारत को एक आकर्षक पर्यटन स्थल के रूप में प्रस्तुत किया जाए। अभियान वैश्विक स्तर पर आयोजित किया गया और पर्यटन उद्योग तथा पर्यटकों ने इसकी काफी प्रशंसा की है।

पर्यटन मंत्रालय ने देश में पर्यटक प्रवाह बढ़ाने के लिए पर्यटन स्थलों के उन्नयन के लिए "स्वदेश दर्शन" तथा "प्रशाद" नामक योजनाएं आरंभ की है।

## अतिथि देवो भव:

'अतिथि देवो भव:' का लक्ष्य पर्यटन के प्रभावों से स्थानीय लोगों को भारत की विरासत, संस्कृति, स्वच्छता और आतिथ्य के संरक्षण के बारे में जागरूक बनाना है। इसने पर्यटकों के प्रति ज़िम्मेदारी की भावना को फिर से स्थापित करने और भारत के लिए विदेशी पर्यटकों के विश्वास को एक पसंदीदा अवकाश गंतव्य के रूप में सुदृढ करने का भी प्रयास किया गया है। 2008 में, पर्यटन मंत्रालय ने स्थानीय आबादी को विदेशी पर्यटकों से अच्छे शिष्टाचार और व्यवहार के बारे में शिक्षित करने के लिए एक अभियान अतिथि देवो भवः आरंभ किया था, जिसे फिल्म अभिनेता आमिर खान प्रस्तुत करते थे।

'अतिथि देवो भव' की संस्कृति आज भी हमारी रगों में बसी है। मुम्बई का ताज होटल 'अतिथि देवो भव' और हमारे अतिथ्य का एक सशक्त उदाहरण है। याद कीजिए, 28 नवम्बर, 2008 को मुम्बई पर हुए आतंकवादी हमले की घटना। ताज होटल के कर्मचारियों ने आंतकी हमले के समय होटल से भागने के बजाय देश में आए अतिथियों की रक्षा करना अपना परम कर्तव्य समझा। कई कर्मचारियों ने होटल में ठहरे अतिथियों (विशेषकर विदेशी अतिथियों) की रक्षा करते हुए अपने प्राण गंवा दिए थे। उनके इस कार्य की पूरे विश्व में सराहना हुई और इससे भारत का सम्मान बढ़ा है। कई बड़े विदेशी होटलों के प्रबंधक ताज होटल के कर्मचारियों के इस व्यवहार पर हैरान थे। इससे हमारे लोगों ने दुनिया के सामने यह सिद्ध कर दिया कि हम आज भी अतिथि को देवता के समान मानते हैं क्योंकि हमारे ऋषि मुनियों ने कहा था "अतिथि देवो भव"।

## पर्यटन के संवर्धन के लिए...

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक उपायों पर विचार करने और सिफारिश करने के लिए एक पर्यटन सलाहकार बोर्ड गठित किया गया है। बोर्ड पर्यटक प्रवृत्तियों की समीक्षा करता है और उचित उपायों का सुझाव देता है।

अक्टूबर 1966 में, पर्यटन क्षेत्र में आधारभूत अवसंरचना के विकास के लिए भारत पर्यटन विकास निगम (ITDC) नामक एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम स्थापित किया गया था। इसका ब्रांड अशोक समूह भारत की सबसे बड़ी आवास – श्रृंखला संचालित करता है।

जनवरी, 1983 में, सरकार ने भारतीय पर्यटन और यात्रा प्रबंधन संस्थान की स्थापना की।यह संस्थान सेमिनार आयोजित करता है, होटल प्रबंधन, रेस्तरां प्रबंधन, पर्यटन योजना आदि पर कार्यशालाओं का आयोजन करता है। अब तो यह संस्थान गाइडों को भी प्रशिक्षित कर रहा है।

देश में सभी राज्य सरकारों के पर्यटन विभाग हैं। वह पर्यटक रूचि के स्थानों के बारे में पर्यटकों को जानकारी देते हैं। विदेशों में हमारे देश के दूतावास भी भारत में पर्यटन रूचि के स्थानो के बारे में प्रचार कर सकते हैं।

घरेलू एकता राष्ट्रीय एकता, एकीकरण, सांस्कृतिक सद्भाव, सामाजिक सहिष्णुता और एकजुटता के विभिन्न उद्देश्यों को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यात्रा और संचार के तेज़ साधनों ने दूरदराज के स्थानों को देश में पहले से कहीं ज्यादा पर्यटक रुचि के रूप में प्रदर्शित किया है। इसके परिणामस्वरूप लोगों के देश के विभिन्न हिस्सों में यात्रा करने और उनके बारे में पहला ज्ञान रखने की इच्छा बलवती हुई हैं। जीवन स्तर में तेजी से सुधार और मध्यम वर्गों की आय में वृद्धि के साथ, इन वर्षों के दौरान घरेलू पर्यटन की संभावना काफी बढ़ी है। पर्यटक आकर्षण को विविधता देने के लिए, समुद्र तट और पहाड़ी रिसॉट्र्स का विकास करते हुए आधारभूत सुविधाओं को मजबूत किया गया है।

## आतिथ्य योजना

विदेशों के संभावित बाजारों में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन मंत्रालय की आतिथ्य योजना एक महत्वपूर्ण योजना है। इस योजना के अंतर्गत, पर्यटन मंत्रालय यात्रा लेखकों, पत्रकारों, फोटोग्राफरों, ट्रैवल एजेंटों और टूर ऑपरेटरों, गणमान्य हस्तियों, वक्ताओं आदि को आमंत्रित करता है। इन अतिथियों को मंत्रालय द्वारा आयोजित अनेक महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को कवर करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। इसी कड़ी में पर्यटन मंत्रालय ने ब्रांडिंग और विपणन को एक प्रभावी उपकरण के रूप में सोशल मीडिया के महत्व को ध्यान में रखते हुए सोशल मीडिया पर प्रभावकारी अभियान "द ग्रेट इंडिया ब्लॉग ट्रेन" का आयोजन भी किया है।

## आय का महत्वपूर्ण स्रोत -

पर्यटन वर्तमान में भारत में तीसरा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाला क्षेत्र है। जनवरी–मार्च, 2018 में पर्यटन से देश को 8,228 मिलीयन डॉलर यानि 52,916 करोड़ रूपए विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई।

पर्यटन के लिए और अच्छी सुविधाएँ तैयार कर उन्हें अच्छी स्थिति में बनाये रखना चाहिए। इसके साथ ही राजमार्गों और मुख्य सड़कों के किनारे बने रेस्तरानों और रेस्ट हाउसों को भी सुव्यवस्थित रूप से

बनाए जाने की जरूरत महसूस की जाती रही है ताकि पर्यटक सड़क मार्ग की लम्बी यात्रा के बाद कुछ समय आराम भी कर सकें।

सुशिक्षित गाईडों की आवश्कता है जो पर्यटकों का मार्गदर्शन कर सकें और पर्यटन महत्व के सभी स्थानों के इतिहास और महत्व का सही ढंग से वर्णन कर सकें। अनेक सुन्दर स्थान आदि होने के कारण भारत में पर्यटन लगातार विकास कर रहा हैं।

पिछले चार दशकों में भारत में अंतरराष्ट्रीय पर्यटन काफी हद तक बढ़ गया है। देश में विदेशी पर्यटक आगमन ने लगभग 51 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है।

## प्रचार

भारत में पर्यटकों को आकर्षित करने और घरेलू व अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों की सुविधा के लिए विभिन्न राज्यों के पर्यटन विभाग भी अनेक कार्यक्रम आयोजित करते हैं जिनमें श्रीनगर में गोल्फ ओपन टूर्नामेंट, लेह में सिंधु दर्शन, नई दिल्ली में विरासत महोत्सव, दिल्ली के निकट हरियाणा में सूरज कुंड मेला, हिमाचल प्रदेश में पैरा ग्लाइडिंग और कोच्चि में अंतर्राष्ट्रीय नौका प्रदर्शनी आदि उल्लेखनीय हैं।

ताज महल, वाराणसी के मंदिर और घाट, सारनाथ, बोध गया, कोणार्क का मंदिर के अलावा पुरातत्व के स्मारक, हिल स्टेशन, समुद्र तट, द्वीप अपनी विशिष्टता की वजह से अधिकतम विदेशी तथा घरेलु पर्यटकों को आकर्षित करते हैं और उनके लिए किसी विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं है। लेकिन देश के बाकी हिस्सों में फैली अनूठी सभ्यता, संस्कृति, और धार्मिक स्थलों के लिए भी पैकेज बनाने की जरूरत महसूस की जा रही हे। ऐसी एजेंसियां जो हमारे दूतावासों और उच्चायोगों सहित विदेशी देशों में पर्यटकों को सलाह देनी चाहिए, इन स्थानों पर आवश्यक विवरण प्रदान नहीं करती हैं। जैसे विश्व प्रसिद्ध संगम और कुंभ मेला, भारद्वाज मुनि आश्रम, नाग बासुकी मंदिर, आंध्र का कोनासीमा, ऊटी के बॉटनिकल गार्डन में फ्लावर शो, तमिलनाडु में पर्यटक रुचि के अन्य स्थान जैसे मदुरै का मीनाक्षी मंदिर, चिदंबरम नागराजन मंदिर, तंजावुर आदि विदेशी ट्रैवल एजेंसियों के मानचित्र पर मौजूद नहीं हैं। ऐसे स्थानों के बारे में भी प्रचार किए जाने की आवश्यकता है।

## भारत की विश्व के विभिन्न पर्यटन कार्यक्रमों में भागीदारी ..

पर्यटन मंत्रालय विदेश में आयोजित कई यात्रा और पर्यटन व्यापार मेलों में भाग लेता है। इनमें से वर्ल्ड ट्रेवल मार्ट लंदन; आईटीबी बर्लिन, अरब ट्रेवल मार्ट, दुबई, ईआईबीटीएम, स्पेन, और आईएमईएक्स, फ्रैंकफर्ट प्रमुख हैं।

## रोजगार

पर्यटन में रोजगार सृजन की भी बहुत अधिक क्षमता है। पर्यटन मंत्रालय के पर्यटन सैटेलाइट अकांउट के अनुसार 2012–13 तक पर्यटन क्षेत्र में 28.77 मिलियन प्रत्यक्ष और 38.20 मिलियन प्रतिशत अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित हुए हैं।

हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि देश में आने वाला पर्यटक स्वयं को भौतिक रूप से रोमांचित, मानसिक रूप से तरोताजा, सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध, आध्यात्मिक स्तर पर उन्नत और 'हमारे देश को अपने अंर्ततम में महसूस करें'।

श्रद्धांजलि

# केदारनाथ सिंह

देश में हिंदी जानेमाने कवि और सुप्रसिद्ध साहित्यकार केदारनाथ सिंह (84 वर्ष) का 19 मार्च, 2018 की शाम नई दिल्ली में निधन हो गया। केदारनाथ सिंह चर्चित कविता संकलन 'तीसरा सप्तक' के सहयोगी कवियों में से एक हैं।

7 जुलाई, 1934 को उत्तर प्रदेश के बलिया ज़िले के चकिया गाँव में जन्मे श्री केदारनाथ सिंह ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से 1956 में हिंदी में एम. ए. और 1964 में पी. एच.डी की और कई कालेजों में अध्यापन किया। अन्त में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुए।

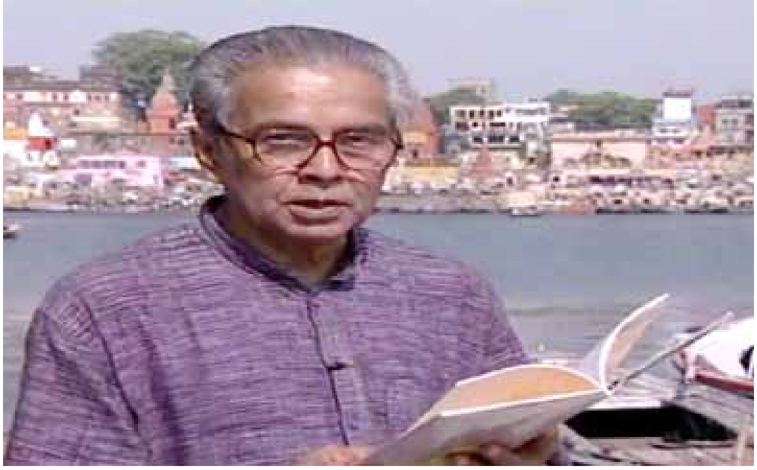

समकालीन कविता के प्रमुख हस्ताक्षर माने जाने वाले, केदारनाथ सिंह की कविता में गाँव व शहर की कसक साफ नजर आती है। 'बाघ' इनकी प्रमुख लम्बी कविता है।

केदारनाथ सिंह की काव्य–संवेदना का दायरा गांव से शहर तक व्याप्त है। वह एक साथ ही गांव के कवि हैं तथा शहर के भी। दरअसल केदारनाथ पहले गांव से शहर आते हैं। इस आवाजाही के चिह्नों को पहचानना कठिन नहीं हैं। केदारनाथ के कविता की भूमि नागार्जुन की ही तरह गांव की है। दोआब के गांव–जवार, नदी–ताल, पगडंडी–मेड़ से बतियाते हुए केदारनाथ प्रगतिवादियों की तरह भावुक हो जाते हैं। केदारनाथ सिंह बीच का या बाद का बना रास्ता तय करते हैं। केदारनाथ सिंह की कविताओं में जीवन की स्वीकृति है, परंतु तमाम तरलताओं के साथ यह आस्तिक कविता नहीं है।

इनकी कविताओं के अनुवाद लगभग सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के अलावा अंग्रेजी, स्पेनिश, रूसी, जर्मन और हंगेरियन आदि विदेशी भाषाओं में भी किए गए हैं। कविता पाठ के लिए दुनिया के अनेक देशों की यात्राएँ की हैं।

केदारनाथ सिंह को वर्ष 2013 के लिए ज्ञानपीठ प्रदान किया गया था। आधुनिक पीढ़ी के रचनाकारों में यह पुरस्कार पाने वाले वह हिन्दी के 10वें लेखक थे। इसके इलावा उन्हें मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, जीवन भारती सम्मान, दिनकर पुरस्कार, व्यास सम्मान तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुऐ। आपने कविता व गद्य की अनेक पुस्तकें रची हैं और अनेक सम्माननीय सम्मानों से सम्मानित किए गए।

**अतुल्य भारत की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित है।**

श्रद्धांजलि

# श्रीदेवी

बॉलीवुड की जानी मानी अभिनेत्री श्रीदेवी का 24 फरवरी, 2018 को दिल का दौरा पड़ने के कारण दुबई में निधन हो गया है। श्रीदेवी के निधन की खबर से पूरा बालीबुड ही नहीं, देश ही सदमे में आ गया ।

श्रीदेवी ने महज चार वर्ष की उम्र में बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट अपने फ़िल्मी करियर की शुरुआत की थी। उनकी पहली फिल्म बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट थुनविगन थीं। नन्हीं श्रीदेवी को मलयालम फिल्म पूमबत्ता (1971) के लिए केरला स्टेट फिल्म अवार्ड से भी सम्मानित किया गया। उन्होंने इस दौरान कई तमिल–तेलगु और मलायलम फिल्मों में काम किया जिसके लिए उन्हें कई अवार्डों से सम्मानित भी किया गया। हिंदी सिनेमा जगत ने उन्हें फिल्म 'जूली' में बाल कलाकार के रूप में देखा होगा।

श्रीदेवी ने 1979 में हिंदी फिल्म सोलवां सावन से अपने करियर की शुरुआत की थी। लेकिन 1983 में आई फिल्म हिम्मतवाला से बॉलीवुड में पहचान मिली। इस फिल्म में वह जितेंद्र के साथ नायिका बनी। यह फिल्म 1983 की ब्लॉक बस्टर फिल्म साबित हुई इसके बाद उन्होंने जितेन्द्र के साथ कई फिल्मों में काम किया और इस जोड़ी की एक फिल्म 'तोहफा' ने उस दौर में कमाई के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए थे। इस फिल्म के बाद वह हिंदी सिनेमा की सुपरस्टार अभिनेत्रियों में शुमार हो गयीं।

वर्ष 1983 में फिल्म सदमा में श्रीदेवी दक्षिण सिनेमा के अभिनेता कमल हासन के साथ काम किया और इस फिल्म में उनके अभिनय को देख आलोचक भी दंग रह गए। श्रीदेवी को फिल्म सदमा के लिए पहली बार फिल्मफेयर अवाड्र्स में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार मिला था।

श्रीदेवी ने अपने फ़िल्मी करियर में कई अनगिनत फिल्में की। अपने करियर के दौरान उन्होंने कई दमदार भूमिकाएं की और महिला किरदारों को पर्दे पर बेहतरीन तरीके से प्रस्तुत किया। मुख्यधारा के सिनेमा के अलावा कुछ पैरलल सिनेमा की फिल्मों मे भी काम किया। उन्हें तीन बार फिल्मफेयर पुरस्कार मिल चुका है। उनके करियर का ग्राफ कई बार नीचे भी गिरा लेकिन के उन्होंने अपने को कई बार इससे उबारा और स्टेटस को बरकरार रखने के लिए उनकी क्षमता ने सभी का दिल जीता। 2013 में उन्हें भारत सरकार की ओर से पद्मश्री सम्मान से भी नवाजा गया।

1986 में आई फिल्म नगीना, जिसमे श्रीदेवी ने एक इच्छाधारी नागिन की भूमिका अदा की थी। यह फिल्म उस साल की दूसरी सुपर हिट फिल्म साबित हुई थी।

1987 में आई फिल्म मिस्टर इंडिया में श्री एक पत्रकार की भूमिका में थी जिसे वह अपना सबसे अच्छा तथा आइकॉनिक रोल मानती थीं। इस साइंटिफिक थ्रिलर फिल्म में उनके साथ थे अनिल कपूर। 1989

छपते-छपते

## विनोद खन्ना को दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

पिछले साल दुनिया को अलविदा कह चुके अभिनेता विनोद खन्ना को देश में सिनेमा के सर्वोच्च सम्मान दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। फिल्मकार शेखर कपूर की अध्यक्षता में 65वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जूरी ने विनोद खन्ना को इस पुरस्कार से सम्मानित करने का सामूहिक रूप से निर्णय लिया । विनोद खन्ना 'मेरे अपने', 'इंसाफ', 'परवरिश', 'मुकद्दर का सिकंदर', 'कुर्बानी', 'दयावान', 'मेरा गांव मेरा देश', 'चांदनी', 'द बर्निंग ट्रेन' और 'अमर, अकबर, एंथनी' जैसी बड़ी बॉलीवुड फिल्मों का हिस्सा रहे थे। कपूर ने शुक्रवार को मीडिया को बताया कि उन्होंने कम से कम एक बार विनोद खन्ना के साथ काम किया था । विनोद खन्ना का लंबी बीमारी के चलते पिछले साल 27 अप्रैल, 2017 को 70 वर्ष की आयु में निधन हो गया था। राजनीति में आने पर विनोद खन्ना ने दो बार गुरदासपुर लोक सभा संसदीय क्षेत्र से पंजाब का प्रतिनिधित्व किया और कुछ तक पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री रहे तथा बाद में उन्हें विदेश राज्य मंत्री बनाया गया। जूरी के सदस्यों ने विशेष उल्लेख किया कि विनोद खन्ना बॉलीवुड के उन सितारों में शामिल है जो न केवल एक शानदार अभिनेता थे बल्कि एक अच्छे इंसान भी थे।

की फिल्म चालबाज में श्रीदेवी दोहरी भूमिका में थीं। इस फिल्म के लिए उन्हें आलोचकों से भी काफी प्रशंसा मिली थी। श्रीदेवी को फिल्म चालबाज के लिए उन्हें उनके पहले फिल्म फेयर सर्वश्रेठ अभिनेत्री के पुरुस्कार से सम्मानित किया गया था।

चालबाज के बाद श्रीदेवी यशराज फिल्म्स की फिल्म 'चांदनी' में ऋषि कपूर के साथ काम किया। इस फिल्म का एक गीत 'मेरे हाथों में नौ–नौं चूड़ियाँ है' आज भी भारत के घरों में शादी–विवाह के मौकों पर खूब बजाया जाता है और उस डांस भी किए जाते हैं ।

1996 में निर्देशक बोनी कपूर से शादी के बाद श्रीदेवी ने फ़िल्मी दुनिया से अपनी दूरी बना ली थी। लेकिन इस दौरान वह कई टीवी शोज में नजर आई। श्रीदेवी ने साल 2012 में गौरी शिंदे की फिल्म इंग्लिश विंग्लिश से रूपहले परदे पर अपनी वापसी की। हिंदी सिनेमा से कई वर्षों तक दूर रहने के बाद भी फिल्म इंग्लिश विंग्लिश में श्री देवी ने बेहतरीन अभिनय से आलोचकों और दर्शकों को चौंका दिया था।

65वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में उन्हें फिल्म 'मॉम' में बेहतरीन अदाकारी के लिए बेस्ट एक्ट्रेस का राष्ट्रीय पुरस्कार मरोपंरात प्रदान किया गया।

श्रीदेवी को 2013 में पदमश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

**अतुल्य भारत की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित है।**

श्रद्धांजलि

# नहीं रहीं 'शम्मी आंटी'

लगभग छह दशकों तक अभिनय जगत में सक्रिय रहीं दिग्गज चरित्र अभिनेत्री नरगिस राबदी, जिन्हें सभी कलाकार 'शम्मी आंटी' कहते थे, का 6 मार्च 2018 को देर शाम मुंबई में निधन हो गया। वह पिछले कुछ समय से बीमार थीं।

**89 वर्षीय अभिनेत्री आंटी, नानी, परिवार की बुजुर्ग महिला जैसे कई किरदार निभाकर घर–घर में 'शम्मी आंटी' के रूप में लोकप्रिय हुई। अतुल्य भारत की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए बहुत पहले (1990 में) उनसे हुई एक मुलाकात के कुछ अंश प्रस्तुत हैं। –प्रबंध सम्पादक**

''हमारे पिता जी एक पारसी अग्नि मंदिर में पुजारी थे । जब मैं करीब तीन साल की थी कि पिता जी का निधन हो गया। हम दो बहनें थी और दोनों ही छोटी थीं। बड़ी का नाम मणि और मेरा नरगिस रखा गया था। मां घर चलाने के लिए आसपास के पारसी लोगों के धार्मिक कार्यक्रमों में खाना पकाने लगीं। बड़ी बहन मणि जॉनसन और जॉनसन स्कूल से दसवीं पास करने के बाद वहीं काम करने लगी। यही मणि बाद में एक फैशन डिजाइनर बनीं और उसने 1967 और 1994 के बीच हिंदी फिल्मों में ड्रैस डिजाइनर के रूप में कई जानी–मानी अभिनेत्रियों के साथ बड़े पैमाने पर काम किया।''

''1942 में, मुझे जॉनसन और जॉनसन ने टेबलेट्स पैकिंग डिपार्टमेंट में 10 रुपये महीने की नौकरी मिली मगर एक दिन बहुत सारी

टेबलेट्स मशीन से बाहर बिखर गई और उसी दिन मुझे भी नौकरी से बाहर कर दिया गया ।''

''मेरे लिए फिल्मों में काम करना एक संयोग ही था। हमारे पड़ौस में एक बहुत ही अच्छे भाई चिन्नमा रहते थे, उन्हें सभी चिन्नुमामा कहते थे। वह फिल्म निर्माता महबूब खान के साथ काम करते थे। अभिनेता और निर्माता शेख मुख्तार के साथ भी उनकी अच्छी दोस्ती थी एक दिन चिन्नुमामा ने मुझ से पूछा कि क्या फिल्मों में काम करोगी। उन्होंने बताया कि शेख मुख्तार बेगम पारा को हिरोइन लेकर फिल्म बना रहे हैं और वह एक साइड हिरोइन की तलाश में हैं। मेरे पास कोई काम नहीं था, मैंने झट से हां कर दी और उन्होंने अगले दिन स्टूडियो में शेख मुख्तार से मिला दिया। शेख मुख्तार को उस रोल के लिए मैं ठीक लगी मगर उन्हें बार–बार मेरी 'हिंदी' पर शक हो रहा था। जब मुझे लगा कि वह कुछ पशोपेश में हैं मैंने तुरंत ही शेख साहब से कहा कि मैं आपसे हिंदी में ही बात कर रही हूं। फिर भी आपको मेरी हिंदी में कहीं कोई दोष मिले तो बता दीजिए। मेरी इस बात का शेख साहब पर असर पड़ा और अगले दिन ही मुझे स्क्रीन टेस्ट के

लिए महालक्ष्मी स्टुडियो में बुलाया गया। वहां निर्देशक तारा हरीश ने स्क्रीन टेस्ट के बाद शेख साहब से मेरा नाम बदलने को कहा क्योंकि इंडस्ट्री में पहले से ही एक नर्गिस थी। उन्होंने मेरा नाम "शम्मी" रखने की सलाह दी और महीने की तनख्वाह 500 रुपये, मगर एक शर्त थी कि तीन साल तक, उनकी इजाजत के बिना कहीं बाहर किसी और कम्पनी में काम नहीं करेगी। पांच सौ रूपए महीना बहुत बड़ी बात थी, मैने उसी वक्त पहली फिल्म, 'उस्ताद पेड्रो' के करारनामें पर साइन कर दिए। उस्ताद पेड्रो में बेगम पारा के साथ शेख मुख्तार और हास्य अभिनेता के रूप में मुकरी थे। तारा हरीश के निर्देशन में बनी यह फिल्म 1949 में बॉक्स ऑफिस पर हिट फिल्म थी।''

''फिल्म के निर्देशक हरीश ने ही मुझे फिल्मों के संवाद पढ़ना, उनका उतार–चढ़ाव और हंसने–रोने जैसी बहुत सी बातें सिखाई क्योंकि वह खुद अभिनेता थे।''

''कुछ महीने बाद गायक मुकेश ने एक फिल्म 'मल्हार' का निर्देशन करने के लिए हरीश को बुलाया तो उन्होंने उस फिल्म में मुख्य भूमिका में मुझे लेने की सलाह दी। चूंकि निर्देशक एक ही थे, दूसरे मुकेश शेख साहब के अच्छे दोस्त थे उन्होनें शेख मुख्तार की बहुत सी फिल्मों में गाने गाए थे। इसलिए शेख साहब ने मुझे बाहर काम करने की अनुमति दे दी थी। मल्हार का संगीत एक सुपर हिट था और इस फिल्म ने मुझे हिरोइन बना दिया। अब हमारी आर्थिक स्थिति मजबूत हो गई थी। मल्हार की शूटिंग के दौरान ही एक दिन नर्गिस दत्त की मां, जद्दन बाई से मुलाकात हुई और बस उस दिन से हमारे परिवार अच्छे दोस्त बन गए। उन्होंने ही मुझे फिल्म 'मिस इंडिया' में साइड हिरोइन की भूमिका दिलवाई थी।''

''उस वक्त नरगिस एक लाख रुपये लेने वाली पहली अभिनेत्री थी, जबकि दिलीप कुमार को भी उस समय इतना पैसा नहीं मिलता था और हमारे जैसी सह–अभिनेत्रियों को तो पूरी फिल्म के करीब दस से पंद्रह हजार रुपये ही मिलते थे जबकि उस वक्त एक फिल्म बनने में दो–तीन साल लग जाते थे। मैने तो कभी भी किसी से यह नहीं पूछा कि कितने पैसे देंगे, बस जो दे दिया ले लेती थी।"

"मेरी तीसरी फिल्म 'संगदिल' थी जो दिलीप कुमार और मधुबाला के साथ 1952 में रिलीज हुई थी। यह एकदम फ्लॉप साबित हुई। 'संगदिल' के पिट जाने से करीब सात महीने तक काम नहीं मिला और फिल्मों में दूसरी लीड या तीसरी लीड के लिए भी एक दो निर्माताओं ने ही बुलाया। लेकिन संगदिल के बाद, मुझे जैसी भी, जो कुछ भी भूमिकाएं मिलीं वही करनी शुरू कर दीं यहां तक कि कुछ फिल्मों में तो खलनायिका तथा भद्दी सी भूमिका भी निभाई। कुछ लोगों ने मुझे डांटा भी, लेकिन मेरे मन में साफ था कि मुझे काम करना है। घर पर बैठकर मैं अपने परिवार की मदद नहीं कर पाती।"

''कुछ समय के बाद मुझे के. आसिफ साहब की एक फिल्म मिली 'मुसाफिरखाना' जिसमें कॉमेडियन जॉनी वॉकर के साथ मेरे काम की काफी तारीफ हुई थी। यह एक हिट फिल्म रही। फिर मनहर देसाई के साथ एक फिल्म मिली 'जंगली' उसके बाद तो महिपाल, करण दीवान जैसे नायकों के साथ किसी न किसी भूमिका में काम मिलता गया। उस दौर की कई हिरोइनों के साथ भी काम किया। 1952 से 1960 तक रिलीज़ हुई बहुत सी फिल्में टिकट खिड़की पर बस ठीक ठाक सी रहीं, इससे भी कैरियर पर असर पड़ा था।''

''उन दिनों सहायक अभिनेत्री के रूप में मेरी इल्ज़ाम, पहली झलक, बंदिश, आजाद, हलाकू, राज तिलक, खजांची, घर संसार, आखरी दांव, कंगन आदि का सफल फिल्मों में नाम लिया जा सकता है ।''

## बाद में.......

1970–85 के दौरान शम्मी जी फिल्म इंडस्ट्री की आंटी बन चुकी थी। ज्यादातर कलाकार उनका बड़ा आदर करते थे। इसी वजह से उनके पति सुल्तान अहमद को फिल्म उद्योग में प्रवेश मिला था और राजेश खन्ना, सुनील दत्त और आशा पारेख जैसे दोस्तों ने सुल्तान अहमद द्वारा निर्देशित फिल्मों में काम किया इनमें अधिकतर फिल्में सफल रही। उनके पति ने जय विक्रांत, रियासत, दाता, धर्म कांटा, गंगा की सौगंध, हीरा जैसी निर्देशित की। 1980 में उनका तलाक हो गया और वह बिना कुछ लिए ही बांद्रा में अपने पुराने घर अपनी मां के साथ रहने लगीं। शम्मी के अपने पति से अलग होने पर नर्गिस दत्त बहुत परेशान हुई और सुनील दत्त ने आठ दिनों में ही 'द बर्निंग ट्रेन' में काम दिलाने में मदद की। राजेश खन्ना ने उन्हें दी ट्रेन, आंचल, कुदरत, आवारा बाप, लाला गुलाब और स्वर्ग जैसी बड़े बजट की फिल्मों में चरित्र भूमिकाएं दिलाने में मदद की। इन फिल्मों को फिर से एक चरित्र अभिनेत्री के रूप में उन्हें स्थान मिला और इन फिल्मों ने उनके कैरियर को पुनर्जीवित किया।

इतना ही नहीं राजेश खन्ना ने जया बच्चन से, जो दूरदर्शन के लिए 'देख भाई देख' नाम से एक टीवी सीरियल बना रही थीं, शम्मी को भी रखने के लिए कहा और वह मान गई। उन्होनें ही दूरदर्शन के लिए बनाए जा रहे कुछ और सीरियलों में काम दिलाने में मदद की और शम्मी जी ने 'देख भाई देख', 'जबान संभाल के', 'श्रीमान श्रीमती', 'कभी ये कभी वो' और 'फिल्मी चक्कर' जैसे लोकप्रिय धारावाहिकों में भी काम किया और उनके काम की बड़ी तारीफ की गई ।

यह उनकी लोकप्रियता ही थी कि एक बुजुर्ग कलाकार को अंतिम विदा देने अमिताभ बच्चन, डिजाइनर संदीप खोसला, अभिषेक बच्चन, फराह खान, आशा पारेख, फरीदा जलाल, अंजु महेंद्रू, बोमन इरानी, सुशांत सिंह जैसे दिव्या दत्ता जैसी बालीवुड की हस्तियां और अनेक राजनेता उनके जनाजे में शामिल हुए ।

**अतुल्य भारत की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित है।**

## अब विदेशी पर्यटक प्रतिबंधित स्थलों पर जा सकेंगे

**पाकिस्तान और चीन के पर्यटकों को छोड़कर दूसरे देशों के पर्यटकों को अब जल्द ही देश के कुछ ऐसे स्थानों पर भी पर जाने की अनुमति मिल सकती है, जो उनके लिए अब तक भी अनछुए और अनदेखें हैं। फिलहाल, इन स्थानों पर विशेष इजाजत के बिना यात्र करने की अनुमति नहीं है। केन्द्रीय गृह मंत्रालय इस बात की जांच कर रहा है कि 60 साल पुराने 'रिस्ट्रिक्टेड एरिया परमिट' में ढील दी जाए या नहीं? इसके तहत विदेशी नागरिकों को अरूणाचल प्रदेश, सिक्किम, हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों, उत्तराखंड, राजस्थान और जम्मू–कश्मीर में यात्रा के लिए विशेष अनुमति लेना आवश्यक है ।–नवभारत टाइम्स से साभार**

# शुभकामनाएँ

**जनवरी–मार्च, 2018 के दौरान पर्यटन मंत्रालय से सेवा निवृत्त हुए अधिकारी एवं कर्मचारी**

| क्र.सं. | नाम | पद | माह |
|---|---|---|---|
| 1. | श्रीमती सावित्री | पर्यटक सूचना अधिकारी | जनवरी |
| 2. | श्रीमती निर्मला खन्ना | निजी सचिव | फरवरी |
| 3. | श्री जगदीश चन्द्र | निजी सचिव | फरवरी |
| 4. | श्रीमती ग्रेस कुजूर | सहायक निदेशक | स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति |

**पर्यटन मंत्रालय से सेवा निवृत्त हुए सभी पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं सुखद जीवन की कामना करते हैं। –अतुल्य भारत**

# शाबाश

## अखिल भारतीय सेवा भारोत्तोलन चैम्पियनशिप वर्ष 2017–18 में तृतीय स्थान

पर्यटन मंत्रालय, मुख्यालय में कार्यरत श्री संदीप कुमार ने अखिल भारतीय सेवा भारोत्तोलन चैम्पियनशिप वर्ष 2017–18 में तृतीय स्थान प्राप्त किया है। यह प्रतियोगिता 23 से 26 मार्च, 2018 तक नई दिल्ली में आयोजित की गई थी। 23 जनवरी, 2013 को पर्यटन मंत्रालय में सरकारी सेवा में आए श्री संदीप कुमार वर्ष 2012–13, 2014–15, 2015–16, 2016–17 में भी प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

**अतुल भारत की ओर से बधाई**

# पर्यटन मंत्रालय
# की
# सचित्र गतिविधियाँ

भारत को आस्ट्रेलिया तथा ओशिनिया श्रेणी में 'सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शक' का पुरस्कार

# बर्लिन में 'इंटरनेशनल टूरिज्म बोर्स' (आईटीबी) 2018 में विश्व पर्यटन प्रदर्शनी में भारतीय पर्यटन की दो बड़ी उपलब्धियां

जर्मनी के बर्लिन में विश्व पर्यटन प्रदर्शनी 'इंटरनेशनल टूरिज्म बोर्स' (आईटीबी) 2018 में भारत को आस्ट्रेलिया तथा ओशिनिया कोटी में'सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शक'का पुरस्कार प्रदान किया गया। आईटीबी–बर्लिन की बैठक में सौ से अधिक देशों के पर्यटन मंत्रियों ने अपने अपने देश का प्रतिनिधित्व किया था। आईटीबी में भारतीय शिष्ट मंडल ने बहु–आयामी हितधारकों, मीडिया के लोगों तथा सलाहकारों के साथ विश्व पर्यटन प्रदर्शनी में मुलाकात कर अंर्तराष्ट्रीय पर्यटन में भारत के लिए अवसरों के बारे में चर्चा की । इस अवसर पर यूएनडब्ल्यूटीओ के महासचिव ने पर्यटन मंत्रियों के साथ एक गोल मेज बैठक कर 'पॉलटिक्स ऑफ टूरिज्म बिटविन ग्रोथ स्ट्रेटेजी एंड ओवर टूरिज्म'विषय चर्चा की । बैठक के बाद, एक समारोह में 'पेसिफिक एशिया ट्रैवल राइटर एसोसिएशन (PATWA), अंर्तराष्ट्रीय पुरस्कार भी प्रदान किए गए ।

7–10 मार्च, 2018 तक जर्मनी के बर्लिन में आयोजित आईटीबी में भाग लेने के पश्चात आज मीडिया वालों को संबोधित करते हुए पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फांस ने आईटीबी 2018 में भारतीय पर्यटन की दो बड़ी उपलब्धियों की चर्चा की।

उन्होंने कहा कि पर्यटन मंत्रालय की नई अभियान फिल्म 'योगी ऑन द रेस ट्रैक', जिसको उन्होंने आईटीबी में संवाददाता सम्मेलन के दौरान लांच किया था । यह एक उल्लेखनीय सफलता रही।

'योगी ऑन द रेस ट्रैक', जिसे 7 मार्च, 2018 को लांच किया गया था । यह एक उल्लेखनीय सफलता रही। अब तक ट्विटर पर इस फिल्म को 20 लाख से अधिक लोग देख चुके हैं ।

माननीय मंत्री जी ने विश्व मीडिया को बताया कि भारत के पर्यटन उत्पादों को विश्व की पर्यटन बिरादरी के सामने प्रदर्शित करने के लिए आईटीबी एक बड़ा मंच है। यह इस बात से देखा जा सकता है कि भारत ने 'भारत पेवेलियन' के लिए एक बड़ी जगह

ली थी जिसमें भारत के विभिन्न भागों से आए पर्यटन संचालकों तथा होटल संचालकों सहित 50 से अधिक सह–प्रदर्शकों के साथ देश के कई राज्यो के पर्यटन विभागों ने भी हिस्सा लिया। इसके अतिरिक्त, 25 से अधिक भारतीय हितधारकों ने 'भारत पेवेलियन' के बाहर भी स्थान ले कर इस आयोजन में भाग लिया है ।

मंत्री जी ने मीडिया को बताया कि भारतीय पर्यटन क्षेत्र निरंतर वृद्धि की ओर अग्रसर है जो कि विश्व औसत से कहीं अधिक है। 2017 के दौरान 10.18 मिलियन विदेशी पर्यटक भारत आए और यह पिछले वर्ष की इसी अवधि से 15.6 प्रतिशत अधिक है जबकि विदेशी पर्यटकों की वैश्विक वृद्धि केवल 5 प्रतिशत के लगभग है। भारतीय पर्यटन क्षेत्र के लिए ई–वीज़ा एक प्रभावकारी उपाय सिद्ध हुआ है और अब 163 देशों के नागरिकों के लिए ई–वीजा की सुविधा उपलब्ध कराई गई है । इसमें व्यापार तथा चिकित्सा लाभ के लिए भ्रमण की भी अनुमति दी गई है। ई–पर्यटक वीजा प्राप्त करने की प्रक्रिया को बहुत ही सरल बनाया गया है। 2017 के दौरान ई–पर्यटक वीजा पर 1.69 मिलियन विदेशी पर्यटक भारत आए जबकि 2016 के दौरान 1.08 मिलियन आए थे अर्थात 57.2 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज हुई। इस वृद्धि में भारत सरकार द्वारा पर्यटन अवसंरचना विकसित करना, पर्यटकों के लिए प्रवेश औपचारिकताएं सरल बनाना तथा ई–वीजा की सुविधा शुरू किए जाने की महत्वपूर्ण भूमिका रही है ।

मंत्री ने बताया कि पर्यटन मंत्रालय अतुल्य भारत की एक नई वेबसाइट विकसित कर रहा है, जिससे हमारे देश के प्रचार और विपणन को प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे नवीनतम रुझानों का लाभ मिलेगा । इससे पर्यटकों को नए अनुभव प्रदान किए जा सकेंगे ताकि अतुल्य भारत 2.0 अभियान के उद्देश्यों को पूरा किया जा सके। इस नई वेबसाइट का उद्देश्य कई डिजिटल टच पॉइंट (वेबसाइट और मोबाइल ऐप) में प्रासंगिक और परस्पर संवादात्मक तरीके से सभी आगंतुक पर्यटकों के लिए एक आकर्षक अनुभव और सुविधाएं प्रदान करना है। यह अनुमान है कि अतुल्य भारत की वेबसाइट सभी गंतव्यों के बारे में सम्पूर्ण विवरण देकर भारतीय स्थलों की यात्रा करने की योजना बना रहे सभी पर्यटकों के लिए "वन स्टॉप–शॉप" के रूप में सहायक सिद्ध होगी। यह मंत्रालय को अपने अभियानों को विवेकानुसार तरीके से लक्षित करने और सभी पसंदीदा गंतव्यों को डिजिटल रूप में "टच–पाइंट" की व्यवस्था से पहचान करने में सक्षम होगा।

उन्होंने यह भी सूचित किया कि भारत के पर्यटन मंत्रलय ने 2017–18 के दौरान 'अतुल्य भारत 2.0. अभियान शुरू किया है ताकि भारत को विदेशी यात्रियों के बीच एक 'अवश्य अनुभव करें' के रूप में स्थान दिया जा सके और देश में विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हो सके। अतुल्य भारत 2.0 अभियान की रणनीति का उद्देश्य अगले स्तर के संवर्धन तथा विपणन के लिए वर्तमान सामान्य प्रचार से दुनिया भर में विशिष्ट और केंद्रित प्रचार योजनाओं और प्रचार सामग्री निर्माण के लिए किए जा रहे बदलाव की ओर बढ़ना है। यह अभियान भारत के लिए प्रमुख स्रोत बाजारों में और साथ ही महत्वपूर्ण संभावित बाजारों में लॉन्च किया जाएगा, जिनकी पहचान की गई है । अतुल्य भारत 2.0 अभियान पर्यटकों को नए गंतव्य तथा सुविधाएं प्रदान करने और उन्हें भी इस अभियान के नए तत्वों को जोड़कर, इस में शामिल करने की सकारात्मक वकालत का निर्माण करने के लिए एक विस्तार दृष्टिकोण पर आधारित है।

# पर्यटन मंत्रालय द्वारा 2018 के 'अतुल्य भारत डिजिटल कैलेंडर', वॉल एवं डेस्क कैलेंडर जारी

भारत सरकार की डिजिटल इंडिया पहल के अनुक्रम में पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री के. जे. अल्फोन्स ने 12 जनवरी, 2018 को 'अतुल्य भारत डिजिटल कैलेंडर – 2018' जारी किया। इस अवसर पर उन्होंने 2018 का 'अतुल्य भारत वॉल कैलेंडर' और 'डेस्क कैलेंडर' भी जारी किए।

अतुल्य भारत डिजिटल कैलेंडर एप्लीकेशन से उपयोगकर्ता को भारत के समस्त त्योहारों और उत्सवों की जानकारी एक साथ मिलेगी। डिजिटल कैलेंडर को Indroid: https://play.google.com/store/apps/details?id=com.app.calincindia&hl=en

iOS:- https://itunes.apple.com/in/app/incredible-india-calendar/id1332321017?mt=8 प्लेटफार्म पर डाउनलोड किया जा सकता है।

अतुल्य भारत डिजिटल कैलेंडर में एक डिजिटल कैलेंडर की समस्त खुबियां मौजूद हैं और उसकी मदद से यात्रा कार्यक्रम बनाने में सुविधा होती है। इस डिजिटल कैलेंडर का निजी प्लानर की तरह भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इसमें देश के सभी त्योहारों और उत्सवों की जानकारी भी उपलब्ध है। इसके अलावा आने वाले त्योहारों और पर्यटन की गतिविधियों से संबंधित सूचनाएं भी नियमित रूप से मिलती रहेंगी, जिससे इस कैलेंडर के उपयोगकर्ता अपने निजी कार्यक्रम बना सकते हैं। उपयोगकर्ता अपनी रुचि के अनुसार इन गतिविधियों और उत्सवों की जानकारी अपने मित्रों तथा संबंधियों के साथ साझा भी कर सकते हैं। प्रत्येक दिन भारत भर के पर्यटन स्थानों की शानदार तस्वीरें इस पर प्रदर्शित की जायेंगी, जिन्हें विभिन्न सोशल मीडिया प्लेफार्मों के जरिये साझा किया जा सकता है।

भारतीय दृश्यावली दिन की तरह रात में भी शानदार नजर आती है। 'अतुल्य भारत वॉल कैलेंडर 2018' का प्रत्येक पृष्ठ चमकदार रंगों से भरपूर है जो अंधेरे में भी चमकता है। जो भी इस कैलेंडर को देखेगा उसे सूर्योदय और सूर्यास्त, दोनों के समय भारत की सुन्दरता समान रूप से नजर आयेगी।

हर यात्री किसी न किसी वजह से सफर करता है और अपनी रुचि के अनुसार अपना गंतव्य तय करता है। भारत ऐसा देश है जहां हर तरह के पर्यटकों और यात्रियों के लिए दर्शनीय स्थल मौजूद हैं। 'अतुल्य भारत डेस्क कैलेंडर 2018' में विभिन्न तरह के 12 गंतव्यों का विवरण है और पर्यटकों के लिए उचित स्थलों का सुझाव दिया गया है।

डेस्क कैलेंडर की विषयवस्तु 'सबके लिए भारत' है, जिसमें यात्रियों के लिए भारत के अदभूत स्थानों के बारे में बताया गया है।

# गणतंत्र दिवस 2018 समारोह के अंग के रूप में लाल किले में 'भारत पर्व' का आयोजन

भारत सरकार द्वारा प्रति वर्ष 'भारत पर्व' का आयोजन करने के लिए पर्यटन मंत्रालय को नोडल मंत्रालय बनाया गया है। इस वर्ष भी गणतंत्र दिवस–2018 समारोह के अंग के रूप मंत्रालय द्वारा 26 से 31 जनवरी, 2018 तक लाल किले पर 'भारत पर्व' का आयोजन किया गया।

पर्यटन सचिव श्रीमती रश्मि वर्मा ने 26 जनवरी, 2018 (गणंत्रत दिवस) को सायं पांच बजे दीप प्रज्जवलित कर 'भारत पर्व' का उद्‌घाटन किया। इस अवसर पर मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

इस बार 'भारत पर्व' का फोकस था, 'देखो अपना देश'। विविध और आकर्षक संस्कृतिक कार्यक्रमों और भारतीय व्यंजनों का आनंद लेने के लिए बड़ी संख्या में दिल्ली तथा एनसीआर के लोगों के साथ विदेशी पर्यटकों ने भी इस पर्व में भाग लिया। समारोह के लिए कोई प्रवेश शुल्क नहीं था, बस केवल पहचान पत्र ही दिखाना था। यह आम लोगों के लिए दोपहर 12 बजे से रात को 10 बजे तक खुला था।

इस दौरान थल सेना, वायु सेना और नौ सेना ने अचल (स्टेटिक) बैंड प्रस्तुत किए और सेना ने सचल (डायनेमिक) बैंड भी प्रस्तुत किया। छत्तीसगढ़ के कलाकारों ने 'लोकमान्य' कार्यक्रम प्रस्तुत किया; जम्मू कश्मीर के कलाकारों ने 'डोगरी/भांड पाथेर' कार्यक्रम प्रस्तुत किया; एवं उत्तराखण्ड के कलाकारों ने 'चपेली' कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त, तेलंगाना के कलाकारों ने 'पेरिणी नाट्‌यम एवं ओग्गू डोल्लू' प्रस्तुत किया तथा आन्ध्र प्रदेश के कलाकारों ने 'कुचीपुडी' नृत्य प्रस्तुत किया। झांकियों के जिन

तेलंगाना के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत ओग्गू डोल्लू' लोक नृत्य

कलाकारों ने गणतंत्र दिवस परेड में भाग लिया था, उन्होंने भी अपना प्रदर्शन किया। पर्व के अंतिम दिन उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के कलाकारों ने भारतीय नृत्य प्रस्तुत किए।

लाल किले के प्रांगण में भारत पर्व के आयोजन के अवसर पर उपस्थित अधिकारीगण।

इस अवसर पर विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय द्वारा 'नया भारत हम करके रहेंगे' की थीम पर एक फोटो प्रदर्शनी लगाई गई थी।

भारत के विभिन्न राज्यों के व्यंजनों को बढ़ावा देने के लिए फूड कोर्ट में एक लाइव 'कूकरी डिमोन्ट्रेशन एरिया' स्थापित किया गया था जिसमें दर्शकों को विभिन्न राज्यों के व्यंजन बनते हुए देखने का अवसर मिला। फूड कोर्ट में राज्यों/संघ शासित प्रदेशों, भारत के स्ट्रीट वेंडरों के राष्ट्रीय संगठन (एनएएसवीआई) द्वारा स्टॉल लगाए गए जिनमें विभिन्न क्षेत्रों तथा होटल प्रबन्धन संस्थानों एवं आईटीडीसी द्वारा स्ट्रीट फूड प्रदर्शित किए गए थे।

देश के विविध हस्तशिल्पों को प्रदर्शित करने के लिए राज्य सरकारों तथा कपड़ा मंत्रालय के हस्तशिल्प आयुक्त द्वारा एक शिल्प मेले का आयोजन भी किया गया, जिसमें 50 स्टॉल लगाए गए थे। इनमें थीम राज्य पवेलियन शामिल थे जहां कई राज्यों ने अपने पर्यटन उत्पाद प्रदर्शित कर उनके बारे में लोगों को जानकारी प्रदान की।

पत्रकारों की सुविधा के लिए आयोजन स्थल पर एक प्रेस कक्ष स्थापित किया गया था।

इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य पर्व के जरिये देशभक्ति की भावना, भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देना और आम जनता की भागीदारी सुनिश्चित करना होता है।

भारत पर्व के आयोजन में भाग लेते अधिकारीगण

# 'आतिथ्य सत्कार के क्षेत्र में शिक्षा और रोजगार' विषय पर देश भर के स्कूलों में आयोजित 'राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता' के विजेताओं को पुरस्कार

पर्यटन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं इलेक्ट्रोनिक और सूचना प्रौद्यागिकी राज्यमंत्री श्री के. अल्फोंस ने 23 जनवरी, 2018 को राष्ट्रीय होटल प्रबंधन और कैटरिंग टेक्नॉलॉजी परिषद, नोएडा द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में 'आतिथ्य सत्कार के क्षेत्र में शिक्षा और रोजगार' विषय पर देश भर के स्कूलों में आयोजित 'राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता' के विजेताओं को पुरस्कृत किया। पर्यटन मंत्रालय के अधीन एनसीएचएमसीटी एक शीर्ष संस्था है जो देश में आतिथ्य सत्कार शिक्षा के क्षेत्र में समन्वय का काम करती है।

चेन्नै के गुंटूर सुब्बैया पिल्लई टी. नगर बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की सुश्री ए. गायत्री को 40,000 रूपए का प्रथम पुरस्कार दिया गया। गुजरात के भरूच की सुश्री निखी खंबातवाला दूसरे स्थान पर रहीं, जिन्हें 30,000 रूपए का पुरस्कार मिला तथा सोनितपुर, असम के अनबील गोस्वामी ने तीसरा स्थान प्राप्त किया और उन्हें 20,000 रूपए का पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके अलावा, प्रतिभागिता बढ़ाने के लिए विद्यालयों को भी स्वर्ण तथा रजत पत्रों से सम्मानित किया गया। साथ ही, सभी चार क्षेत्रों से तीन–तीन विद्यालयों को दस दस हजार रूपए के प्रोत्साहन पुरस्कार दिए गए।

सुश्री ए. गायत्री

इस अवसर पर माननीय मंत्री जी ने अपने संबोधन में कहा कि पूरे देश में पर्यटन मंत्रालय द्वारा हाल ही में जारी विदेशी पर्यटकों के आगमन के आंकड़ों की चर्चा है जिसके मुताबिक पिछले साल की तुलना में 2017 में विदेशी पर्यटकों की संख्या में 15.6% की वार्षिक वृद्धि दर्ज की गयी है और ऐसा पहली बार हुआ है जब एक साल में देश में एक करोड़ से ज्यादा विदेशी पर्यटक आये और अकेले पर्यटन के माध्यम से देश को + 27.7 अरब डॉलर अर्थात 1,80,379 करोड़ रूपए की आय हुई है। पर्यटन क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था में 6.88% का योगदान देता है। सकल रोजगार के मामले में इसका योगदान 12.36% है। सरकार द्वारा व्यापक नीतियों को अपनाने विशेषकर के ई– वीजा और चुनिंदा देशों के यात्रियों को भारत पहुंचने पर वीजा प्रदान किए जाने की सुविधा, के परिणामस्वरूप आने वाले वर्षो में इस क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि होगी। भारत की सांस्कृतिक विशेषता, यहां के लुभावने प्राकृतिक स्थल, वन्यजीव अभ्यारण्य, धार्मिक परिपथों और हाल ही में चिकित्सा एवं निरोगता क्षेत्र में हुई प्रगति की वजह से बड़ी संख्या में पर्यटक भारत की ओर आकर्षित हुए हैं।

भारतीय खानपान की अब पूरी दुनिया में एक पहचान बन चुकी है। आज भारत में आने वाले विदेशी पर्यटक यहां की तीखे और मसालेदार व्यंजनों के साथ साथ क्षेत्रीय पकवानों का स्वाद लेने के लिये तैयार हैं।

कार्यक्रम में पर्यटन मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी, अनेक विद्यालयों के छात्र, अध्यापक और प्रधानाध्यपक, होटल प्रबंध संस्थानों तथा निजी और सरकारी क्षेत्रों के आतिथ्य सत्कार के क्षेत्र से जुड़े लोग उपस्थित थे।

इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए माननीय पर्यटन मंत्री जी

पद्म श्री शैफ श्री संजीव कपूर की भागीदारी कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण थी। होटल प्रबंध संस्थान, पूसा, नई दिल्ली के छात्र रह चुके संजीव कपूर ने छात्रों को आतिथ्य सत्कार के क्षेत्र को एक ऐसे शानदार पेशे के रूप में अपनाने के लिये प्रोत्साहित किया जो कि रोमांच से भरपूर है और आपको विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों से मिलने का बेहतरीन अवसर उपलब्ध कराता है।

पर्यटन मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय होटल प्रबंधन एवं कैटरिंग तकनीकी परिषद आतिथ्य सत्कार की शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाली शीर्ष संस्था है। 1962 में इसकी स्थापना के समय इसके पाठ्यक्रम के तहत केवल चार होटल प्रबंधन संस्थान इससे सम्बद्ध थे। अब यह संख्या सरकारी और निजी संस्थानों को मिलाकर 72 तक पहुंच गयी है। इन होटल प्रबंधन संस्थानों से प्रतिवर्ष करीब 12 हजार प्रशिक्षित छात्र इसके 11 अलग–अलग पाठ्यक्रमों से पढ़कर निकलते हैं जिन्हें उद्योग जगत, जिसमें होटल, रेस्त्रां, विमान सेवा, जहाजरानी कंपनियां और रेलवे शामिल है, अपने यहां सेवा के अवसर प्रदान करता है। इसके अलावा कुछ छात्र अपना व्यवसाय शुरू कर उद्यमी बन जाते हैं तो कुछ उच्च शिक्षा में चले जाते हैं।

होटल प्रबंध संस्थानों के आतिथ्य सत्कार के शिक्षा कार्यक्रमों के बारे में जागरुकता बढ़ाने के लिये दिसंबर 2017 में परिषद ने पहली बार देश भर के स्कूलों में ''आतिथ्य सत्कार शिक्षा और भविष्य'' विषय पर एक 'राष्ट्रव्यापी निबंध प्रतियोगिता' आयोजित की थी। परिषद को 11–12वीं के छात्रों की व्यापक भागीदारी मिली, जिन्होंने भविष्य निर्माण के एक क्षेत्र के रूप में अन्य परंपरागत क्षेत्रों जैसे अभियांत्रिकी, चिकित्सा और सूचना तकनीक की तुलना में होटल प्रबंधन में अपनी रुचि पर उत्साह के साथ लिखा। इन निबंधों को क्षेत्रीय स्तर पर छांटा और परखा गया उसके बाद अंतिम चरण में पहुंचने वालों का परिषद में विशेषज्ञों के एक समूह द्वारा पुनर्मूल्यांकन किया गया था।

# पर्यटन मंत्रालय का सोशल मीडिया पर प्रभावकारी अभियान 'द ग्रेट इंडिया ब्लॉग ट्रेन' की शुरूआत

पर्यटन मंत्रालय का सोशल मीडिया पर प्रभावकारी अभियान "द ग्रेट इंडिया ब्लॉग ट्रेन "जिसमें दुनिया भर के यात्रा ब्लॉगर्स को शामिल किया गया, की शुरूआत दिनांक 07 फरवरी, 2018 को श्रीमती रश्मि वर्मा, सचिव (पर्यटन) ने सफदरजंग रेलवे स्टेशन, नई दिल्ली से की। सचिव ने पर्यटन और पर्यटन से संबंधित अन्य पहलुओं को बढ़ावा देने और उन्हें अपनी यात्रा को देखने के मुद्दे पर ब्लॉगरों से बातचीत की। इन ब्लॉगरों को विभिन्न राज्यों में चलने वाली लक्जरी ट्रेनों पर देश के विभिन्न स्थलों की यात्रा के लिए आमंत्रित किया है।

**पर्यटन मंत्रालय सोशल मीडिया के महत्व को ध्यान में रखते हुए विपणन के एक प्रभावकारी उपाय के अंग के रूप में "द ग्रेट इंडिया ब्लॉग ट्रेन" अभियान का आयोजन कर रहा है।**

इस अभियान का उद्देश्य घरेलू और विदेशी बाजारों में भारत की लक्जरी ट्रेनों को एक अनूठे पर्यटन उत्पाद के रूप में प्रस्तुत करना है। इस अभियान के अंतर्गत लक्जरी ट्रेनों के साथ–साथ जिन स्थानों का यह ब्लॉगर्स दौरा करेंगे उन्हें ये अपने ब्लॉग, वीडियों

श्रीमती रश्मि वर्मा, सचिव (पर्यटन) तथा अन्य अधिकारीगण 7 फरवरी, 2018 को आमंत्रित अतिथियों के साथ

श्रीमती रश्मि वर्मा, सचिव (पर्यटन) तथा अन्य अधिकारीगण 7 फरवरी, 2018 को आमंत्रित अतिथियों को विदा करते हुए।

और फोटो के माध्यम से ब्लॉगर्स/ इन्स्टाग्राम के जरिए अपने अनुभव साझा कर प्रचारित करेंगे। इस पहल से रेलवे और लग्जरी ट्रेन ऑपरेटरों को काफी हद तक लाभ होगा।

भारत सहित 23 देशों के 60 ब्लॉगर 15–15 के ग्रुप (दल) में चार लग्जरी ट्रेनों जैसे पैलेस ऑन व्हील्स, महाराजा एक्सप्रेस, दक्कन ओडिशी और गोल्डन चैरिअट पर यात्रा का आनन्द लेंगे।

15 ब्लॉगर्स का प्रथम दल 07 फरवरी, 2018 को ''पैलेस ऑन व्हील्स'' पर यात्रा के लिए सफदरजंग रेलवे स्टेशन, नई दिल्ली से रवाना हुआ था। दूसरे दल ने 10 फरवरी 2018 को दिल्ली से ''महाराजा एक्सप्रेस'' से, जबकि तीसरे दल ने 10 फरवरी 2018 को ही मुंबई के छत्रपति शिवाजी टर्मिनल से ''दक्कन ओडिशी'' में और चौथे एवं अंतिम दल ने 19 फरवरी 2018 को बेंगलूरू से ''गोल्डन चैरिअट'' में एक सप्ताह की यात्रा की है। रेलवे बोर्ड, राजस्थान, महाराष्ट्र और कर्नाटक की राज्य सरकारें और इंडियन रेलवे केटरिंग एंड टूरिज्म कॉरपोरेशन लिमिटेड (आईआरसीटीसी) इसे घरेलू और विदेशी बाजारों में विलासिता की श्रेणी में लगातार बढ़ावा दे रहे हैं तथा ट्रेनों पर ब्लॉगरों की मेजबानी करके सक्रिय रूप से इस अभियान का समर्थन कर रहे हैं।

जिंदगी में धन का, सेहत में तन का, क्रिकेट में रन का, मिलिट्री में गन का,
पर्यावरण में वन का और चुनाव में जन का अपना ही महत्व होता है।

# देखों अपना देश

पर्यटन मंत्रालय ने स्पाइक मैक के सहयोग से देश के तीन महत्वपूर्ण पर्यटन केंद्रों—वाराणसी, दिल्ली और कोच्चि में एक संगीत श्रृंखला का आयोजन किया। यह अतुल्य भारत विरासत श्रृंखला देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने और 'सभी के लिए पर्यटन' के सिद्धांत को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से सप्ताह के अंतिम दो दिन के लिए आयोजित की गई।

इस श्रृंखला में हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटिक संगीत के जाने माने कलाकारों ने भाग लेकर अपनी गायन और वादन कला का प्रदर्शन किया। इसी तरह हमारी सर्वश्रेष्ठ लोक परम्पराओं को कव्वाली, कबीर गायन, कोरस (समूह गायन), बाउल और देश के विभिन्न लोक कला रूपों की प्रस्तुति की गई।

पं. भजन सोपोरी

यह श्रृंखला, वाराणसी शहर से शुरू हुई जहां शनिवार, 24 फरवरी, 2018 को अस्सीघाट पर प्रसिद्ध संतूर वादक पद्म श्री पं. भजन सोपोरी और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के जाने–माने गायक पं. राजन और पं. साजन मिश्रा ने भाग लेकर इस अवसर की शोभा बढ़ाई। अगले दिन रविवार 25 फरवरी, 2018 को यहीं

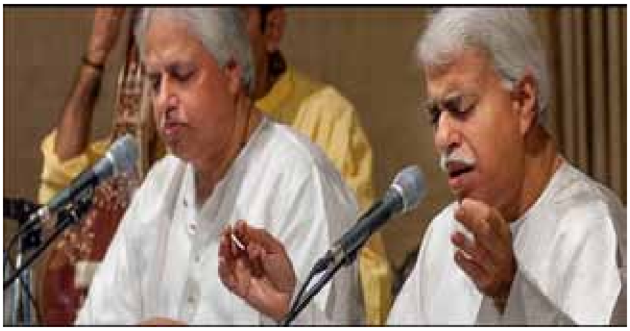

पं. राजन और पं. साजन मिश्रा

पर मणिपुर राज्य के प्रसिद्ध ताल वाद्य पूंग की थाप पर थिरकते मणिपुरी कलाकारों ने 'पूंग चोलम' नृत्य प्रस्तुति और उसके बाद पं. तरुण कृष्ण दास द्वारा प्रस्तुत हवेली संगीत का लागों ने आनंद लिया।

इसी घाट पर 10 मार्च, 2018 को श्रोतागण पं. हरिप्रसाद चौरसिया की बांसुरी के स्वरों से सराबोर होने के बाद हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गायिका विदुषी श्रुति साडोलिकर की राग प्रस्तुति पर झूम उठे। अगले दिन 11 मार्च, 2018 को श्री देबाशीष रीएंग और उनकी मंडली ने होजागिरी नृत्य प्रस्तुत किया। श्री प्रहलाद सिंह टिपनया ने कबीर के भजनों का गायन प्रस्तुत कर समा बांध दिया।

विदुषी श्रुति साडोलिकर

शुजात खान

इस श्रृंखला की कड़ी का दूसरा कार्यक्रम दिल्ली में 10 मार्च, 2018 को लाल किले में उस्ताद शाहिद परवेज के सितार वादन और विदुषी अश्विनी भिडे देशपांडे के हिन्दुस्तानी संगीत गायन के साथ शुरू हुआ। 11 मार्च, 2018 को रामपुर (उ.प्र.) से वारसी बंधू कव्वाली और श्रीमती पार्वती ने पश्चिम बंगाल की लोक कला बाउल गान की प्रस्तुति दी। 17 मार्च, 2018 को हुमायूं के मकबरे के प्रांगण में डॉ. उमयालपुरम के. शिव रामन के मृदंगम की संगत पर डॉ. एल सुब्रमण्यम ने कर्नाटिक संगीत की शैली में वायलिन और पं. शिवकुमार शर्मा ने अपने संतूर की स्वर लहरी से श्रोताओं को सराबोर किया। जबकि 18 मार्च, 2018 को कैपिटल सिटी मिंस्ट्रेल्स के कोरस गायन के बाद पद्मश्री श्रीमती मालिनी अवस्थी ने अपनी विशिष्ट शैली में ठुमरी प्रस्तुत की।

इस संगीत श्रृंखला की तीसरी कड़ी, 10 मार्च, 2018 को कोच्चि में कोच्चि फोर्ट के प्रांगण में उस्ताद शुजात खान के सितार वादन और विदुषी पद्मश्री शुभा मुद्‌गल के गायन की प्रस्तुति के साथ शुरू हई। 11 मार्च, 2018 नागालैंड के 'आओ कोरस' गायन के बाद केरल का लोक गायन 'तैय्यम' प्रस्तु किया गया। 17 मार्च को हिन्दुस्तानी गायिका बेगम परवीन सुल्तान और कर्नाटक शैली में सेक्सोफोन वादक डॉ कादरी गोपालनाथ द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुति दी गई। 18 मार्च को हैदराबाद (तेलंगाना) के वारसी बंधु ने कव्वाली पेश की और श्री रणजीत गोगोई के ग्रुप द्वारा बिहू नृत्य (असम) प्रस्तुत किया गया।

संगीत की इस तीसरी कड़ी के साथ ''देखों अपना देश'' की इस श्रृंखला का समापन किया गया।

तेलंगाना के पर्यावरण एवं वन मंत्री श्री जोगू रामन्ना ने 03 जनवरी, 2018 को पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा इलैक्ट्रोनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री के. अल्फोंस से भेंट की।

उत्तराखंड के पर्यटन मंत्री श्री सतपाल महाराज ने 03 जनवरी, 2018 को पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा इलैक्ट्रोनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री के. अल्फोंस से मुलाकात की। इस अवसर पर सचिव (पर्यटन) श्रीमती रश्मि वर्मा भी उपस्थित थीं।

उत्तर प्रदेश के ग्रामीण अभियांत्रिकी विभाग के कैबिनेट मंत्री श्री राजेन्द्र प्रताप सिंह ने 11 जनवरी, 2018 को पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा इलैक्ट्रोनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री के. अल्फोंस से भेंट की।

केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री किरण रिजुजु ने 20 जनवरी, 2018 को पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा इलैक्ट्रोनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री के. अल्फोंस से भेंट की।

भारत में जार्जिया के राजदूत श्री अर्किल ज्यूलियाशविली ने 22 जनवरी, 2018 को पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा इलैक्ट्रोनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री के. अल्फोंस से भेंट की।

भारत में श्रीलंका की उच्चायुक्त श्रीमती चित्रांगणी वागीश्वरा ने 22 जनवरी, 2018 को पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा इलैक्ट्रोनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री के. अल्फोंस से भेंट की।

विश्व बैंक की प्रतिनिधि सुश्री स्टेफेनिया एबाकेर्ली ने 29 जनवरी, 2018 को पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा इलैक्ट्रोनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री के. अल्फोंस से भेंट की।

पर्यटन मंत्रालय द्वारा लाल किले पर आयोजित 'भारतपर्व' के 31 जनवरी, 2018 को हुए समापन समारोह के अवसर पर माननीय पर्यटन मंत्री जी के साथ एक ग्रुप फोटोग्राफ।

मोरक्को की पर्यटन, विमान परिवहन, हस्तकला और सामाजिक अर्थव्यवस्था की राज्य मंत्री, डॉ. जमीला अल मोसाली ने 01 फरवरी, 2018 को पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा इलैक्ट्रोनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री के. अल्फोंस से भेंट कर पर्यटन के मुद्दों पर चर्चा की।

फिजी गणराज्य के उद्योग और पर्यटन मंत्री फैय्याज कोया ने 1 फरवरी 2018 को पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा इलैक्ट्रोनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री के. अल्फोंस से भेंट की।

04 फरवरी, 2018 को गुवाहाटी में हुए असम के लिए लाभप्रद व्यापार वैश्विक सम्मेलन में पूर्वोत्तर में पर्यटन आतिथ्य और निरोगता सत्र में चर्चा करते हुए पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा इलैक्ट्रोनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री के. अल्फोंस

हरियाणा के पर्यटन मंत्री श्री राम बिलास शर्मा 12 फरवरी, 2018 को पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा इलैक्ट्रोनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री के. अल्फोंस से भेंट की ।

आंध्र प्रदेश के अक्षयनिधि विभाग के मंत्री श्री पी. माणिक्ल्य राव ने 27 फरवरी, 2018 को पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा इलैक्ट्रोनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री के. अल्फोंस से मुलाकात की।

10 मार्च, 2018 को जापान के मित्रता विनिमय समूह परिषद के प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने पर्यटन मंत्री स्वतंत्र प्रभार श्री के जे अल्फोंस से नई दिल्ली में भेंट की।

'सुरक्षित सड़क परिवहन : पर्यटन का संवर्धन' विषय पर नई दिल्ली में आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन को संबोधित करते पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फोंस

## अतुल्य भारत का अगला अंक बौद्ध विशेषांक के आकर्षण

| | | |
|---|---|---|
| अतिथि देवो भवः | : | डॉ. कौलेश कुमार |
| बौद्ध धर्म में मध्यम मार्ग : एक परिचय | : | रोमिका राज |
| ओडिशा में बौद्ध धर्म और धौलिगिरि | : | अबिनाश दाश |
| रणथम्भौर राष्ट्रीय पार्क | : | विनीत सोनी |
| रसगुल्ला बंगाल का | : | श्रीमती संतोष सिल्पोकर |
| बिहार के सूर्य मंदिर | : | कप्तान प्राण रंजन प्रसाद |
| कौवा डोल | : | शंकर शर्मा |

***साथ ही अन्य सामग्री....***

# LoPNrk e ;kxnku n

D;k dj    D;k u dj

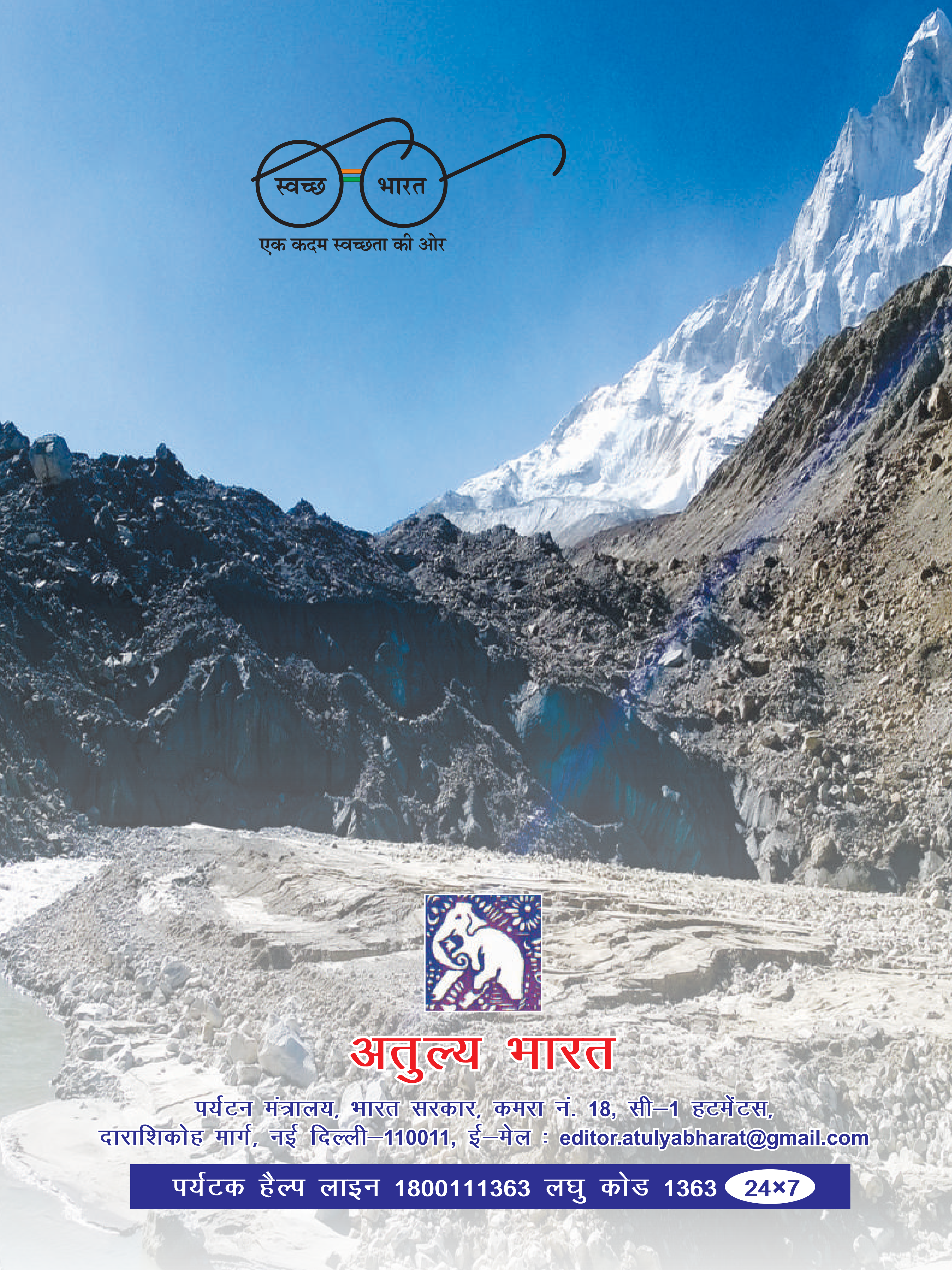

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, कमरा नं. 18, सी–1 हटमेंटस,
दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली–110011, ई–मेल : editor.atulyabharat@gmail.com

पर्यटक हैल्प लाइन 1800111363 लघु कोड 1363 24×7